काशी विद्यापीठ के पचास वर्ष

१९२१–७१

050230

Accession No.
Shantarakshita Library
Tibetan Institute-Sarnath

क्रम

प्रस्तावना

काशी विद्यापीठ के इक्यावन वर्ष पूरे हुए। यह स्वर्ण जयंती समारोह का समापन वर्ष है। इस अवसर पर हम विद्यापीठ के इतिहास की ओर मुड़ देखें, वर्तमान स्थिति और समस्याओ का विश्लेषण करें और भविष्य की दिशा का निर्धारण करें, यह सर्वथा उचित है।

सन् १९२० में असहयोग आन्दोलन के कुछ समय पहले से देश की प्रचलित शिक्षा प्रणाली की कमियों और त्रुटियों को देखते हुए डाक्टर भगवानदास, श्री शिवप्रसाद गुप्त, श्री श्रीप्रकाश आदि के मन में यह बात उठ रही थी कि काशी में ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा संस्था स्थापित होनी चाहिए जो सब प्रकार से स्वतंत्र हो। अर्थात् जो आर्थिक सहायता आदि के लिए सरकार पर आश्रित न हो और सरकार के शिक्षा विभाग के नियमों के अधीन न हो, जिसमें समस्त प्राच्य और पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान और शास्त्र-शिल्प की ऊँची से ऊँची शिक्षा हिन्दी भाषा के माध्यम से दी जाए, जिसमे मस्तिष्क की शिक्षा के साथ-साथ हृदय और हाथ की शिक्षा भी दी जाए, जहाँ विद्या प्राप्त करने के साथ-साथ चरित्र और आचरण का भी निर्माण हो, और देश की विशिष्ट प्रकृति, परिस्थिति और आकांक्षा के अनुरूप हो और जिसमें ज्ञान अर्जन के उपरांत स्वतंत्र जीविका का अर्जन करने में सुगमता और सहायता मिले।

भाद्रपद, सम्वत् १९७७ तदनुसार सितम्बर, १९२० में अखिल भारतीय कांग्रेस के कलकत्ता के विशेष अधिवेशन में विचार-विमर्श के वाद राष्ट्र ने तत्कालीन ब्रिटिश सरकार से असहयोग का कार्यक्रम स्वीकार किया। विद्यार्थियों द्वारा सरकारी और अर्द्ध सरकारी शिक्षा-संस्थाओं का बहिष्कार इस असहयोग का एक अंग था। इस कार्यक्रम के अनुसार सरकारी शिक्षा संस्थाओं से विद्यार्थियों ने असहयोग करना आरम्भ कर दिया। बनारस में आचार्य जीवतराम भगवानदास कृपालानी के नेतृत्व में विश्वविद्यालय और स्कूल, कालेजों से असहयोग कर ईश्वरगगी मुहल्ले में गांधी आश्रम की स्थापना हुई। इसी समय स्वतंत्र राष्ट्रीय शिक्षा के अनुरागी श्री शिवप्रसाद गुप्त अपने स्वप्न को साकार करने में लगे हुए थे। १९२१ में नागपुर कांग्रेस के बाद महात्मा गांधी ने श्री भगवानदास जी को एक पत्र लिखा कि, 'मुझे विश्वास है कि अब काशीजी में एक महाविद्यालय शीघ्र खोलना चाहिए।' इस पर यह विचार हुआ कि अब विलम्ब उचित नहीं है और ऐसी संस्था के प्रारम्भ करने का उपयुक्त समय आ गया है। वसंतपंचमी २८ माघ, १९७७ (तदनुसार १० फरवरी, १९२१) का शुभ दिन इस कार्य के लिए निश्चित किया गया

और गांधीजी से प्रार्थना की गयी कि वे स्वयं अपने पवित्र हाथों से इसका आरम्भ करें। उन्होंने यह प्रार्थना स्वीकार कर ली और पंडित मोतीलाल नेहरू, मौलाना मुहम्मदअली, मौलाना अबुलकलाम आजाद, सेठ जमनालाल बजाज, श्री जवाहरलाल नेहरू जैसे प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं के साथ काशी आकर उक्त तिथि को ८ बजे प्रात.काल काशी के विद्या रसिकों और देश-प्रेमी नर-नारियों के सम्मुख विद्यापीठ का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर प्रारम्भ में भारत रत्न डाक्टर भगवानदास ने विद्यापीठ के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए जो सारगर्भित भाषण किया और महात्मा गांधी ने जो असहयोग धर्म का बखान किया वह आज भी चिंतन-मनन करने जैसा है। इसी दृष्टि से दोनों ही भाषण प्रस्तावना सहित "अभिलेख" शीर्षक से अन्यत्र प्रकाशित किये जा रहे हैं।

उसी दिन विद्यापीठ की पहली निरीक्षक सभा में यह निश्चित हुआ कि शिक्षा संस्था के लिए जिस एकाग्रता की आवश्यकता है वह राजनीति के क्षेत्र में सम्भव नहीं है। इसलिए इसे तत्कालीन राष्ट्रीय कांग्रेस के अधीन नहीं रखा गया और इसका नैष्ठिक अधिकार निरीक्षक सभा के अधीन किया गया और दिन प्रति दिन के कार्य संचालन के लिए एक प्रबंध समिति नियुक्त की गयी।

विद्यापीठ के संकल्प पत्र में निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये :

"अध्यात्म विद्या की नींव पर प्रतिष्ठित भारतीय शिष्टता के संस्कार और विकास में तथा भारत में बसी हुई सब जातियों के भारतीय समाज में यथास्थान सन्निवेश और भारत में प्रचलित आचार-विचारो के समुचित समन्वय में, तथा स्वाधीनता और स्वदेश प्रेम के भाव के साथ-साथ लोक-सेवा और मानव मात्र की बन्धुता के भाव के संचार में तथा संसार के प्राचीन और नवीन शास्त्र शिल्प कला ज्ञान-विज्ञान आदि की वृद्धि और प्रचार में सहायता देना..."

आज शिक्षा में विश्वव्यापी संकट है। यह सभ्यता का संकट है। इस संकट के समय, विद्यापीठ का यह संकल्प जो पुराना भी है और नया भी, स्वतंत्र राष्ट्रीय शिक्षा का मार्ग-दर्शक सिद्धांत है। इस दृष्टि से जो कार्य सुझाये गये हैं वे आज भी करने लायक हैं। चिर-स्थायी महत्त्व के कारण इसे विवरण में अभिलेख के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विद्यापीठ इसी दिशा में १० फरवरी, १९२१ से कार्य कर रहा है। डाक्टर भगवान-दास, आचार्य जीवतराम, भगवानदास कृपालानी, आचार्य नरेंद्रदेव, श्री श्रीप्रकाश, डाक्टर सम्पूर्णानंद, आचार्य बीरबलसिंह, श्री योगेश बाबू, डाक्टर मंगलदेव शास्त्री, प्रोफेसर रामशरण, मुंशी प्रेमचन्द, श्री राजाराम शास्त्री जैसे विद्या-आचरण सम्पन्न अध्यापकों ने यहाँ अध्यापन कार्य किया। प्रारम्भ से ही दर्शन, गणित, इतिहास, अर्थशास्त्र, राज-शास्त्र, संस्कृत और हिन्दी में उच्च शिक्षा हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि में दी जाने लगी।

विद्यापीठ ब्रिटिश सरकार की आँख का काँटा बन गया। १९३०, १९३२, १९४० और १९४२ के विद्यापीठ के लगभग सभी विद्यार्थियों और अध्यापकों ने स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी रूप से भाग लिया और ब्रिटिश सरकार ने उन्हें जेल भेज दिया। आंदोलनों के दौर में विद्यापीठ पर सरकार ने ताला लगा दिया और उसे पुलिस के नियंत्रण में रखा गया।

काशी विद्यापीठ ने स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी, समाजसेवी, शिक्षक, लेखक और पत्रकार देश को दिये जिन्होने देश के सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। स्वाधीनता प्राप्ति के पूर्व के स्नातकों की सूची परिशिष्ट में दी जा रही है। इन पर काशी विद्यापीठ को और देश को उचित गर्व है। स्वाधीन भारत को विद्यापीठ ने श्री लाल-बहादुर शास्त्री जैसा साधु प्रधान मंत्री दिया, उत्तर प्रदेश, बिहार जैसे राजनीति के हृदय-प्रदेश को श्री त्रिभुवननारायण सिंह, श्री कमलापति त्रिपाठी, श्री भोलपासवान शास्त्री जैसे मुख्य मंत्री दिये, केंद्रीय और राज्य सरकारों के अनेक मंत्री, अनेक संसद सदस्य, राज्य विधान मंडलों के सदस्य, और सार्वजनिक जीवन के अन्य क्षेत्रों के कई प्रमुख विद्यापीठ से शिक्षा प्राप्त कर निकले।

स्वतंत्रता प्राप्ति तक विद्यापीठ की शिक्षा स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रयत्नों से एक तान थी। शुरू में कल्पना यह थी कि विद्यापीठ में शुद्ध पठन-पाठन का क्रम चलेगा जो राज-नीतिक हल-चल से सर्वथा मुक्त रहेगा। पराधीन देश में स्वाधीनता की सर्वोपरि आव-श्यकता के कारण यह तटस्थता विद्यापीठ मे न सम्भव थी, न श्रेयष्कर। जो भी हो, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विद्यापीठ के संकल्प के मूल उद्देश्यों के अनुरूप नये संदर्भ में विद्या-पीठ ने अपनी शिक्षा को नया मोड़ देने का प्रयत्न किया। युवक-युवतियों को समाज-सेवा के क्षेत्र में वैज्ञानिक शिक्षण प्रदान करने के लिए १९४७ में एक समाज-विज्ञान संस्थान चलाया गया। वैज्ञानिक समाज-सेवा का यह उत्तर भारत में अग्रणी केंद्र है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् एक वर्ष तक शास्त्री का पठन-पाठन स्थगित कर दिया गया और समाज-विज्ञान की दिशा में ही विकास पर बल दिया गया। हमें खेद है कि स्वाधीन भारत में जो उद्देश्यहीनता, दिशाहीनता आयी उसका प्रभाव विद्यापीठ पर भी पड़ा। शिक्षा-प्रणाली में नये स्वतंत्र प्रयोगों की परख के बजाय विद्यापीठ को भी परम्परित प्रणाली के प्रवाह मे पड़ना पड़ा। फिर भी, विद्यापीठ ने अपनी विशिष्टता बनाये रखने का प्रयत्न नहीं छोड़ा। समाज-विज्ञान और शास्त्र-ज्ञान के क्षेत्र में देश की विशिष्ट प्रकृति और परिस्थिति और आकांक्षा के अनुरूप पठन-पाठन का विस्तार किया। १९६१ में समाज-शास्त्र और अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर शिक्षण प्रारम्भ हुआ। १९६४ में अंग्रेजी, इति-हास, और हिन्दी में भी स्नातकोत्तर पढ़ाई प्रारम्भ हुई। इस समय समाजसेवा, समाज-शास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास, अंग्रेजी, हिंदी, राजशास्त्र, दर्शन, मनोविज्ञान और संस्कृत

में स्नातकोत्तर स्तर तक और पालि, उर्दू एवं रूसी भाषा का स्नातक स्तर तक अध्ययन-अध्यापन और शोध-कार्य चल रहा है ।

१९६२ तक विद्यापीठ का पोषण श्री शिवप्रसाद गुप्त द्वारा स्थापित श्री हरप्रसाद शिक्षा निधि के दस लाख रुपये के मूलधन से होता था। शुल्क से विशेष आय नहीं थी, क्योंकि शिक्षा प्राय: नि:शुल्क थी। अत: यह अनुभव किया गया कि सीमित आय से काशी विद्यापीठ अपने उद्देश्य की पूर्ति नही कर सकेगा, राष्ट्रीय सरकार हो जाने के कारण सरकारी सहायता लेने में भी विशेष आपत्ति नहीं मालूम पड़ी। १९६१ में इस दिशा में कार्रवाई प्रारम्भ हुई। १९६३ में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम की धारा ३ के अन्तर्गत काशी विद्यापीठ को विश्वविद्यालय के रूप में स्वीकार किया। तब से शिक्षा के विकास से सम्वद्ध योजनाओं के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और अनुरक्षण के लिए भारत सरकार का शिक्षा मंत्रालय अनुदान देता है ।

गत वर्षों से यह अनुभव किया जा रहा है कि विद्यापीठ को विश्वविद्यालय का कानूनी दर्जा प्राप्त न होने से इसके सम्मान और साधनों की प्राप्ति में अनावश्यक विघ्न-बाधा आती है। इसलिए यह सोच-विचार और प्रयत्न हो रहा है कि विद्यापीठ को 'चार्टर्ड' विश्वविद्यालय बनाया जाये ।

गत वर्ष विद्यापीठ की स्वर्ण जयंती मनायी गयी। समारोह का शुभारम्भ वसंत-पंचमी, ३१ जनवरी, १९७१ को हुआ। आचार्य काका कालेलकर ने दीक्षांत भाषण किया। इस अवसर पर भारत सरकार के डाक विभाग ने काशी विद्यापीठ स्वर्ण जयंती स्मारक डाक-टिकट जारी किया। संस्थापक राष्ट्ररत्न शिवप्रसाद गुप्त की स्मृति में एक ग्रंथ का प्रकाशन हुआ। श्री शिवप्रसाद गुप्त की प्रतिमा स्थापित हुई। स्वर्ण जयती व्याख्यान माला का आयोजन हुआ। समारोह के सिलसिले में सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल-कूद आदि का विशेष आयोजन हुआ ।

यह वर्ष स्वर्ण जयंती समारोह का समापन वर्ष है। हमें अपनी कमियों और त्रुटियों का एहसास है। फिर भी हमारा यह प्रयत्न है कि विद्यापीठ की गौरवमय परम्परा के अनुरूप हम अपने और देश के भविष्य का निर्माण कर सकें। हम उस क्रम में हैं जिनमें महान प्रयत्न करने के दायित्व से हम बच नहीं सकते। इसके लिए सम्यक संकल्प और साधन और संयोजन की सर्वोपरि आवश्यकता है।

इस हेतु काशी विद्यापीठ के इक्यावनवें वर्ष का विवरण प्रस्तुत करते हुए हम काशी विद्यापीठ के स्नातकों, स्नेही समर्थकों, समितियों के सदस्यों तथा, केंद्रीय तथा राज्य सरकारों और सर्वसाधारण का सक्रिय समर्थन पाने की हम प्रार्थना करते हैं। हमें आशा है कि आप सब विद्यापीठ के प्रति अपने स्नेह को बनाये रखेंगे और इस राष्ट्रीय संस्था के

प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन कर इसे अपने उद्देश्यों को पूरा करने में सहायक होंगे। इस अपेक्षा और आशा के साथ हम आपके विचारार्थ यह विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

काशी विद्यापीठ के प्रथम कुलपति भारतरत्न डाक्टर भगवानदास जी थे। उनके निधन के उपरान्त आचार्य नरेंद्रदेव, डाक्टर सम्पूर्णानंद, श्री श्रीप्रकाश कुलपति हुए। हमारे कुलाधिपति श्री श्रीप्रकाश का २३ जून, १९७१ को निधन हो गया। निरीक्षक सभा ने अपने अधिवेशन ने निम्नलिखित शोक प्रस्ताव किया :

"विद्यापीठ के संस्थापक एवं आजीवन सदस्य, प्राध्यापक, मंत्री, आचार्य एवं कुलाधिपति, देशभक्त एवं सत्याग्रह संग्राम के अनन्य नायक, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रधान मंत्री, स्वतंत्र विचारक, हिन्दी पत्रकारिता के अग्रगण्य, नागरिकता के सतत सचेष्ट, प्रशासक शिक्षा शास्त्री, गंभीर विधायक तथा वक्ता महामान्य श्री श्रीप्रकाश जी के चिर वियोग पर काशी विद्यापीठ की निरीक्षक सभा हार्दिक शोक व्यक्त करती है। तथा उनके शोक संतप्त परिवार को हार्दिक समवेदना भेजती हुई भगवान से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।"

श्री श्रीप्रकाश जी के निधन के उपरांत निरीक्षक सभा ने १८ अगस्त, १९७१ को सर्वसम्मति से श्री कमलापति त्रिपाठी को कुलाधिपति निर्वाचित किया।

इसी सत्र में, १० मई, १९७१ को आचार्य राजाराम शास्त्री ने कुलपति पद से त्याग-पत्र दिया। कुलाधिपति ने त्याग-पत्र स्वीकार कर १० मई, १९७१ को प्रोफेसर भगवती प्रसाद पाथरी को स्थानापन्न कुलपति मनोनीत किया। नियमावली के अनुसार गठित चयन समिति की संस्तुति के आधार पर कुलाधिपति ने श्री रघुकुल तिलक को कुलपति नियुक्त किया और उन्होंने १ दिसम्बर, १९७१ को कार्यभार ग्रहण किया।

काशी विद्यापीठ के अन्य अधिकारी इस प्रकार हैं : श्री भूपेन्द्रकुमार गुप्त कोषाध्यक्ष हैं। ७ दिसम्बर, १९७१ को पीठस्थविर श्री शिवनंदनलाल दर के पदत्याग के उपरांत डाक्टर केशव प्रसाद सिंह पीठस्थविर हैं। इस पद पर स्थायी नियुक्ति शीघ्र होनेवाली है। प्रोफेसर भगवती प्रसाद पांथरी शास्त्र ज्ञान विद्यालय के अध्यक्ष और प्रोफेसर एम० वि० मूर्ति समाज विज्ञान संकाय के अध्यक्ष हैं। श्री गोरावाला खुशाल चन्द्र जैन स्वाध्याय स्थविर हैं।

काशी विद्यापीठ की निरीक्षक सभा, प्रबन्ध समिति और शिक्षा परिषद् के सदस्यों की सूची परिशिष्ट में दी गयी है।

शास्त्रज्ञान संकाय के अन्तर्गत निम्नलिखित विभागों में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर का अध्ययन-अध्यापन और शोध कार्य चल रहा है : इतिहास, हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, दर्शन, तथा भाषा। समाजविज्ञान संकाय के अन्तर्गत निम्नलिखित विभाग हैं : समाज-

सेवा, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजशास्त्र तथा मनोविज्ञान। इन विभागों का वार्षिक विवरण यथास्थान दिया जा रहा है। परीक्षा सम्बन्धी विवरण भी परिशिष्ट में दिया गया है।

काशी विद्यापीठ में स्वाध्याय पर बराबर बल दिया गया है। भगवानदास स्वाध्याय-पीठ, समाज विज्ञान पुस्तकालय और अन्य विभागीय पुस्तकालयों के द्वारा अध्यापकों, विद्यार्थियों और अन्य विद्या प्रेमियों की सेवा की जाती है। विस्तृत विवरण अलग से प्रस्तुत है।

समाज सेवा कार्य काशी विद्यापीठ का अपना विशेषीकरण है। इस दिशा में समाज-सेवा विभाग के व्यावहारिक कार्य, ज्ञानचंद मंदित बाल विद्यालय, राष्ट्रीय सेवा-योजना कार्य करते है। इनका संक्षिप्त विवरण भी दिया जा रहा है।

स्वास्थ्य केंद्र के अन्तर्गत एलोपैथिक और होमियोपैथिक दो विभाग कार्य कर रहे हैं। इनके साथ-साथ छात्रसंघ, छात्रावास, सम्पत्ति-विभाग, खेल-कूद, अभिरुचि केंद्र, राष्ट्रीयता एकता योजना और एन० सी० सी० तथा आय-व्ययक का संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत किया जा रहा है।

अभिलेख के अन्तर्गत काशी विद्यापीठ के पंचांग सम्वत् १९८६ से ९२ की प्रस्तावना, डाक्टर भगवानदास, महात्मा गांधी का विद्यापीठ प्रवर्तन भाषण और संकल्प-पत्र, स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व के अध्यापकों और स्नातकों की सूची प्रकाशित है।

अंत में, परिशिष्ट के अन्तर्गत प्रथम निरीक्षक, वर्तमान निरीक्षक सभा, प्रबन्ध समिति, वित्त समिति, शिक्षा परिषद् के सदस्यों की सूची; वर्तमान सत्र में छात्रों की संख्या; सन् १९७१ की वार्षिक परीक्षा में सम्मिलित एवं उत्तीर्ण छात्रों का विवरण; शोध उपाधियों का विवरण; स्वाधीनता प्राप्ति के पूर्व के अध्यापकों, शास्त्रियों की सूची; काशी विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित ग्रंथ और पत्रिकाओं की सूची; आय-व्ययक का सारांश और कुलगीत प्रस्तुत है।

समाज विज्ञान संकाय

समाज सेवा विभाग

इस वर्ष विद्यालय जुलाई १९७१ में पुनः खुला और सत्र का कार्य आरम्भ हुआ। सत्र के आरम्भ में प्रथम वर्ष में ४५ एवं द्वितीय वर्ष में ३६, पी–एच० डी० कार्यक्रम में ४ शोध के विद्यार्थी रहे। प्रथम तथा द्वितीय वर्ष में पुरुष एवं महिला छात्रों की संख्या निम्नलिखित थी :—

छात्र संख्या १९७०–७१

कक्षा	पुरुष	महिला	योग
एम० ए० (समाज सेवा)			
प्रथम वर्ष	३८	७	४५
एम० ए० (समाज सेवा)			
द्वितीय वर्ष	३३	३	३६
पी–एच० डी०	३	१	४
योग	७४	११	८५

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी भारत के विभिन्न राज्यों के छात्रो ने प्रवेश लिया।

एम० ए० (समाज सेवा) द्वितीय वर्ष में विशेषीकरण के अनुसार छात्रों की संख्या निम्नलिखित है :

विशेषीकरण–एम० ए० समाज सेवा द्वितीय वर्ष

१. औद्योगिक सम्बन्ध तथा श्रम कल्याण		—	१३
२. चिकित्सकीय समाज सेवा	—	—	६
३. अपराधी सुधार प्रशासन	—	—	६
४. सामुदायिक विकास	—	—	५
५. परिवार एवं बाल कल्याण	—	—	६
६. जनजातीय कल्याण	—	—	६
योग	—	—	३६

अध्ययन :—इस वर्ष समाज सेवा विभाग के अध्यापन की व्यवस्था विभाग के १२ अध्यापकों एवं अंशकालिक अध्यापकों द्वारा की गयी। श्री रमाशंकर पाण्डेय, श्री सन्त सिंह, श्रीमती मन्दाकिनी सिंह, श्री रामनरेश सिंह विशेष अध्ययन के लिए विदेश चले गये है और श्री सुभाषचन्द्र कानपुर की आई० टी० आई० संस्था में शोध कार्य कर रहे थे। विभागाध्यक्ष के पद पर डाक्टर एम० वि० मूर्ति कार्य कर रहे थे।

अध्यापकों की संख्या

पद का नाम	सख्या
१. प्रोफेसर	१
२. रीडर	२
३. सहायक अध्यापक	७
शोध सहायक	१
५. अंशकालिक अध्यापक	१
योग	१२

प्रशिक्षण का स्वरूप

समाज सेवा प्रशिक्षण के तीन आधारभूत अंग कक्षागत व्याख्यान, व्यावहारिक कार्य, गवेषणा कार्य हैं। इस वर्ष भी गत वर्षो के महत्वपूर्ण प्रयोगों का अनुसरण किया गया। इस क्षेत्र में प्रशिक्षण को विषय केन्द्र न करके शिक्षार्थी केन्द्र बनाने का प्रयत्न किया गया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये कक्षा में व्याख्यानों के अतिरिक्त अधिकाधिक विचार-विमर्श एवं गोष्ठियो का आयोजन किया गया जिसमें सभी विद्यार्थी बौद्धिक योगदान दे सकें तथा इस क्रम में आने वाली उनकी कठिनाइयाँ व्यक्त हो सकें और अध्यापक उनको निर्दिष्ट सहायता दे सकें। अध्यापन में केस पद्धति का सहारा लिया गया छात्र निर्दिष्ट कार्य को सन्तोषजनक ढंग से पूरा कर सकें इसके लिये सहायता दी गयी। व्यावहारिक स्थिति को समझने पर जोर दिया गया।

अतिथि व्याख्यान

सामान्य अध्यापन के साथ व्याख्यानों की व्यवस्था की गयी जिसमें देश-विदेश के विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिये। इन आयोजनों में विभाग के सभी छात्रों तथा अध्यापकों ने भाग लिया। निम्नलिखित विषयों पर व्याख्यान हुआ :—

१—हवाई द्वीप में सामाजिक व्यवस्था—डा० शर्मा, ईस्ट वेस्ट सेन्टर, हवाई।

२–समाज सेवा के नये आयाम—प्रो० सुगतदासगुप्ता, ज्वाइन्ट डायरेक्टर, गान्धियन इन्स्टीटयूट आफ स्टडीज़, राजघाट, वाराणसी ।

३–औद्योगिक क्षेत्र में श्रमिक शिक्षा—श्री एस० एन० एल० सक्सेना, डायरेक्टर, कानपुर।

व्यावहारिक कार्य

व्यावहारिक कार्य में निदेशक डा० ए० एस० शेरी ने वाराणसी के आसपास सर-कारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं को व्यावहारिक कार्य के लिये उपलब्ध किया । नगर की कल्याणकारी संस्थायें, कारखाने, श्रम कल्याण संगठन, ग्रामीण केन्द्र, परिवार नियो-जन केन्द्र, चिकित्सालय, अनुमोदित बाल विद्यालय इत्यादि संस्थाओं में विद्यार्थी कम से कम १५ घंटे प्रति सप्ताह सेवार्थियों की सहायता करते रहे । विभाग के अन्तर्गत समाज सेवा केन्द्र, परिवार नियोजन केन्द्र, परिवार शिक्षा तथा बाल कल्याण एवं महिला कल्याण सम्बन्धी सेवाओं के लिये विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम चलाये गये और छात्रों ने व्यावहारिक कार्य किया ।

अध्ययन यात्रा

नियमित रूप से व्यावहारिक कार्य के अतिरिक्त अध्ययन यात्रा की व्यवस्था की गयी । श्रम विशेषीकरण के छात्र डा०अम्बिका शरण शेरी के साथ, और चिकित्सीय, परिवार तथा अपराध-सुधार के छात्रों ने श्री रमा शंकर शुक्ल के साथ बम्बई, अहमदाबाद, दिल्ली तथा जनजातीय कल्याण और ग्रामीण समुदाय विकास के छात्र श्री गोपाल त्रिपाठी के साथ रांची, जगदलपुर, भोपाल, जबलपुर आदि स्थानों पर तत्सम्बन्धी समाज कार्य के क्षेत्र का कार्य करने वाली संस्थाओं का अध्ययन किया ।

प्रखण्ड व्यावहारिक कार्य

दो वर्ष का प्रशिक्षिण समाप्त करने के पश्चात् छात्रों को छः सप्ताह के लिये किसी बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठान अथवा समाज कल्याण संस्था में भेजा गया । इस वर्ष इस कार्यक्रम में चितरंजन लोकोमोटिव वर्क्स, टाटा आयरन एण्ड स्टील वर्क्स, दिल्ली क्लाथ मिल्स, माडर्न जेल, लखनऊ, परिवार नियोजन समिति, नई दिल्ली, रोहतास इन्डस्ट्रीज, डालमियानगर, हैवी इंजिनियरिंग निगम, रांची आदि संगठनों में प्रशिक्षा की सुविधा प्राप्त हुई ।

गवेषणा कार्य

गवेषणा कार्य को सफल बनाने के लिये समाज सेवा के विभिन्न विषयों पर कार्य किया गया जिसमें समाज सेवा के अन्तिम वर्ष के सभी विद्यार्थियों ने अध्यापकों के निर्देशन में निम्नलिखित विषयों पर गवेषणा कार्य किया :—

१–वाराणसी के रेलवे श्रमिकों की सामाजिक आर्थिक दशा — श्री बालेश्वर नाथ श्रीवास्तव

२–वाराणसी शहर में बनारसी साड़ी उद्योग में लगे श्रमिकों का आर्थिक एवं सामाजिक अध्ययन — डा० ए० एस० शेरी

३–वाराणसी नगर के पेंशन भोक्ताओं की आर्थिक सामाजिक स्थिति का अध्ययन — श्री बालेश्वर पाण्डे

४–वाराणसी नगर में समाज कल्याणकारी संस्थाओं का एक अध्ययन — श्री गोपाल त्रिपाठी

५–अभिभावकों की दृष्टि में छात्र असन्तोष की समस्या का एक अध्ययन — श्री दिवाकर

६–सामुदायिक विकास कार्यक्रम या ग्रामीण समुदाय की आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव एवं गाँव का अध्ययन — डा० परमेश्वरी दयाल

७–पेस्टिक अल्सर से ग्रस्त व्यक्तियों के मनो-सामाजिक समस्याओं का एक अध्ययन — श्री रमा शंकर शुक्ल

विभाग के अध्यापकों का योगदान

विभाग के आचार्य तथा अध्यापकों को नगर राज्य तथा समाज कल्याण संस्थाओं द्वारा संचालित विचार गोष्ठियों तथा सम्मेलनों में आमंत्रित किया गया। विभाग के अध्यक्ष डा० एम० वि० मूर्ति ने मेग हस्वेण्ड तथा दिल्ली स्कूल द्वारा आयोजित गोष्ठियों में भाग लिया। बम्बई में आयोजित साउथ ईस्ट एशियन सेमिनार आन सोशल वर्क में श्री बालेश्वर नाथ श्रीवास्तव और श्री गिरीश कुमार ने विभाग का प्रतिनिधित्व किया तथा दिल्ली के इण्डियन इण्टरनेशनल सेन्टर में इण्डियन सोशल इन्स्टीटयूट द्वारा आयोजित गोष्ठी में श्री बालेश्वर नाथ श्रीवास्तव ने भाग लिया। असोसियेशन आफ स्कूल आफ सोशल वर्क तथा भारतीय समाज कल्याण परिषद् में डा० चन्द्र प्रकाश गोयल सम्मिलित हुए। जनजातीय कल्याण विभाग द्वारा आयोजित गोष्ठी में श्री गोपाल त्रिपाठी ने विभाग की ओर से भाग लिया। सुधार अधिकारी द्वारा आयोजित गोष्ठी में विभाग के सभी अध्यापकों ने भाग लिया। अक्टूबर-दिसम्बर, १९७० में डा० चन्द्र प्रकाश गोयल भारत-सोवियत सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत रूस में व्याख्यान देने और वहाँ के सांस्कृतिक अध्ययन के लिये भारत सरकार की ओर से भेजे गये। भारत से सोवियत संघ में इस प्रकार के कार्यक्रम के अन्तर्गत जाने वाले वह पहले समाज कार्य अध्यापक हैं। वहाँ पर उन्होंने मास्को, लेनिनग्राड, ताशकन्द, समरकन्द तथा बुखारा का भ्रमण किया। वहाँ के सामाजिक जीवन का अवलोकन किया। वहाँ के समाजशास्त्रियों तथा भारतीय विद्या के विषेशज्ञों से मिले। मास्को में होने वाले सोवियत राष्ट्रीय भारतीय विद्या सम्मेलन में उन्होंने भारतवर्ष का प्रतिनिधित्व भी किया। वहाँ पर भारतीय समाज व्यवस्था तथा सामाजिक मूल्यों के

050436
Shantarakshita Library
Tibetan Institute-Sarnath

बदलते प्रतिमान विषय पर कई व्याख्यान वहाँ की राष्ट्रीय ओरियन्टल इन्स्टीटयूट में दिये। इससे विद्यापीठ तथा राष्ट्र की प्रतिष्ठा बढ़ी।

समाजसेवा छात्रमण्डल

विद्यार्थियों के बौद्धिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक उन्नति के लिये मण्डल स्थापित है। सभी विद्यार्थी इसके सदस्य होते हैं। इस वर्ष इसके उपाध्यक्ष श्री विजय बहादुर सिह एवं मंत्री श्री श्रीप्रकाश राय निर्वाचित हुए। मण्डल का उद्घाटन नगर प्रमुख द्वारा किया गया। मण्डल ने व्याख्यानों का तथा छात्रों के मनोरंजन हेतु खेल-कूद का आयोजन भी किया।

पी-एच० डी० कार्यक्रम

विद्यालय में डाक्टरेट की उपाधि के लिये जो कार्यक्रम चल रहा है उसके अन्तर्गत श्री जगदम्बा प्रसाद बरनवाल ने अपना गवेषणा प्रबन्ध जमाकर डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की।

विभागीय पुस्तकालय

अमरीकी सरकार की सहायता से १९५८ मे विभागीय पुस्तकालय की स्थापना की गयी थी जिसमें एशिया फाउण्डेशन ने भी इस पुस्तकालय को पुस्तकें प्रदान की। पुस्तकालय में ४८८६ पुस्तकें तथा १० पत्रिकायें उपलब्ध रहीं। औसतन १९८८ विद्यार्थी स्वाध्याय करते रहे और ४८८६ विद्यार्थी बाहर ले गये। पुस्तकालय अध्यक्ष श्री तपेश वैद्या ने अपने दायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वाह किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना, काशी विद्यापीठ

राष्ट्रीय सेवा योजना शिक्षा मंत्रालय की ओर से काशी विद्यापीठ में गत दो वर्षों से संचालित है। इस योजना का उद्देश्य है–विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ स्वावलम्बी एवं समाज सेवी बनाना। इस योजनान्तर्गत स्नातक स्तर के ३०० छात्र पंजीकृत हैं जो समाज सेवा एवं रचनात्मक कार्यों में विशेष अभिरुचि रखते हैं।

योजना की ओर से अखिल भारतीय राष्ट्रीय योजना कैम्प में योजना अधिकारी श्री बालेश्वर पाण्डेय एवं श्री रमा शंकर शुक्ल ने छात्रों के साथ अनेक बार नैनी, प्रयाग भागलपुर, मदुराई एवं अल्मोड़ा कैम्पों में भाग लिया है और श्रमदान, कार्यक्रम संचालन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सक्रिय सहयोग दिया है। विश्वविद्यालयीय क्षेत्र में भी छात्रों के कैम्प्स् में सड़कों की मरम्मत तथा प्रौढ़ शिक्षा एवं चिकित्सालयी समाज सेवा कार्य भी इन छात्रों द्वारा किये गये। संख्या में कम होते हुए भी योजना की उपलब्धियाँ श्रेणीक्रम

में श्रेष्ठ हैं और अनेक कार्यक्रम चल रहे हैं। आशा है कि अगले वर्ष तक योजना द्वारा किये गये कार्य अन्य विश्वविद्यालयों के लिये प्रेरक होंगे।

प्रशासन

योजना का प्रशासनिक ढाँचा इस प्रकार है :—

(१) अध्यक्ष, समाज सेवा विभाग—इसके परामर्शदाता हैं।

(२) दो परियोजना अधिकारी—(क) श्री बालेश्वर पाण्डेय
(ख) श्री रमाशंकर शुक्ल इसके प्रभारी हैं।

(३) योजना सहायक छः छात्र नेता हैं : (क) श्री रमाशीष सिंह
(ख) श्री महेशचन्द्र दूबे
(ग) श्री सत्यारायण मिश्र
(घ) श्री रमाशंकर उपाध्याय
(ङ) श्री ज्वाला प्रसाद पाठक
(च) श्रीविजय बहादुर सिह

बजट

इस योजना के लिये शिक्षा मंत्रालय से ३६ हजार (छत्तीस हजार) रुपये वार्षिक अनुदान प्राप्त होता है।

अध्ययन परियोजना

काशी विद्यापीठ के समाज सेवा विभाग के तत्वावधान मे "मंदित बच्चों का शिक्षण, उपचार तथा पुनर्वास" नामक तीन वर्षीय अध्ययन परियोजना १ जून, १९७० से चल रही है। इस परियोजना के लिए अमेरिकी सरकार के स्वास्थ्य, शिक्षा तथा कल्याण बिभाग द्वारा ४,४८,४०० रुपये का अनुदान दिया गया है। इस परियोजना के निदेशक डा० एम० वि० मूर्ति तथा प्रमुख अनुसंधानकर्त्ता श्री शम्भूनाथ सिह है।

इस अध्ययन के उद्देश्य किसी क्षेत्र विशेष मे निहित न होकर विभिन्न क्षेत्रों में निहित हैं, जिनमें से कुछ निम्नलिखित है।

१–मंदित बच्चों के शैक्षिक एवं पूर्व व्यावसायिक प्रशिक्षण पर आधारित बहुक्षेत्रीय एवं विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रम का विकास करना तथा मंदित बच्चों की शारीरिक, बौद्धिक, शैक्षिक एवं सामाजिक क्रियाशीलता पर उनके प्रभाव को मापना है।

२–दिवा परिचर्या एवं दिवा परिचर्या के साथ-साथ मंदित बच्चों की पारिवारिक सेवाओं के बीच सापेक्ष क्षमता का मूल्यांकन करना है।

३–बच्चों के समाजीकरण के लिए अवसर प्रदान करना तथा उनके दैनिक जीवन में आवश्यक मौलिक कुशलताओं को सीखने में सहायता प्रदान करना।

४–मंदित बच्चों की आन्तरिक योग्यताओं के विकास में सहायता प्रदान करना तथा अधिकाधिक मात्रा मे आत्म-निर्भरता की ओर ले जाने में सहायक होना ।

५–मंदित बच्चों को अपने ही घरों एवं समुदायों में क्रियाशील होने में सहायता प्रदान करना ।

६–उनके अभिभावकों एवं परिवारों को सेवायें अर्पित करना, जिससे एक ऐसे वातावरण का निर्माण हो सके जो बच्चों के विकास में सहायक हो तथा गृह परिचर्या का प्राविधान करना जिससे मंदित बच्चों की देखभाल एवं सहायता की जा सके ।

७–मंदित बच्चों के पुनर्वास कार्यों में समाज सेवा के तत्वो का तादात्म्य स्थापित करना ।

८–मंदित बच्चो की शिक्षा, उपचार एवं सुरक्षा के निमित्त दिवा परिचर्या एवं संस्थेतर सेवाओं का एक आदर्श प्रतिरूप उपस्थित करना ।

परियोजना के कार्यान्वियन के लिए ५० ऐसे मंदित बच्चों का चयन किया गया है जिनकी बुद्धिलब्धि ५० से ७० एवं आयु ९ से १२ वर्ष के मध्य है ।

इस परियोजना के लिए अब तक ३, १३, १८० रुपयों का अनुदान प्राप्त हो चुका है तथा परियोजना की प्रगति संतोषजनक है । परियोजना की समाप्ति की संभावित तिथि ३० जून, १९७३ है ।

समाजशास्त्र विभाग

काशी विद्यापीठ भारत में समाजशास्त्रीय अध्ययन का एक पुराना तथा प्रतिष्ठित केन्द्र रहा है । विद्यापीठ की स्थापना के समय से ही यहाँ के पाठ्यक्रम में समाजशास्त्र को स्थान दिया गया । विद्यापीठ के प्रथम आचार्य भारत-रत्न डा० भगवानदास भारत में समाजशास्त्र के अध्ययन तथा प्राचीन भारतीय सामाजिक विचारों के समाजशास्त्रीय विश्लेषण की नींव डालने वालों मे अग्रणी थे । उनके बाद विद्यापीठ के आचार्य श्री नरेन्द्रदेव तथा भूतपूर्व अध्यापक एवं कुलाधिपति डा० सम्पूर्णानन्द ने भी समाजशास्त्र के अध्ययन को विशेष प्रोत्साहन दिया । यहाँ स्नातक स्तर तक समाजशास्त्र का अध्यापन शुरू से ही था किन्तु स्नातकोत्तर स्तर का अध्यापन एवं शोधकार्य १९६१ से प्रारम्भ हुआ जबकि देश के प्रतिष्ठित समाजशास्त्री प्रो० राजाराम की अध्यक्षता में स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग का नवगठन किया गया । तब से यह विभाग निरन्तर प्रगति करता रहा है ।

समाजशास्त्र विभाग में सम्प्रति ३ रीडर तथा १० लेक्चरर काम कर रहे हैं । २ प्रोफेसर, २ लेक्चरर, १ प्रशिक्षक तथा १ सांख्यिकी प्रशिक्षक के पद रिक्त हैं । आशा है कि निकट भविष्य में उक्त सभी रिक्त पद भर जायेंगे । इस समय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की छात्रवृत्ति पानेवाले २ वरिष्ठ शोध विद्यार्थी भी अंशकालीन अध्यापन कार्य

कर रहे हैं। विभाग के अध्यापक श्री इन्द्रजीत सिंह आजकल अध्यापन अवकाश पर अमेरिका में उच्च अध्ययन कर रहे हैं।

इस वर्ष विभाग में स्नातकोत्तर कक्षाओं में विद्यार्थियों की कुल संख्या ३२७ है। एम० ए० प्रथम वर्ष में २१८ तथा द्वितीय वर्ष में १०९ विद्यार्थी हैं। पी-एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत विषयों पर शोध करने वाले छात्रों की संख्या २७ है। इस वर्ष दो शोध छात्र पी-एच० डी० शोध प्रबन्ध जमा कर चुके हैं।

स्नातकोत्तर कक्षाओं में पर्याप्त संख्या में विभिन्न विशेषीकरणों को पाठ्यक्रम में रक्खा गया है। यह विशेषीकरण निम्नांकित हैं :—

(१) समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ, (२) सामाजिक विचार, (३) समाज मनोविज्ञान, (४) सामाजिक शोध, (५) भारतीय सामाजिक संस्थाएँ एवं विचार, (६) समकालीन समाजशास्त्रीय सिद्धान्त (७) औद्योगिक समाजशास्त्र, (८) अपराधशास्त्र, (९) विधि का समाजशास्त्र, (१०) सामाजिक मानवशास्त्र, (११) मूल्य का समाजशास्त्र, (१२) नगरीय समाजशास्त्र, (१३) ग्रामीण समाजशास्त्र, (१४) सामुदायिक विकास एव सहकारिता, (१५) धर्म का समाजशास्त्र, (१६) सामाजिक संस्तरण एवं चलिष्णुता, (१७) सामाजिक जनांकिकी, (१८) राजनीतिक समाजशास्त्र, (१९) विज्ञान एव प्रौद्योगिकी का समाजशास्त्र, (२०) सामाजिक नियोजन, (२१) शिक्षा का समाजशास्त्र, (२२) प्रशासन का समाजशास्त्र, (२३) संस्कृति का समाजशास्त्र तथा (२४) सामाजिक सांख्यिकी। इसके अलावा एम० ए० प्रथम खण्ड की परीक्षा मे ऊँचे अंक प्राप्त करने वाले कुछ छात्रों को एक प्रश्नपत्र के स्थान पर शोध प्रबन्ध लिखने की अनुमति दी जाती है।

समाजशास्त्र विभाग के रीडर डा० गौरीशंकर के निर्देशन में बोक्सा जनजाति के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन तथा समस्याओं के अध्ययन के लिए एक शोध परियोजना चल रही है। इस परियोजना के लिए उत्तर प्रदेश सरकार के समाज एवं हरिजन कल्याण विभाग से वित्तीय अनुदान प्राप्त हुआ है। उक्त परियोजना में काम करने वाले दो शोध सहायक उत्तर प्रदेश के सुदूर तराई इलाकों में तथ्य संकलन में संलग्न हैं।

इस विभाग के विभागीय पुस्तकालय में करीब पाँच हजार ग्रंथ हैं। ग्रंथों के अलावा कुछ पत्रिकायें भी नियमित रूप में पुस्तकालय में आती है।

स्नातकोत्तर समाजशास्त्र परिषद् विभाग के विद्यार्थियों की शैक्षणिक परिषद् है। स्नातकोत्तर कक्षाओं के सभी छात्र इस परिषद् के सदस्य होते हैं जो प्रति वर्ष परिषद् के पदाधिकारियों का चुनाव करते हैं। परिषद् के मुख्य कार्य प्रसिद्ध समाजशास्त्रियों के भाषण कराना, गोष्ठियाँ तथा परिचर्यायें आयोजित करना, पर्यटन आयोजित करना तथा पत्रिका प्रकाशन करना है। परिषद् का अपना एक पुस्तकालय—डा० रंगनाथ शर्मा

पुस्तकालय––है जिसमे प्रतिवर्ष परिषद् कोष में से पुस्तकें क्रय की जाती हैं। इस समय इस पुस्तकालय में करीब सवा तीन सौ ग्रन्थ हैं। परिषद् के तत्वावधान में पिछले वर्ष लखनऊ के डा० सेवाराम शर्मा, दिल्ली के श्री केशवदेव शर्मा तथा प्रो० राजाराम शास्त्री भाषण आयोजित किये गये। परिषद् के वर्त्तमान सत्र का उद्घाटन केन्द्रीय सरकार के कृषि राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह द्वारा सम्पन्न किया गया।

इस विभाग के अध्यापकों ने समाजशास्त्रीय अध्ययन मंडल स्थापित किया है जो समय-समय पर गोष्ठियों का आयोजन करता है। इस वर्ष मंडल के समक्ष विभाग के अध्यापक डा० वंशीधर त्रिपाठी ने परिचर्चा हेतु अपना पर्चा प्रस्तुत किया। मंडल के द्वारा "सामाजिकी" नामक समाजशास्त्रीय पत्रिका भी प्रकाशित की जाती है जिसमें उच्च-स्तरीय मौलिक लेख प्रकाशित होते हैं। यह पत्रिका हिन्दी में प्रकाशित होनेवाली समाज-शास्त्र की प्रथम पत्रिका है।

विभिन्न गोष्ठियों तथा सम्मेलनों में विभाग के अध्यापक निरन्तर सम्मिलित होते हैं। गत वर्ष हैदराबाद में होनेवाले अखिल भारतीय समाजशास्त्रीय सम्मेलन में विभागाध्यक्ष डा० शरद कुमार सिह, डा० गौरीशंकर, श्री जुगेन्द्र सहाय तथा श्री आनन्दमूर्ति मिश्र ने विभाग का प्रतिनिधित्व किया था। इसके अतिरिक्त उक्त सम्मेलन में विभाग के रीडर डा० शकर सहाय श्रीवास्तव ने दिल्ली में भारत सरकार के गृह मत्रालय द्वारा आयोजित अपराध शास्त्र तथा दण्डशास्त्र से सबंधित एक गोष्ठी में अपना पर्चा प्रस्तुत किया। यूनाइटेड स्टेट्स एजुकेशनल फाउन्डेशन द्वारा पटना मे आयोजित भारत के समाजशास्त्रियों की एक वृहद् राष्ट्रीय गोष्ठी में विभाग का प्रतिनिधित्व डा० शंकर सहाय श्रीवास्तव तथा श्री जुगेन्द्र सहाय ने किया। इन सम्मेलनों तथा गोष्ठियों के अतिरिक्त वाराणसी के विश्वविद्यालयों तथा शोध संस्थानों में आयोजित होनेवाली विभिन्न गोष्ठियों में विभाग के प्राध्यापक निरन्तर अपना योगदान करते रहते हैं।

भविष्य के लिए समाजशास्त्र विभाग ने अनेक योजनाएँ भी बनाई है जिन्हें कार्यान्वित करने के प्रयास किये जा रहे हैं। इन योजनाओं में अपराधशास्त्र में डिप्लोमा पाठ्य-क्रम की तथा ग्रंथ प्रकाशन की योजनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

अर्थशास्त्र विभाग

आधुनिक अर्थशास्त्र का विकास देशकाल से एक हद तक बंधा हुआ है, सार्वभौम नहीं है। अतः इन सिद्धान्तों एवं व्यवहारो का अध्ययन करते समय भारत की विशिष्ट अध्यात्मवादी पृष्ठभूमि, परम्परा एवं परिस्थिति का ध्यान रखना आवश्यक है। काशी विद्यापीठ अपने संकल्प के अनुसार प्राच्य और पाश्चात्य, प्राचीन एवं नवीन सिद्धान्तों का एक नए स्तर पर समन्वय करने पर बल देता रहा है। मानव मूल्य की स्थापना

सामाजिक समता तथा सामाजिक न्याय के माध्यम से हो, यही अर्थशास्त्र के अध्ययन का प्रमुख लक्ष्य है ।

शास्त्री प्रथम खण्ड में १९१ एवं द्वितीय खण्ड में ८७ छात्र-छात्राएँ हैं । एम० ए० प्रथम खण्ड में १८३ एवं द्वितीय खण्ड में ९४ छात्र-छात्राएँ है । पी० एच० डी० उपाधि के लिए लगभग ३० शोध कर्त्ता पंजीकृत हैं ।

पी-एच० डी० उपाधि के लिए शोध कार्य का प्रारम्भ सन् १९६३ से हुआ । अब तक निम्नलिखित शोधकर्त्ता पी-एच० डी० उपाधि प्राप्त कर चुके हैं :—

१—श्री अवध प्रसाद	ग्रामदान का आर्थिक अध्ययन	सन्	१९७०
२—श्री सिद्धनाथ पाण्डेय	पूर्वी उ० प्र० में चीनी उद्योग	,,	,,
३—श्री श्रीराम चौधरी	पूर्वी उ० प्र० में औद्योगिक सहकारी समितियों का एक तुलनात्मक अध्ययन ।	,,	,,
४—श्री सरस्वती प्रसाद उपाध्याय	पूर्वी उत्तर प्रदेश में कृषि के प्राविधिक परिवर्तनों को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन ।	,,	,,
५—श्री परमात्मानन्द सिंह	लघु उद्योगों के अर्थ प्रबन्धन में व्यावसायिक बैंकों का योगदान (वाराणसी के सन्दर्भ में)	,,	,,
६—श्री रामनारायण राय	आर्थिक विकास के सन्दर्भ में नियोजन काल में भारतीय भुगतान संतुलन की प्रवृत्तियाँ ।	सन्	१९७१

श्री गौरीशंकर दूबे तथा श्री शिव कुमार ओझा अपना शोध प्रबन्ध जमा कर चुके हैं । क्रमशः इनके विषय हैं :—(१) खेतिहर मजदूरों की आर्थिक स्थिति और योजनाओं का प्रभाव, (२) पश्चिमी बंगाल में पटसन के कारखानों के श्रमिक ।

श्री सत्यप्रकाश पाण्डेय को शोध छात्रवृत्ति मिल रही है । इनका विषय है— "उत्तर प्रदेश में आर्थिक विषमताएँ—एक क्षेत्रीय अध्ययन" । श्री अवध प्रसाद को गांधी अध्ययन योजना के अन्तर्गत "ग्रामीण हिंसा" पर काम करने के लिये शोध छात्रवृत्ति मिल रही है ।

शास्त्री एवं एम० ए० के पाठचक्रमों में सुधार एवं सुसंगठन का बराबर प्रयास हुआ है । शास्त्री कक्षाओं में गणित एवं सांख्यिकी के प्रारम्भिक सिद्धान्तों के अध्यापन की व्यवस्था की गई है । एम० ए० के पाठचक्रम में उच्च सांख्यिकी, गणितीय अर्थशास्त्र एवं अर्थनीति के प्रश्नपत्र जोड़े गये हैं । सन् १९६४ में वृत्ति अर्थशास्त्र, सामुदायिक विकास एवं पंचायती राज, औद्योगिक अर्थशास्त्र एवं श्रम प्रवन्ध, व्यावसायिक प्रवन्ध और गांधी

अर्थनीति में विशेषीकरण की व्यवस्था की गई थी परन्तु अनेक कारणों से विशेषकर साधनों के अभाव में यह व्यवस्था कुछ समय उपरान्त स्थगित कर दी गई। सन् १९६३ में अर्थशास्त्र की शिक्षण विधियों के प्रमाणीकरण एवं पाठ्यक्रम के सुसंगठन पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से एक विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसके निष्कर्षों के अनुसार पाठ्यक्रम में परिवर्तन किये गये। सन् १९७१ में एम० ए० के पाठ्यक्रम में सामान्य गणितीय विश्लेषण एवं शोध पद्धतियाँ, भारतीय नियोजित आर्थिक विकास, का अर्थशास्त्र—तीन अनिवार्य प्रश्न पत्र जोड़े गये और विश्व तथा भारत की आर्थिक चिन्तन धाराओं, समस्याओं और आवश्यकताओं को पाठ्यक्रम में समाहित करने के लिये विश्व का अर्थशास्त्र, विभिन्न क्षेत्रों का आर्थिक विकास, आर्थिक विकास एवं तकनीकी परिवर्तन आदि वैकल्पिक प्रश्नपत्र बढ़ा दिये गये हैं।

सम्प्रति एम० ए० प्रथम वर्ष में आर्थिक विचारों का इतिहास, लोकवित्त, आर्थिक नियोजन और सामान्य गणितीय विश्लेषण एवं शोध पद्धतियाँ अनिवार्य प्रश्न पत्र हैं। एम० ए० द्वितीय खण्ड में आर्थिक सिद्धान्त, मौद्रिक सिद्धान्त और विकास का अर्थशास्त्र अनिवार्यत: पढ़ाए जाते हैं। इनके अतिरिक्त प्रत्येक वर्ष छात्रगण वैकल्पिक प्रश्न पत्र लेते हैं। एम० ए० खण्ड द्वितीय में उन्हें एक शोध निबन्ध प्रस्तुत करना पड़ता है और उनकी मौखिक परीक्षा होती है।

अर्थशास्त्र विभाग में एक प्राध्यापक, एक प्रवक्ता और ८ व्याख्याता हैं। व्याख्याता के दो पद रिक्त है और प्रवक्ता के दो पदों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को लिखा गया है। अध्यापकों की सूची निम्नलिखित है :—

१—डा० दूधनाथ चतुर्वेदी	प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष	आर्थिक सिद्धान्त, श्रम सिद्धान्त, गांधी अर्थ दर्शन, लोकवित्त नियोजन एवं विकास, ग्रामीर्ण पुनर्निर्माण।
२—डा० पुरुषोत्तम पाण्डेय	प्रवक्ता	मौद्रिक सिद्धान्त, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, आर्थिक नियोजन।
३—श्री कृष्णनाथ शर्मा	व्याख्याता	आर्थिक विचार, नियोजन एवं विकास
४—श्री व्रजेन्द्रकिशोर अग्रवाल	,,	सांख्यिकी, औद्योगिक अर्थशास्त्र, क्षेत्रीय अर्थशास्त्र।
५—डा० ईश्वर दत्त सिंह	,,	कृषि अर्थशास्त्र, लोकवित्त, विपणन का अर्थशास्त्र।
६—श्री कृष्ण कुमार कौल	,,	मौद्रिक सिद्धान्त, लोक संख्या, आर्थिक सिद्धान्त, आर्थिक विचार।
७—श्री गुरुदीन राम	,,	सांख्यिकी, आर्थिक सिद्धान्त।

८–कु० नीरजा उबेराय ,, आर्थिक सिद्धान्त, नियोजन एवं विकास।
९–श्री रामचन्द्र सिंह ,, श्रम, लोकवित्त, सहकारिता।
१०–डा० सुधाकान्त मिश्र ,, आर्थिक विकास, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, नियोजन।

इनके अतिरिक्त श्री सत्यप्रकाश पाण्डेय एवं डा० अच्युतानन्द घिल्डियाल भी कक्षाएँ लेते हैं।

प्रो० डा० डी० एन० चतुर्वेदी उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के लिए तुलनात्मक आर्थिक प्रणालियों पर स्नातकोत्तर स्तर पर पाठ्य पुस्तक लिख रहे हैं और श्री मसग्रेव के "पब्लिक फाइनेन्स" नामक ग्रन्थ का अनुवाद कर रहे है। इसी अकादमी ने डा० पुरुषोत्तम पाण्डेय को मौद्रिक सिद्धान्त पर और श्री व्रजेन्द्र किशोर अग्रवाल को साख्यिकी पर स्नातकोत्तर स्तर की पाठ्य पुस्तक लिखने का भार सौपा है। अर्थशास्त्र विभाग के अध्यापक हिन्दी-अंग्रेजी में अर्थशास्त्र पर कई पुस्तकें लिख चुके हैं और बराबर लिखते जा रहे हैं। इनकी सूची निम्नलिखित है :—

१–श्री० डा० डी० एन० चतुर्वेदी—अर्थशास्त्र की विवेचना, महात्मा गांधी का आर्थिक दर्शन, श्रम-सिद्धान्त, आर्थिक विकास एवं लोक कल्याण, आर्थिक योजनाएँ और गांधी जी, भारत की सामाजिक अर्थनीति, लोकमूलक अर्थ व्यवस्था, महात्मा गांधी जी के आर्थिक दर्शन का भारतीय आर्थिक विचारधारा पर प्रभाव, प्राचीन भारतीय अर्थ विचार, सामान्य अर्थशास्त्र।

२–श्री कृष्णनाथ शर्मा—इम्पैक्ट आफ फारेन एड आन इण्डियाज फारेन पालिसी, इकोनामिक एण्ड पोलिटिकल डेवलपमेन्ट एण्ड कल्चरल चेन्ज।

३–श्री व्रजेन्द्र किशोर अग्रवाल—आधुनिक व्यवसाय, औद्योगिक संगठन, मार्केट रिपोर्ट्स।

४–श्री कृष्ण कुमार कौल—आर्थिक विश्लेषण।

५–डा० ईश्वर दत्त सिंह—मार्केटिंग आफ मिलमेड काटन फेब्रिक्स।

६–डा० सुधाकान्त मिश्र—अर्थशास्त्र के सिद्धान्त, भारत का वैदेशिक व्यापार, अवमूल्यन एवं भारतीय अर्थ-व्यवस्था पर उसका प्रभाव, औद्योगिक सिद्धान्त एवं नियत्रण, अर्थशास्त्र शब्दावली, भारत और विदेशी सहायता।

विभाग के अध्यापकों के अनेक लेख आर्थिकी, योजना, कल्पना, धर्मयुग आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

विभाग की शोध पत्रिका "आर्थिकी" का प्रकाशन आर्थिक कठिनाइयों के होते हुए भी बराबर हो रहा है।

श्री गुरुदीन राय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुदान से एक शोध परियोजना 'स्टडी आफ दी कास्ट आफ प्रोडक्शन आफ हाइ यीलिंडग वेरायटी ह्वीट एण्ड पैडी एण्ड

लोकल ह्वीट एण्ड पैडी इन यू० पी० एण्ड हरियाना" पर काम कर रहे हैं। श्री गुरुदीन राम काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से लोकोमोटिव इन्डस्ट्री इन इण्डिया पर और श्री रामचन्द्र सिंह काशी विद्यापीठ से "भारत में सार्वजनिक क्षेत्र में इस्पात उद्योग के श्रमिकों की समस्याएँ" पर पी-एच० डी० उपाधि के लिए शोध कार्य कर रहे हैं।

इस वर्ष अर्थशास्त्र विभाग के तत्वावधान में "शहरी सम्पत्ति का सीमा निर्धारण" विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें काशी विद्यापीठ के अध्यापकों के अतिरिक्त काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, गांधी विद्या संस्थान एवं नगर के अन्य महाविद्यालयों के अध्यापकों ने भाग लिया। गोष्ठी के अधिवेशन दो दिन हुए। इसी प्रकार की गोष्ठियों का आयोजन बराबर होता रहा है। अर्थशास्त्र परिषद् एवं नियोजन परिषद् द्वारा व्याख्यानों एवं अन्य कार्यक्रमों का आयोजन होता रहा। नेशनल कोआपरेटिव यूनियन आफ इण्डिया द्वारा संचालित सहकारिता विषय में निबन्ध एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता में हमारे छात्रों ने भाग लिया।

अर्थशास्त्र विभाग के विकास की योजना प्रस्तुत कर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को भेजी गई है। राष्ट्र की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर अर्थशास्त्र के विभिन्न पक्षों का अध्ययन-अध्यापन हम ऐसी पद्धति से करना चाहते हैं कि हमारे छात्र राष्ट्रीय जीवन में उद्देश्यपूर्ण सेवा कर सकें। अर्थशास्त्र के उच्चतर अध्ययन के लिए अर्थशास्त्र विभाग का स्कूल आफ ऐप्लाइड इकोनामिक्स एण्ड रिसर्च नाम से एक संस्थान स्थापित करने का प्रस्ताव है। इसके अन्तर्गत कृषि अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण पुनर्निर्माण, आर्थिक नियोजन एवं विकास, औद्योगिक विकास एवं श्रम प्रबन्ध, लोक संख्या, उच्च सांख्यिकी, गांधी अर्थनीति आदि के विशेषीकरण की व्यवस्था होगी। व्यावहारिक कार्य पर जोर दिया जायगा और छात्रों का समस्यामूलक शिक्षण होगा। साथ ही इन क्षेत्रों में संलग्न लोगों के लिये अल्पकालीन प्रशिक्षण की भी व्यवस्था होगी। विभागीय पत्रिका के प्रकाशन, शोधपत्रों के प्रकाशन एवं विभागीय पुस्तकालय की स्थापना के लिए भी हमने विस्तृत योजना बनाकर भेजी है।

इस संस्थान के लिए दो प्राध्यापक, चार प्रवक्ता, दस व्याख्याता तथा अनेक शोध कर्त्ताओं की आवश्यकता होगी।

राजशास्त्र विभाग

काशी विद्यापीठ में राजशास्त्र का अध्ययन-अध्यापन प्रारम्भ से ही होता रहा है। इस विषय में स्नातकोत्तर कक्षाओं का शुभारम्भ ५ सितम्बर १९६९ को विद्यापीठ के भूतपूर्व आचार्य एवं कुलाधिपति स्वर्गीय श्री श्रीप्रकाशजी के सारगर्भित भाषण द्वारा हुआ।

सम्प्रति विभाग में चार प्राध्यापक हैं। रीडर एवं विभागाध्यक्ष डा० मुरलीधर भगत के अतिरिक्त श्री सुन्दरलाल गुप्त, डा० सुदामा मिश्र तथा डा० प्रमोदमोहन पाण्डेय इस विषय का अध्यापन करते हैं।

भारत के भूतपूर्व प्रधान मंत्री एवं विद्यापीठ के यशस्वी प्राचीन छात्र स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री की स्मृति में एक सम्मानित पीठ (चेयर) की लाल बहादुर शास्त्री स्मारक निधि ने स्वीकृति दी है। निकट भविष्य में ही इस पद पर नियुक्ति होने वाली है। इसके अतिरिक्त एक व्याख्याता की नियुक्ति हो चुकी है जो शीघ्र ही कार्यभार ग्रहण करनेवाले हैं।

हमारी स्नातकोत्तर कक्षाओं का यह तृतीय वर्ष है। सन् १९७१ में ३७ छात्रों ने राजशास्त्र एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

१९७१–७२ सत्र से शोध कार्य भी प्रारम्भ हो गया है और पाँच छात्र-छात्राएँ पी-एच० डी० डिग्री के लिए कार्य कर रहे हैं।

विभागीय पुस्तकालय के लिए २० हजार रुपये की धनराशि सरकार से प्राप्त हुई है जिससे शीघ्र ही छात्रों की सुविधा के लिये विभागीय पुस्तकालय की स्थापना की जा रही है।

छात्रों की अपनी एक परिषद् है। गत वर्ष राजशास्त्र परिषद् ने लोकसभा की कार्यवाही के अध्ययन हेतु छात्रों के एक दल को शैक्षणिक यात्रा पर डा० प्रमोद पाण्डेय के नेतृत्व में दिल्ली भेजा था। इस यात्रा हेतु तत्कालीन उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री श्री त्रिभुवन नारायण सिंह जी ने ५००) पाँच सौ रुपये का अनुदान दिया था।

इस सत्र की परिषद् का उद्घाटन भूतपूर्व कुलपति प्रोफेसर राजाराम शास्त्री, संसद सदस्य ने अपने भाषण से किया। परिषद् ने विद्वानों के भाषण आयोजित करने तथा पत्रिका सम्पादन की योजना तैयार की है।

मनोविज्ञान विभाग

काशी विद्यापीठ में मनोविज्ञान की स्नातक कक्षाएँ १९६० में प्रारम्भ हुई। प्रारम्भ से ही मनोविज्ञान विषय विद्यार्थियों में लोकप्रिय रहा है। सैद्धान्तिक प्रश्नपत्रों के अतिरिक्त व्यावहारिकी के लिए मनोविज्ञान विभाग के अन्तर्गत एक प्रयोगशाला भी है जिसमें मनोवैज्ञानिक प्रयोगों के लिए उपकरण तथा परीक्षण सम्मिलित हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्रयोगशाला के विकास हेतु ५०,०००) रु० का अनुदान प्राप्त है और प्रयोगशाला को विकसित करने की प्रक्रिया प्रारम्भ है।

इस सत्र से (१९७१-७२) मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर कक्षाएँ प्रारम्भ हो गयी हैं।

सम्प्रति मनोविज्ञान में ३ व्याख्याता, १ प्रयोगशाला सहायक और १ प्रयोगशाला परिचायक है। एक प्राध्यापक की नियुक्ति भी हो चुकी है पर उन्होंने अभी कार्यभार ग्रहण नहीं किया है। निकट भविष्य में १ प्रवक्ता और २ व्याख्यातों की नियुक्ति और होगी।

इस सत्र में मनोविज्ञान में विद्यार्थियों की संख्या स्नातक कक्षाओं में ४०० और स्नातकोत्तर कक्षा में ५० है।

मनोविज्ञान परिषद् का हर वर्ष गठन किया जाता है और परिषद् समय-समय पर मनोविज्ञान के अध्ययन के विस्तार सम्बन्धी कार्यक्रम संगठित करती है। इस वर्ष परिषद् में विद्यापीठ के नये कुलपति का ६ दिसम्बर को स्वागत किया गया और उनके सम्मुख मनोविज्ञान विभाग की गतिविधि व समस्याएँ प्रस्तुत की गईं। कुलपति महोदय ने मनोविज्ञान के अध्ययन-अध्यापन के विकास के प्रति गहरी रुचि व्यक्त की।

परिषद् के अन्तर्गत ६-१-७२ को डा० लालबचन त्रिपाठी, प्राध्यापक एवं अध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग गोरखपुर विश्वविद्यालय ने 'मानव प्रेरणा' पर भाषण दिया।

१९-१-७२ को डा० मदन मोहन सिन्हा, प्राध्यापक एवं अध्यक्ष मनोविज्ञान, काशी विश्वविद्यालय ने संतुलित व्यवहार पर अपना भाषण दिया।

विद्यार्थियों और अध्यापकों के प्रयास से प्रारम्भ से ही एक विभागीय पुस्तकालय का आयोजन हुआ है। इस समय पुस्तकालय में ५३० ग्रन्थ है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से विभागीय पुस्तकालय के विकास के हेतु ३०,००० रु० का अनुदान प्राप्त हुआ है जिससे शीघ्र ही इसका समुचित विकास होगा।

अब तक विभाग से श्री त्रिलोक सिंह धपोला ने मनोवैज्ञानिक अधिवेशनों मे ३ शोध पत्र और गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रयोगात्मक मनोविज्ञान पर आयोजित गोष्ठी में एक शोध-पत्र प्रस्तुत किया है। साथ ही श्री धपोला ने भारतीय समाज-विज्ञान अनुसंधान परिषद् से प्राप्त अनुदान द्वारा "वाराणसी में १९७१ के मध्यावधि लोकसभा चुनाव का समाज मनोवैज्ञानिक अध्ययन" पर एक शोध प्रतिवेदन प्रस्तुत किया है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा विद्यापीठ को प्रदत्त शोध योजना के अन्तर्गत श्री धपोला 'भारतीय मनोविज्ञान निदेशिका' तैयार कर रहे हैं।

अब तक मनोविज्ञान में २ छात्रों को पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त हो चुकी है।

निकट भविष्य में विद्यापीठ द्वारा मनोविज्ञान विभाग के लिए अलग भवन और प्रयोगशाला निर्माण की योजना है।

शास्त्र ज्ञान संकाय

इतिहास विभाग

काशी विद्यापीठ की स्थापना के समय से ही इतिहास विद्यापीठ के पाठ्यक्रम में अध्ययन-अध्यापन का एक मुख्य विषय रहा है। १९६४ के पूर्व शास्त्री कक्षाओं में इतिहास विषय का व्यवस्थित रूप से अध्यापन होता रहा है। १९६४, जुलाई से इतिहास में एम० ए० कक्षाओं की व्यवस्था होने के साथ ही विषय का अध्यापन और व्यापक स्तर पर प्रारम्भ किया गया। दो वर्षों के पाठ्यक्रम के अनुसार नौ प्रश्नपत्रों के अध्यापन का कार्य विगत आठ वर्षों से हो रहा है। इस समय भारतीय इतिहास के अन्तर्गत प्राचीन भारत में विशेषीकरण के लिए अध्यापन की व्यवस्था है। अध्यापकों की कमी के कारण शेष दो युगों के इतिहास में विशेषीकरण के निमित्त अध्यापन अभी प्रारम्भ नहीं किया जा सका है। इस समय विभाग में एक प्रोफेसर और तीन प्राध्यापक कार्यरत हैं। प्रो० भगवती प्रसाद पांथरी के निर्देशन में शोधकार्य भी प्रारम्भ कर दिया गया है। श्री शिवस्वरूप सहाय अपना शोध पूरा करके इस वर्ष पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त कर रहे हैं। इनके शोध का विषय है "रामायणकालीन भारत"। लगभग आधे दर्जन शोध छात्र अपने शोध प्रबन्ध की पूर्णता के लिए प्रयत्नशील हैं विभाग के अध्यापकों के द्वारा भी शोध कार्य हो रहा है। अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थों के प्रणेता प्रो० भगवती प्रसाद पांथरी ने एक और ग्रन्थ 'मौर्य साम्राज्य का सांस्कृतिक इतिहास' का प्रणयन किया है जो उनकी अद्यतन शोध कृति है। यह ग्रन्थ हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश के द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। पुस्तक का प्रकाशन अप्रैल १९७२ तक पूर्ण हो जाने की आशा है। विभाग के दो अध्यापकों ने अपना शोध प्रबन्ध उपाधि के लिए प्रस्तुत कर दिया है। प्रो० गिरीश चन्द्र द्विवेदी ने आगरा विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० उपाधि के लिए अपना शोध प्रबन्ध 'मुगल इतिहास में जाटों का योगदान' और प्रो० महेन्द्र प्रताप सिंह ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० उपाधि के लिए अपना शोध प्रबन्ध 'मुस्लिम लेखकों का भारत विवरण' प्रस्तुत कर दिया है। १९७२ के आगामी माहों में इन्हें सम्बन्धित उपाधियाँ प्राप्त हो जाएँगी। श्री शैलेन्द्र प्रसाद पांथरी 'अवध और प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम' पर शोध कार्य कर रहे हैं।

१९७१-७२ के शैक्षणिक वर्ष में एम० ए० कक्षाओं में लगभग १५० विद्यार्थी और शास्त्री कक्षाओं में १६० विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। विगत वर्षों में एम० ए० की परीक्षाओं में कुछ विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी प्राप्त कर कीर्त्तिमान स्थापित किये हैं और वे

शोध छात्रवृत्तियाँ भी प्राप्त कर रहे हैं तथा व्यवस्थित रूप से अपने कार्य पूरा करने में संलग्न हैं।

विभाग एक परिषद् का संचालन भी करता है। परिषद् के तत्वावधान में इतिहास के मूर्द्धन्य विद्वानों ने परिषद् की गोष्ठियों में भाग लिया है, यथा सर्वश्री पं० सुरति नारायणमणि त्रिपाठी, डा० हीरा लाल सिंह, डा० अवध किशोर नारायण, प्रो० ए० एल० बैशम, डा० महाराज कुमार रघुवीर सिंह। प्रो० राजाराम शास्त्री और वर्तमान कुलपति श्री रघुकुल तिलक ने विगत दो वर्षों में परिषद् के सत्रों का उद्घाटन कर इसे समादृत किया है। परिषद् विगत वर्षों में समय-समय पर ऐतिहासिक महत्व के स्थानों एवं स्मारकों के भ्रमण की व्यवस्था भी करती रही है। इस सन्दर्भ में भारत के अनेक महत्वपूर्ण स्थानों का विद्यार्थियों ने भ्रमण किया है और वे उनसे लाभान्वित हुए हैं। इस वर्ष भारत-पाक संघर्ष के कारण भ्रमण का कार्यक्रम स्थगित कर देना पड़ा। परिषद् अपने अल्प साधनों से एक विभागीय पुस्तकालय भी चलाती है जिसमें लगभग एक हजार पुस्तकों का संकलन किया गया है। उ० प्र० सरकार के विशेप अनुदान से तीन सौ और पुस्तकें क्रय की गई हैं जिनसे विभागीय पुस्तकालय पूर्वापेक्षा उसकी, उपयोगिता में अतिरिक्त वृद्धि हुई है। परिषद् इस वर्ष से एक पत्रिका 'पुराण मिति' नाम से प्रकाशित कर रही है जिसका प्रथम अंक अप्रैल तक प्रकाश्य है। विभाग ने अनेक शैक्षिक विकास योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए प्रयत्नशील है। उनका यदि समय पर सम्पादन हुआ तो विभाग एक महत्वपूर्ण संस्थान का स्वरूप धारण कर लेगा।

हिन्दी विभाग

सम्पूर्ण भारत में काशी विद्यापीठ ही उच्च शिक्षा का एक ऐसा केन्द्र है जिसने १९२१ में अपनी स्थापना के साथ ही हिन्दी भाषा के माध्यम से अध्ययन-अध्यापन का सकल्प लिया और उसे अंग्रेजी भाषा के प्रभुत्व के काल में भी चरितार्थ किया। इस संकल्प के कारण हिन्दी विभाग का यहाँ विशेष दायित्व और महत्त्व रहा है, भाषा प्रसार और प्रचार के साथ ही साहित्य-सस्कार उत्पन्न करने का कार्य इस विद्यापीठ में प्रारम्भ से ही होता रहा है। प्रारम्भिक वर्षों में विद्यार्थियों की सीमित संख्या के कारण अध्यापकों की संख्या भी सीमित थी और शास्त्री-स्तर तक हिन्दी का अध्यापन होता था, किन्तु स्वतन्त्रता-प्राप्ति के वाद विभाग का भी विकास हुआ और अध्यापकों की संख्या बढ़ी। १९६४ में स्नातकोत्तर स्तर पर विषय का अध्यापन प्रारम्भ हुआ और विभाग का एक विश्वविद्यालय के महत्त्वपूर्ण विभाग के रूप में पुनर्गठन हुआ। व्याख्याता पद की वृद्धि हुई, प्रवक्ता और प्राध्यापक नियुक्त किये गये। स्नातकोत्तर स्तर पर विषय के अध्यापन के साथ ही शोध पर विशेष बल दिया गया। शोध-कार्य को विशेष प्रोत्साहन देने और शोधपूर्ण उपलब्धियों के प्रकाशन के लिये विभाग से 'उपलब्धि' नाम से एक पत्रिका का प्रकाशन

प्रारम्भ हुआ। इस पत्रिका में तब से विभागीय अध्यापकों के अतिरिक्त बाहरी विद्वानों के शोध-निबन्ध प्रतिवर्ष प्रकाशित होते हैं। हिन्दी भाषा और साहित्य के अखिल भारतीय महत्व को ध्यान मे रखकर पाठ्यक्रम का संशोधन और नवीनीकरण भी किया गया। आधुनिक भारतीय भाषाओं में समान सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव के कारण विकसित आधुनिक प्रवृत्तियों के तुलनात्मक अध्ययन के लिये एक प्रश्नपत्र की व्यवस्था करके विशेष प्रयास किया गया किन्तु अध्यापकों के अभाव में यह प्रयास सफल नहीं हो सका। इस वर्ष पाठ्यक्रम को कुछ इस प्रकार संशोधित किया गया कि छात्रों को हिन्दी के प्राचीन साहित्य के ज्ञान के साथ ही न केवल आधुनिक बल्कि वर्तमान और समसामयिक साहित्यिक कृतियों और प्रवृत्तियों का भी परिचय प्राप्त हो। प्राय: विश्वविद्यालयों में निरन्तर विकासोन्मुख आधुनिक साहित्य और नयी समीक्षा पद्धतियों की उपेक्षा दिखाई पड़ती है।

सम्प्रति हिन्दी विभाग में ९ अध्यापक हैं :—

१—डा० केशव प्रसाद सिंह, रीडर, अध्यक्ष
२—डा० शम्भु नाथ सिंह, रीडर
३—डा० व्रजविलास श्रीवास्तव, रीडर
४—डा० युगेश्वर पाण्डेय, लेक्चरर
५—श्री पूर्णगिरि गोस्वामी, लेक्चरर
६—डा० वासुदेव सिंह, लेक्चरर
७—डा० मोहनराम यादव, लेक्चरर
८—डा० श्याम तिवारी, लेक्चरर
९—डा० सर्वजीत राय, लेक्चरर

इन अध्यापकों के निर्देशन में कई शोध-छात्र महत्त्वपूर्ण विषयों पर शोधकार्य कर रहे हैं। इस वर्ष निम्नलिखित विषयों पर पी-एच० डी० उपाधि के लिये शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किये गये हैं :—

(१) मध्यकालीन प्रमुख संतों के काव्य में अप्रस्तुत योजना—शोध-छात्रा—श्रीमती मायाकुमारी, निर्देशक—डा० केशवप्रसाद सिंह
(२) सूरदास की कारयित्री प्रतिभा—प्रस्तुतकर्ता—श्री भगवती प्रसाद राय, निर्देशक—डा० वासुदेव सिंह
(३) तुलसी की दोहावली का विवेचनात्मक अध्ययन—प्रस्तुतकर्ता—श्री गौरीशंकर मिश्र, निर्देशक—डा० वासुदेव सिंह।
(४) हिन्दी पत्रकारिता के विकास में काशी का योग—प्रस्तुतकर्ता—श्री हरिहरयती, निर्देशक—डा० व्रजविलास श्रीवास्तव।

(५) हिन्दी के प्रयोगवादी उपन्यास—प्रस्तुतकर्ता—श्री उमादत्त मिश्र, निर्देशक—डा० शम्भुनाथ सिह ।

(६) हिन्दी में हास्य-व्यंग साहित्य—प्रस्तुतकर्ता—श्री राजेन्द्रप्रसाद पाण्डे, निर्देशक—डा० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा ।

इस वर्ष ३२ छात्रों को विभिन्न विषयों पर शोध-कार्य करने की स्वीकृति दी गई है । इस प्रकार इस समय कुल ८० शोध-छात्र विभिन्न विषयों पर शोध-कार्य कर रहे हैं और कई शोध-प्रबन्ध निकट भविष्य में ही प्रस्तुत होने वाले हैं ।

इस वर्ष एम० ए० द्वितीय वर्ष में छात्रों की संख्या ८४ है । विभाग की आकांक्षा थी कि विशेषीकरण के सभी स्थगित प्रश्नपत्रों को इस वर्ष प्रारम्भ किया जाय, किन्तु अध्यापकों की कमी के कारण इसकी पूर्ति न हो सकी । फिर भी प्राचीन और आधुनिक युग की कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण धाराओं और प्रवृत्तियों पर भी विशेषीकरण की कक्षायें इस वर्ष प्रारम्भ कर दी गई हैं । इस वर्ष भी एम० ए० द्वितीय वर्ष का परीक्षाफल बहुत सन्तोषजनक था और कई छात्रों ने प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की ।

विभाग द्वारा प्रस्तुत दो महत्त्वपूर्ण योजनाएँ इस समय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विचाराधीन हैं । पहली योजना काशी विद्यापीठ में एक भाषा-संस्थान खोलने की है । राष्ट्रीय स्तर पर भाषा, साहित्य और संस्कृति के तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता सभी समझते हैं और यह स्वीकार करते हैं कि राष्ट्रीय एकता के लिये यह अध्ययन व्यापक स्तर पर अपेक्षित है किन्तु इस दिशा में अभी बहुत सीमित प्रयास किया गया है । इस संस्थान का उद्देश्य भारत की आधुनिक भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन के साथ ही भाषा वैज्ञानिक और साहित्यिक दृष्टि से उनका तुलनात्मक अध्ययन-अध्यापन करना है । दूसरी महत्त्वपूर्ण योजना मानस चतुश्शती के उपलक्ष में बनाई गई है । महाकवि तुलसीदास जी के सम्मान में 'तुलसी चेयर' की स्थापना इस योजना का एक अंग है । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उसकी स्वीकृति दे दी है । तुलसी चेयर की स्थापना विभाग की इस वर्ष की महत्तम उपलब्धि है । इसके साथ इस वर्ष तुलसी साहित्य के सम्बन्ध में परिचर्चा, विचार-गोष्ठी और ग्रीष्मकालीन शिक्षण-शिविर चलाने कभी योजना है । इस पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में विचार हो रहा है और शीघ्र ही अनुदान मिलने की आशा है ।

अध्यापकों और छात्रों के सम्मिलित प्रयास से गत वर्षो की भाँति हिन्दी परिषद् में इस वर्ष भी साहित्यिक जागरूकता रही है । हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री सुश्री महादेवी वर्मा ने अपने विचारोत्तेजक भाषण से हिन्दी परिषद् का उद्घाटन किया । साहित्य के सार्वभौमिक और स्थायी मूल्यों तथा आधुनिक भारतीय संदर्भ में साहित्यकार के दायित्व पर महादेवी जी का भाषण बहुत ही विद्वत्तापूर्ण था । परिषद् को दक्षिण के विद्वानों से

भी सम्पर्क स्थापित करने का अवसर मिला। मद्रास विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० नायडू ने छात्रों को दक्षिण में हिन्दी भाषा और साहित्य की स्थिति से परिचित कराया। उन्होंने उत्तर और दक्षिण के विश्वविद्यालयों में अध्यापकों के आदान-प्रदान की आवश्यकता पर बल दिया। बिहार विश्वविद्यालय में हिन्दी के विभागाध्यक्ष डा० श्यामनन्दन किशोर ने आधुनिक हिन्दी साहित्य की उपलब्धियों और समस्याओं पर परिषद् में अपने विचार व्यक्त किये। इस वर्ष परिषद् द्वारा रचनात्मक साहित्य-गोष्ठियों का भी आयोजन करने की योजना है जिससे रचनात्मक साहित्य लिखने वाले छात्रों को अपनी प्रतिभा के विकास का अवसर मिल सके।

विभागीय शोध-पत्रिका 'उपलब्धि' का इस वर्ष एक विशेषांक "इतिहास विशेषांक" शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है यह विशेषांक लगभग २५० पृष्ठों का होगा। यह दो भागों में प्रकाशित किया जायगा। प्रथम भाग की सामग्री एकत्र कर ली गई है। हिन्दी साहित्य के इतिहास के विद्यार्थियों की दृष्टि से यह विशेषांक बहुत उपयोगी और महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा। सब मिलाकर हिन्दी विभाग अपनी सीमाओं के भीतर अपने दायित्व के सफल निर्वाह के लिये प्रयत्नशील है।

अंग्रेजी विभाग

काशी विद्यापीठ की राष्ट्रीय शिक्षा योजना के अनुरूप, मानविकी की अन्यान्य शाखाओं में पठन-पाठन में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ज्ञान वर्धन द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन मे सार्थक तथा सक्रिय सहयोग प्रदान करने के निमित्त, अन्य विभागों के साथ अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन-अध्यापनार्थ अंग्रेजी विभाग की स्थापना हुई थी। अन्य विषयों के साथ अंग्रेजी का महत्व स्वीकार करते हुए उसकी पाठ्यक्रम में स्थान देना वस्तुतः इस भ्रान्त धारणा का प्रतिवाद है कि विद्यापीठ अंग्रेजी के प्रति विरोधी अथवा अनुदार दृष्टि-कोण रखता है। वस्तुतः अपने समारम्भ काल में ही अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य के पठन-पाठन को राष्ट्रीयता विरोधी गतिविधि न मानकर ज्ञान के राष्ट्रीय अनुष्ठान को अंतर्राष्ट्रीय भूमिका तथा स्तर प्रदान करने वाले उपयोगी माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया। इसी भावना से उत्प्रेरित होकर इस संस्था में अंग्रेजी विभाग के माध्यम से अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य के उचित शिक्षण की व्यवस्था की गई।

आरंभ में अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन को परस्पर पूरक मानकर दोनों की एक साथ ही शिक्षा देने का प्राविधान किया गया। पश्चात् अन्य विश्वविद्यालयों की शिक्षा-योजना के समरूप अंग्रेजी भाषा-ज्ञान और अंग्रेजी साहित्य के अध्ययन को पाठ्य-क्रम में पृथक्-पृथक् स्थान दिया गया। अंग्रेजी भाषा अनिवार्य विषय के रूप में तथा साहित्य ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ाई जाती रही। विगत दशक के पूर्वार्द्ध तक यही

व्यवस्था रही और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सम्मति एवं निर्देश के अनुसार यहाँ उच्चस्तरीय शिक्षा व्यवस्था लागू करने के क्रम में स्नातकोत्तर कक्षाएँ आरंभ हुई, अंग्रेजी विभाग के तत्वावधान में भी एम० ए० स्तर तक की कक्षाएँ चलाने एवं पी-एच० डी० की उपाधि हेतु शोध करने-कराने की सुविधा उपलब्ध हुई।

स्नातकोत्तर कक्षाओं के समारम्भ काल में अंग्रेजी चूंकि स्नातक स्तर तक अनिवार्य विषय के रूप में मान्य थी इसलिए छात्रों की संख्या स्वभावत: अधिक थी। केवल स्नातकोत्तर कक्षाओ मे विद्यार्थियों की संख्या शताधिक थी। अनेक प्रत्याशियों को प्रवेश न मिलने से निराश होना पड़ता था। किन्तु 'अंग्रेजी हटाओ' जैसे अंग्रेजी-भाषा विरोधी आंदोलन तथा तद्परिणाम स्वरूप विभिन्न विश्वविद्यालयो के साथ विद्यापीठ के पाठचक्रम मे प्रवेशेच्छुक छात्रो की संख्या पर प्रत्याशित ही प्रभाव पड़ा। छात्रों की संख्या में अनुमानित ह्रास हुआ। तथापि स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं में अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य की शिक्षा के क्षेत्र में विभागीय गतिविधियों में कोई कमी नही आई। उद्देश्य के अनुरूप आवश्यक उत्साह तथा रुचि बनी रही। सच पूछा जाय तो वर्तमान शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में अन्य विश्वविद्यालयों की शिक्षा नीति से अलग विद्यापीठ का अंग्रेजी विभाग, उच्च ज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय स्तर को बनाए रखने के साथ हिन्दी तथा अन्य भाषाओं के भाषा-साहित्य की श्री वृद्धि और समानान्तर ज्ञान की शाखाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले अन्यान्य विभाग को सहयोग प्रदान करने के स्तुत्य प्रयास में संलग्न रहा। अंग्रेजी विभाग के विद्वानों के द्वारा तत्संबंधी ग्रंथ प्रणयन तथा अनुसंधान की योजना बनाकर कार्यक्रम के अनुरूप सतत् प्रयत्नशील रहा और है।

अपने आरम्भ काल से लेकर अद्यावधि विद्यापीठ की गौरवशाली ज्ञान परम्परा के अनुरूप अंग्रेजी विभाग का क्रमिक विकास हुआ। उच्च स्तरीय स्नातकोत्तर शिक्षण व्यवस्था के पूर्व इस विभाग में कुछ ४ प्राध्यापक थे। १९६४ में इस संख्या में वृद्धि हुई और इस विभाग को ख्याति प्राप्त विद्वानों—डा० सी० एन० मेनन, डा० राम अवध द्विवेदी, प्रो० पी० एल० साहनी, जी० डी० शास्त्री का योगदान प्राप्त हुआ। कुल मिलाकर नौ प्राध्यापक विभाग मे थे। इन सभी के कुशल एवं बहुमूल्य योगदान से अंग्रेजी विभाग में एक गौरवशाली परम्परा की नींव पड़ी। पश्चात्, आगे चलकर कुछ प्राध्यापकों के सेवा निवृत्त होने तथा डा० राम अवध द्विवेदी के अकाल निधन से सम्प्रति केवल छ: प्राध्यापकों द्वारा यह अभावग्रस्त विभाग कार्यसंगठन और अध्ययन-अध्यापन के क्रम को पूर्ववत् प्रतिष्ठित रखने के प्रयास में संलग्न है।

विभागीय कार्यकलाप एवं उपलब्धियों की दृष्टि से विद्यापीठ के सारस्वत-अनुष्ठान में अंग्रेजी विभाग का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। स्नातकोत्तर शिक्षा-व्यवस्था के क्रम में शोधकार्य, संगोष्ठियों के संचालन एवं व्याख्यान मालाओं के आयोजन से लेकर एतद्संबंधी

अन्य कार्यक्रमों के संगठित करने के प्रयास तक विभागीय उत्तरदायित्व का क्षेत्र पर्याप्त व्यापक हो गया, इस प्रकार की गतिविधियों एवं तत्संबंधी उपलब्धियों का विवरण निम्नलिखित है :—

(क) सन् १९६६ में स्नातकोत्तर परीक्षोत्तीर्ण का प्रथम दल निकला तभी से अंग्रेजी विभाग में शोध उपाधि के लिए अनुसंधान कार्य की आवश्यकता का अनुभव किया जाने लगा। फलत: नियमानुसार प्राप्तांक योग्यता वरीयता की दृष्टि से शोध कर्त्ताओं का चयन हुआ और विभागीय शोधकार्य का शुभारंभ हुआ। अब तक पंजीकृत शोध छात्रो में से दो को पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त हो चुकी है और १८ छात्र कार्य लग्न हैं। इनमें अंग्रेजी साहित्य के विभिन्न आयामों और साहित्य रूपों—काव्य, उपन्यास, आलोचना, नाटक आदि संबंधित विषयों पर शोध-कार्य हो रहे हैं। शोध कार्य के लिये अनुबंधित छात्रों में से दो को विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्ति प्राप्त हो रही है अन्य कई राज्य एवं केन्द्रीय सरकार की विभिन्न छात्रवृत्तियाँ प्राप्त कर चुके हैं या कर रहे हैं।

(ख) स्नातकोत्तर कक्षाओं के समारंभ के साथ ही विभागीय पुस्तकालय की स्थापना हुई। अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य के विभिन्न विषयों से संबंधित दुर्लभ एवं बहु मूल्य पुस्तकों के साथ ही साथ इसमें निर्धन एवं असमर्थ छात्रों के हितों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न पाठ्य पुस्तकों का संकलन किया गया है। शोध छात्रों की आवश्यकताओं का समुचित ध्यान रखते हुए अप्राप्य एवं अधिक मूल्य की पुस्तकों तथा विभिन्न साहित्यिक एवं शोध पत्रिकाओं को उपलब्ध करने का प्रयास किया जा रहा है।

(ग) समय-समय पर विभिन्न राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वानों के सहयोग से विभाग के तत्वावधान में अब तक अनेक संगोष्ठियाँ एवं परिसंवाद आयोजित किये गये।

अंग्रेजी साहित्य के अतिरिक्त अमरीकी एवं रूसी साहित्य पर भी संगोष्ठियाँ आयोजित हुई। इस क्रम में व्याख्यानमालाओं का भी आयोजन हुआ। इन विभिन्न गोष्ठियों, परिसंवादों एवं व्याख्यान मालाओं में जिन ख्यातिप्राप्त एवं मूर्धन्य विद्वानों ने सहयोग दिया उनमें प्रमुख हैं :—

डा० वी० राय, प्रो० बी० एच० यू०। इलियट, टी० एस०। श्री पी० सी० गुप्त अध्यक्ष अंग्रेजी, इलाहाबाद पू० उपन्यास कला का अन्तरंग पक्ष। प्रो० सुन्दरम् प्रो० राजस्थान वि० वि० अठारहवीं शती का आलोचन। डा० ओ० ब्रायन, हि० वि० वि० आधुनिक साहित्य। डा० राबर्ट फार्न्स वर्थ

कला साहित्य पर औद्योगिक एवं यान्त्रिक प्रभाव। प्रो० एल्टन—आधुनिक आलोचना तथा काव्य। डा० यू० सी० नाग (बी० एच० यू०) भारतीय विद्वानों की अंग्रेजी साहित्य को देन। डा० मेनन (बी०एच०यू० तथा काशी विद्यापीठ) साहित्य एवं मनोविज्ञान। डा० द्विवेदी (का० वि० पी०) विभिन्न युगों में अंग्रेजी साहित्य। प्रो० साहनी (का० वि० पी०) विभिन्न युगों में अंग्रेजी साहित्य। प्रो० साहनी (का० वि० पी०) रोमान्टिक धारा की उपलब्धि। प्रो० पुचकोव (रूस) रूसी साहित्य की मान्यतायें। सुश्री एलेना सरगेवना रूसी साहित्य तथा अन्तर्राष्ट्रीय दायित्व। प्रो० चार्ल्स लेविस, अमेरिकी प्रोफेसर, हार्थन में गाथिक तथा रोमान्टिक का सामंजस्य।

(घ) अंतर्विश्वविद्यालीय स्तर पर आयोजित संगोष्ठियों, परिसंवादों, सम्मेलनों एवं व्याख्यानमालाओं में विभाग के प्राध्यापकों एवं छात्रों ने रुचि एवं सफलतापूर्वक भाग लिया। "अंग्रेजी शिक्षक सम्मेलन" जैसे अखिल भारतीय स्तर के सम्मेलन में प्रति वर्ष विभाग के विभिन्न प्राध्यापकों ने प्रतिनिधित्व किया एवं संस्था एवं विभाग की श्रीवृद्धि में समुचित योगदान दिया।

(च) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तत्वावधान में विभाग ने १९६७–६८ में एक मास की अंग्रेजी-भाषा शिक्षण संबंधी अधुनातन पद्धतियों एवं समस्याओं पर "ग्रीष्मकालीन इन्स्टीटचूट" का सफल आयोजन किया, जिसमें उत्तर प्रदेश तथा अन्य प्रदेश के विश्वविद्यालयों एवं विद्यालयों से अनेक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

(छ) अंतर्राष्ट्रीय महत्व की यूरोपीय भाषाओं की शिक्षण योजना व्यवस्था के अन्तर्गत सर्वप्रथम वैकल्पिक विषय के रूप में रूसी भाषा की शिक्षा का कार्य शास्त्री स्तर पर दो वर्षो से चल रहा है। अन्य भाषाओं की शिक्षा-व्यवस्था का प्रयास किया जा रहा है।

अन्य विषयों के उच्चस्तरीय अध्ययन का माध्यम हिन्दी होने के कारण अंग्रेजी में उपलब्ध मौलिक, महत्त्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक पुस्तकों का समुचित लाभ विद्यार्थी नही उठा पाते, इस समस्या को ध्यान में रखकर उत्सुक छात्रों को अंग्रेजी भाषा में दक्षता प्राप्त कराने की दृष्टि से एक 'सर्टिफिकेट कोर्स' की योजना बन चुकी है एवं आगत सत्र से उसको कार्यान्वित करने की योजना है।

विभाग की यह भी योजना है कि अन्यान्य यूरोपीय एवं विश्व भाषाओं में अध्ययन-अध्यापन के लिए अपेक्षित अवसर एवं सुविधाएँ प्राप्त हों। अपेक्षित संदर्भ ग्रन्थों का अभाव, आर्थिक कठिनाइयों के रहते हुए भी क्रमशः दूर होता रहा है। फिर भी बहुत कुछ करना शेष है। विभाग ने भारतीय एवं अंग्रेजी साहित्य की तुलनात्मक आलोचना के

क्षेत्र में सामंजस्य की दिशा में एक योजना तैयार की है जिसे शीघ्र ही चरितार्थ करने के लिए उत्सुक है।

संस्कृत विभाग

विद्यापीठ की स्थापना से ही संस्कृत का अध्यापन होता रहा है। बीच में कठिनाइयों के कारण अध्यापन अवरुद्ध हो गया था, जिसे पुनः १९६० में स्नातक कक्षाओं के स्तर पर प्रारम्भ किया गया। कई वर्षों तक केवल वैकल्पिक संस्कृत का अध्यापन चलता रहा। जब सामान्य अंग्रेजी को वैकल्पिक विषय के रूप में रखा गया, तब सामान्य संस्कृत तथा पालि के अध्यापन की व्यवस्था की गयी।

१९७० में स्नातकोत्तर कक्षाएँ प्रारम्भ हुई और शोध कार्य भी होने लगा।

अध्यापक

१—डा० अमरनाथ पाण्डेय, रीडर तथा अध्यक्ष

प्रकाशन :—

(१) वाणभट्ट का आदान-प्रदान (उत्तरप्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत)

(२) संस्कृत प्रथम पाठ (डा० जे० आर० बैलन्टाइन की पुस्तक 'संस्कृत फर्स्ट-लेसन्स' का अनुवाद)

(३) उपसर्गवर्ग (सम्पादित)

(४) सस्कृत-व्याकरण-ज्योत्स्ना

(५) वाणभट्ट का साहित्यिक अनुशीलन : डी० फिल० उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबन्ध (प्रेस में)

शोध पत्रिकाओं में अनेक शोध-लेख प्रकाशित हुए हैं।

आल इण्डिया ओरियन्टल कान्फ्रेन्स विश्व संस्कृत सम्मेलन आदि में भाग लिया ओर शोध-पत्र पढे।

२—श्री लीलाधर पन्त, व्याख्याता

प्रकाशन :—

कई संस्कृत कविताएँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

३—श्री भिक्षु पी० धर्मवंश, अंशकालिक व्याख्याता (पालि)

'बौद्धसम्मतचित्ततत्वम्" विषय पर विद्यावारिधि उपाधि के लिए शोध कार्य कर रहे हैं।

छात्रों की संख्या

(अ) एम० ए० प्रथम वर्ष—४१

(ब) एम० ए० द्वितीय वर्ष—३०

(स) शास्त्री प्रथम वर्ष (वैकल्पिक-संस्कृत)–३८
(द) शास्त्री प्रथम वर्ष (सामान्य-संस्कृत) –२००
शास्त्री द्वितीय वर्ष (वैकल्पिक संस्कृत) –१८
शास्त्री द्वितीय वर्ष (सा० संस्कृत) –१२९
शास्त्री प्रथम वर्ष (पालि) –२३
शास्त्री द्वितीय वर्ष (पालि) –९

शोध-छात्र

क्र०सं०	नाम	विषय	निर्देशक
१.	श्री बांकेलाल मिश्र	भट्टिकाव्य का व्याकरणात्मक अध्ययन।	डा० अमरनाथ पाण्डेय रीडर तथा अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, काशी विद्यापीठ।
२.	श्री लल्लन प्रसाद मिश्र	किरातार्जुनीय का आलोचनात्मक अध्ययन	,, ,,
३.	श्री गोपालकृष्ण मिश्र	हर्षवर्द्धन की कृतियों का समालोचनात्मक अध्ययन।	,, ,, ,,
४.	श्रीमती मंजु श्रीवास्तव	वक्रोक्तिजीवितम् का आलोचनात्मक अध्ययन।	,, ,, ,,
५.	श्री सकलनारायण सिह	संस्कृत वांगमय में कथा का उद्भव और विकास	,, ,, ,,
६.	श्री सूर्यवली शुक्ल	कालिदास की नाट्यकला	,, ,, ,,

विभाग की एक परिषद् है, जिसमें विद्वानो के भाषण, वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि का आयोजन होता है। इस वर्ष निम्नलिखित विद्वानों के भाषण हुए :—

	विषय
१–प्रो० भगवती प्रसाद पांथरी प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, इतिहास-विभाग तथा संकायाध्यक्ष-शास्त्र ज्ञान संकाय काशी विद्यापीठ, वाराणसी।	भारतीय संस्कृति

२—डा० सत्यव्रत शास्त्री
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष,
संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली।

संस्कृत-भाषा तथा
भारतीय संस्कृति।

दर्शन विभाग

दर्शन विषय का अध्यापन विद्यापीठ की स्थापना के समय से ही होता रहा है। बीच में कुछ काल के लिए विधिवत् अध्ययन स्थगित हो गया था, जिसका पुन. प्रारम्भ स्नातक कक्षाओं में १९६१ से और स्नातकोत्तर कक्षाओं में १९७० से हुआ है। अब विभाग में स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं का अध्यापन हो रहा है।

स्नातक कक्षाओं में छात्रों की संख्या (प्रथम वर्ष में ४० और द्वितीय वर्ष मे २५) ६५ है। स्नातकोत्तर कक्षाओं में छात्रों की संख्या (प्रथम वर्ष में ७ और द्वितीय वर्ष में २७ है) ३४ हैं।

विभाग में शोध कार्य कराने की भी व्यवस्था है। सम्प्रति विभाग में ५ छात्र शोध कार्य कर रहे हैं, जिनके गवेषणा के विषय निम्नलिखित हैं—

(क) वैष्णव दर्शन में मुक्ति विचार।
(ख) डा० भगवानदास का दर्शन।
(ग) "गीता एवं धम्मपद"।
(घ) दार्शनिक पृष्ठभूमि में दयानन्द की वैदिक व्याख्या तथा
(ङ) गौतमीय न्याय एवं बौद्ध-न्याय का तुलनात्मक अध्ययन।

इनके अतिरिक्त एक शोध छात्र जिन्हें विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से फेलोशिप प्राप्त हुआ है और पाश्चात्य ज्ञान मीमांसा पर कार्य कर रहे हैं।

इस समय विभाग में सभी स्तर के अध्यापक हैं। अभी थोड़े-ही दिन पूर्व काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से डा० रमाकान्त त्रिपाठी ने प्राध्यापक (प्रोफेसर) का कार्य भार ग्रहण किया है। विभाग में एक रीडर तथा दो लेक्चरर हैं। एक अन्य लेक्चरर की नियुक्ति शीघ्र ही होनेवाली है।

गत वर्ष विभाग के तत्वावधान में "डा० भगवानदास जन्म-शती" ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है। विभाग के एक अध्यापक को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के शोध-योजना के अन्तर्गत भारतीय ज्ञान मीमांसा पर कार्य करने के लिए ३५००) रुपये की धन-राशि की स्वीकृति हुई है।

विभाग में विभागीय परिषद् है जिसके तत्वावधान में इस वर्ष डा० एन० के० देवराज तथा डा० नित्यानन्द मिश्र के भाषण हुए हैं।

विभाग में विभागीय पुस्तकालय है जिसके लिए १५ हजार रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ है।

विभाग की ओर से "डा० भगवान दास तुलनात्मक धर्म अध्ययन संस्थान" की स्थापना के लिए प्रयास जारी है जिसके लिए प्रारूप विभिन्न प्राधिकारियों में वितरित किया गया है।

श्री भगवानदास स्वाध्यायपीठ

काशी विद्यापीठ ग्रंथागार (अब भगवानदास स्वाध्यायपीठ) का उद्‌गम भी काशी-विद्यापीठ के समान लोकोत्तरदानी, अदम्य देशभक्त और भारत-भारती-भारतीयता के परम पुजारी उसके पुण्यश्लोक संस्थापक राष्ट्ररत्न शिवप्रसाद गुप्त के श्रेष्ठ व्यक्तिगत पुस्तकालय से हुआ था। स्वाध्याय और पुस्तक संग्रह में गुप्त जी की इतनी उत्कट रुचि थी कि उन्होंने वयस्क होते ही समस्त लोकमान्य प्रकाशकों को स्थायी-आदेश दे रखा था कि अपने मानक प्रकाशनो की दो प्रतियाँ उनको भेज दिया करे। फलतः काशी विद्यापीठ की स्थापना के समय उनका व्यक्तिगत पुस्तकालय अपने अद्यावधि एवं श्रेप्ठ संचय के लिए भारत के बाहर भी सुज्ञात हो चुका था। ग्रन्थागार के बिना शिक्षा संस्थान हृदयविकल व्यक्ति के समान होता है अतः अपनी आधीपैत्रिक सम्पत्ति से स्वर्गीय अनुज के नाम पर 'हरप्रसाद शिक्षानिधि' की स्थापन करके जहाँ उन्होंने विद्यापीठ के पुप्ट कलेवर का प्रविधान किया था वही अपने विशाल व्यक्तिगत पुस्तकालय का समर्पण करके इसे स-हृदय भी बनाया था।

प्रारम्भ में इस ग्रन्थागार में लगभग इक्कीस हजार पुस्तकें थीं। किन्तु अपने आरम्भ से ही विद्यापीठ भारतीय-स्वातन्त्र्य-संग्राम का स्कन्धावार बन गया था। इस घटना-चक्र ने उसे राष्ट्र-भाषा के माध्यम से उच्च एवं राष्ट्रीय शिक्षण के अपने आदर्श की पूर्ति के साथ-साथ भारत की स्वतन्त्रता के दीवाने एवं ज्ञानपिपासु देशभक्तों और समाज सेवकों की बौद्धिक क्षुधा के शमन की समिधा को भी जुटाने के लिए बाध्य किया। इस प्रकार अनायास ही यह ग्रन्थागार दर्शन, समाज-विज्ञान, इतिहास और संस्कृति के संग्रहणीय ग्रंथों का स्पृहणीय संचय बनता गया। ब्रिटिश-साम्राज्य के दमन, पुस्तकापहरण, आदि भी इसकी विकास धारा को न रोक सके और स्वतंत्रता-प्राप्ति के समय इसकी ग्रंथ संख्या आरम्भ से दुगनी हो गयी थी।

'दीपक से दीप जले' न्याय के अनुसार संस्थापक जी के शास्त्र-दान-आदर्श से प्रेरित स्व० प्रोफेसर मलवेनी, श्रीप्रकाशजी, मा० सम्पूर्णानन्दजी और पं० कमलापतिजी तथा पं० राजारामशास्त्री के व्यक्तिगत संग्रहों की भेंट ने भी इस ग्रंथागार के कलेवर को पर्याप्त विकसित किया है। और इस वर्ष के अन्त में ग्रन्थ संख्या ८४८७२ थी। यह ग्रंथागार उत्तर भारत का एक मात्र प्रथम श्रेणी का विशाल ग्रंथागार है जो अपने संस्थापक की इच्छानुसार आज भी अपने समस्त सदस्यों की त्वरित एवं निःशुल्क सेवा करता है। तथा विद्यापीठ-परिवार (कर्मचारी, कार्यकर्ता, छात्र, अध्यापक, अधिकारी, प्रबन्धक

एवं निरीक्षक) के अतिरिक्त विविध देशी-विदेशी स्वाध्यायप्रेमियों की सेवा करता हुआ एक विश्वविद्यालयीय एवं सार्वजनिक ग्रन्थागार के दायित्वों का निर्वाह कर रहा है।

ग्रन्थ संचय के समान इसके वर्तमान विशाल भवन के मूल कल्पनाकार भी संस्थापकजी ही थे। भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम के सेनानियों और महारथियों के वाराणसेय-अतिथिगृह सेवाउपवन से यह ग्रन्थागार प्रारम्भ में विद्यापीठ भवन के एक बाग में लाया गया था। किन्तु बढ़ती ग्रन्थ संख्यादि के कारण वह छोटा पड़ने लगा। तथा सत्याग्रह युग में विद्यापीठ जाने का 'सरकारी मतलब' होता था ब्रिटिश-विद्रोह। फलतः शुद्ध विद्या व्यसनी वहाँ आते सकुचाते थे। यह तथ्य मा० संस्थापक जी से छिपा न रहा। ओर उन्होंने मातृ भूमि (भारत माता)-मन्दिर के वाम पार्श्व एक विशाल ग्रन्थागार की योजना बनायी और इसके स्वाध्यायकक्ष का निर्माण होते ही ग्रन्थागार को उसमें स्थानान्तरित करा दिया था। देश और विद्यापीठ के दुर्भाग्य से उनका देहान्त हो जाने पर विशाल भवन-योजना तब तक अधूरी ही पड़ी रही जब तक तृतीय कुलाधिपति आ० सम्पूर्णानन्दजी ने स्व० रफी अहमद किदवई के सहयोग से इसे पूर्ण करने का प्रयत्न नहीं किया। रफी साहब की इच्छा थी कि 'शिवप्रसादजी के द्वारा आख्य भवन को ही पूर्ण किया जाय।' इसके लिए उन्होंने सबको रजामन्द भी कर लिया था, किन्तु देश और विद्यापीठ के दुर्भाग्य से स्वतंत्र भारत का यह एक मात्र सफल शासक भी चल बसा। तब आ० सम्पूर्णानन्दजी ने विद्यापीठ प्रांगण के विकासार्थ अवाप्त भूमि के मध्य में वर्तमान भवन की योजना बनवायी तथा रफी साहब के प्रयत्न से भारत सरकार द्वारा स्वीकृत अनुदान को बढ़वाया। इस भवन का निर्माण समाप्त-प्राय है, केवल इसको विविध ग्रन्थों और उपकरणों से सज्जित करना मात्र शेष है क्योंकि यह दुतला भवन अपने चार तले ग्रन्थ-भण्डार में अनायास ही दो-तीन लाख ग्रन्थों को स्थान दे सकता है। स्वाध्याय कक्ष में आसानी से पाँच सौ पाठक बैठकर शोध, स्वाध्याय, पत्रिकानुशीलन, आदि कर सकते हैं और गोष्ठी कक्ष विविध बौद्धिक आयोजनों के लिए पर्याप्त है। इतना ही नहीं यह भवन विशेष अध्येताओं के लिए कतिपय पृथक् लघुकक्षों की भी व्यवस्था कर सकता है।

अपने विशाल कलेवर और बढ़ते हुए शिक्षा क्षेत्र के अनुरूप कर्मी (स्टाफ), सज्जोपकरण तथा पठन-सामग्री के अभाव में भी स्वाध्यायपीठ ने व्यवस्थित, त्वरित एवं निःशुल्क सेवा की प्राचीन परम्परा का निर्वाह किया है जैसा कि निम्नलिखित कतिपय तथ्यों से परिलक्षित होगा——

विभाग——

सेवानुसार——संदर्भ	दातानुसार	——	अनुसूया विभाग
पाठ्यपुस्तक		——	मालवेनी विभाग
साधारण		——	सावित्री आनन्द विभाग

पत्रिका	—	कैलाशपति विभाग
पाण्डुलिपि	—	सिद्धेश्वरी विभाग

सेवा प्रकार—साधारण आवर्तन — अन्तर ग्रन्थागार आवर्तन
पाठ्य पुस्तक सेवा — ग्रन्थागार विद्या प्रशिक्षण
दिग्दर्शन एवं उद्धरण — परिच्चर्चा-गोष्ठी आयोजन
शोध सहायता — राष्ट्रसंघीय शिक्षा-संस्कृति-संस्थान केन्द्र
पुस्तक प्रदर्शिनी — भारतीय भाषा सह्-अस्तित्व
स्वाध्यायकक्ष-वाचनालय सेवा — विद्यालयीय समारोह-परीक्षा-शिक्षण।

आवर्तन—संवत् २०२७ में स्वाध्यायपीठ ने ७२ घंटा प्रति सप्ताह के अनुपात से २६७ दिन अपने सदस्यों और पाठकों की सेवा की है। इन कार्य दिवसों में १२ दिन वार्षिक भण्डार निरीक्षण के कारण पुस्तक-प्रदान बंद रहा। पाठ्य पुस्तकों की कमी तथा उपकरणों का अभाव भी छात्र सदस्यों को निरुत्साहित करता रहा है, तथापि इस वर्ष में २०५५४ पुस्तकों का प्रदान और १४२४७ पुस्तकों को स्वाध्याय कक्ष में बैठ कर पढ़ा गया। उपरिलिखित प्रदानहीन दिवसों को कार्य दिवसों में से घटा देने पर इस वर्ष में प्रतिदिन प्रदत्त और पठित पुस्तकों का दैनिक अनुपात क्रमशः ८०.५ और ५५.७ आता है। गत वर्ष में ये अनुपातिक अंक क्रमशः ६९ और ५५.२ थे।

विषयानुसार प्रदान—

आवर्तित पुस्तकों का मुख्य विषयानुसार आकलन करने पर पाठकों की रुचि के द्योतक निम्नलिखित आँकड़े परिलक्षित होते हैं—

संदर्भ	–	८६७	अर्थशास्त्र		२९१६
मनोविज्ञान	–	४८२	शिक्षाशास्त्र	–	३५
दर्शन	–	४८९	साहित्य राष्ट्रभाषा	–	६०१५
धर्म	–	३०९	,, अंग्रेजी	–	१०५२
समाजसेवा शास्त्र	–	४५७४	भूगोल	–	७८
राजशास्त्र	–	१२६५	जीवनी	–	१५०
विविध	–	१५४३	इतिहास	–	७७९

विभागीय पुस्तकालयों की प्रगति में न्यूनतम साधनों और सुविधाओं का अभाव ही बाधक हो रहा है। इस वर्ष भी समाजविज्ञान विभागीय पुस्तकालय की प्राचीन एवं जीर्ण पुस्तकों के स्थान पर न नूतन प्रतियाँ ही खरीदी जा सकी हैं और न आवश्यक नूतन पुस्तकों और पत्रिकाओं के लिए ही कोई व्यवस्था की जा सकी है। अन्य विभागीय पुस्तकालयों के लिए भी स्थान, काष्ठोपकरण, आवर्तन-सहायक, पुस्तक सेवक, आदि की कोई व्यवस्था नहीं हो सकी हैं।

ग्रन्थोपचय——

विद्यापीठ में आरब्ध नूतन स्नातकोत्तर विषयों की कक्षाओं तथा शोध-छात्रों के अनुरूप पाठ्य-सन्दर्भ ग्रन्थ तथा पत्रिकाएँ बढ़ाना यद्यपि संभव नहीं हुआ है तथापि इस वर्ष हमारे संचय में ४८२५ ग्रंथ बढे हैं। इनमें से ३०७ ग्रंथ सर्व श्री शिक्षा मंत्रालय-विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, सूचना-प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, लोकपति-कमलापति त्रिपाठी, सोवियत दूतावास, अमेरिकन कलचरल सेण्टर, काशी विद्यापीठ प्रकाशन विभाग, यूनेस्को, नेशनल बुक ट्रस्ट, उत्तर प्रदेश शासन, गंगादासजी अयोध्या, आदि ३२ दाताओं से प्राप्त हुए हैं। तथा गत वर्ष तक प्राप्त विभागों से प्राप्त सूचियों और ग्रंथागार द्वारा प्रस्तुत पाठ्य तथा मानक अभिधान ग्रंथों की दस हजार क्रेय पुस्तकों में केवल ४५१८ ही स्वाध्यायपीठ खरीद सका है। शिक्षण और शोध-कार्य के विस्तार के कारण विविध विभागों से आगत अनिवार्य और आवश्यक ग्रंथों की सूचियों को देखते हुए यह अनिवार्य हो गया है कि शिक्षामंत्रालय और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से पुस्तक क्रय तथा पत्रिकाओं के प्राचीन भागों और अंकों की प्रतियाँ खरीदने के लिए अनावर्तक अनुदान प्राप्त किया जाय।

सदस्यता——

पूरे वर्ष में ४८५ नये छात्रों ने सदस्यता की सुविधा को अंगीकार किया तथा ४९० स्नातकों ने सदस्यता समाप्त की, इस प्रकार 'ख' (छात्र) श्रेणी की सदस्य संख्या ९४० हुई। छात्र सदस्यों की रुचि का केन्द्र पाठ्य पुस्तकें ही होती हैं। अपनी कठिनाइयों के कारण स्वाध्यायपीठ उन्हें द्रुत गति से नही बढा पा रहा है। पुण्यश्लोक संस्थापक जी की इच्छानुसार यह विश्वविद्यालयीय ग्रन्थागार, सार्वजनिक ग्रंथागार के दायित्व का निर्वाह कर रहा है। फलत: इस वर्ष भी ९ विद्या व्यासंगियों ने सदस्यता ग्रहण की और १० सज्जनो ने सदस्यता समाप्त की है। वर्ष के अन्त में समस्त प्रकार के सदस्यों की संख्या २४४८ रही है।

वाचनालय——

स्वाध्यायपीठ के वाचनालय के दो अंग हैं। एक में केवल साधारण दैनिक और साप्ताहिकादि ही रहते हैं। यह इसलिए अनिवार्य है कि विद्यापीठ में अब तक किसी सार्व-कक्ष (कामनरूम) का निर्माण नहीं हो सका है अतएव खाली घंटों में छात्र इधर-उधर भटकने के लिए विवश होते हैं। इसका निराकरण तथा व्यक्तिगत रूप से समाचार पत्रों के क्रय में असमर्थ अथवा अनाकृष्ट छात्रों के लिए वर्तमान युग की इस भिज्ञता को जुटाना यह साधारण-वाचनालय करता है। द्वितीय अंग में समस्त गंभीर बौद्धिक पत्रिकाओं का संचय है। अपने, अपने विषय के नूतन तथा सूक्ष्म ज्ञान के इच्छुक अध्यापक, छात्र तथा अन्य सरस्वती-साधक इसका उपयोग करते हैं। इस वर्ष हमारे कुलपति जी के विशेष प्रयत्न

के कारण हम गत वर्षों में बन्द लगभग एक सौ पत्रिकाओं को पुनः चालू करा सकने में समर्थ हुए हैं। इस वर्ष में आगत पत्र-पत्रिकाओं की संक्षिप्त तालिका निम्नलिखित है।

दैनिक	हिन्दी	आज, नवभारत टाइम्स
	उर्दू	कौमी आवाज
	अंग्रेजी	इकोनोमिक टाइम्स, हिन्दुस्तान टाइम्स, नेशनल हेराल्ड, नार्दर्न इण्डिया पत्रिका, पैट्रियाट, स्टैटस्मैन
साप्ताहिक	हिन्दी	आर्थिक जगत्, जैन गजट, जैन संदेश, दिनमान, धर्मयुग, नया भारत, ब्लिटज्, राष्ट्रसेवक, स्वयंभू, साप्ताहिक हिन्दुस्तान।
	अंग्रेजी	ब्लिट्ज, मैंचेस्टर गार्जियन, इलस्ट्रेटेड वीकली, इण्टरनेशनल फाइनैंसियल न्यूज सर्वे, न्यूज फ्राम इण्डोनेशिया, कैपिटल, कॉमर्स, इस्टर्न इकोनोमिस्ट, इण्डियन ट्रेड जर्नल, दी टाइम्स लिटरेरी सप्लीमैण्ट।
पाक्षिक	हिन्दी	जर्मन समाचार, मंगल प्रभात, वीर, सरिता, समाजवादी जर्मनी, सर्वेश्वरी-टाइम्स, सोवियत भूमि।
	अंग्रेजी	अल्फा, अमेरिकन रिपोर्टर, भवन्स जर्नल, सी० एस० आई० आर० न्यूज, फिल्मफेयर, कुरुक्षेत्र, दी मैसूर यूनिवर्सिटी गजट, न्यूज फ्राम इजरायल, सोवियतलैण्ड, स्टूडैण्ट्स वोकेशनल गाइड, यूनेस्को फीचर्स, योजना, दी स्टेटस्।
मासिक	हिन्दी	अल-अरब, आत्मधर्म, आरोग्य, कविताश्री, गीताधर्म, जन-स्वास्थ्य, जैन संस्कृति, धर्मदूत, नया साहित्य, नवनीत, नागरी पत्रिका, पूर्वोत्तर रेलवे सामयिकी, प्रकाशन समाचार, फ्रान्सीसी समाचार, भारतोदय, महिला प्रगति के पथ पर, मुक्ता, यन्त्रयुग, राष्ट्रवाणी, सनातन शास्त्रम् (संस्कृत), सन्मतिवाणी, सारिका, सूर्योदय, स्वास्थ्य और जीवन।
	अंग्रेजी	अल-अरब, अमेरिकन लैबर, एशिया बुलेटिन, एशियन सर्वे, बंगलोर यूनिवर्सिटी न्यूज बुलेटिन, टाटा इन्स्टीच्यूट बिब्लियोग्रोफिकल सैण्टर, दी बैंकर, कमैण्टरी, कैरण्ट हिष्ट्री, डेजर्टेशन ऐब्सट्रक्टस इण्टरनेशनल, एजूकेशनल रिपोर्टर, इण्टरप्राइज एंड वेलफेयर, हैराल्ड ओफ हैल्थ, आई० सी० एस० एस० आर० न्यूज लैटर्स, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय न्यूज, इण्डियन मैनेजमैण्ट, कर्नाटक यूनिवर्सिटी बुलेटिन, लेबर बुलेटिन, माडर्न रिव्यू, न्यूज बुलेटिन मराठवाड़ा यूनिवर्सिटी, एन० आई० ई० न्यूजलैटर, नेशनल ज्योग्राफी, न्यूज

फ्रोम फ्रांस, न्यूज फ्राम नाइजिरिया, न्यूज लैटर (इस्टर्न रेलवे), नोर्थ इस्टर्न रेलवे न्यूज लैटरस, पंचायतीराज, पीपुलस् ऐक्शन, साइकोलोजीकल ऐब्सट्रैक्टस्, रीडर्स डाइजैस्ट, साहित्य एकाडेमी, से चबा, सैमिनार, स्पैन, श्री वेंकटेश्वर यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, श्री वेंकट यूनिवर्सिटी न्यूज, यू० वी० एस० पी० डी० (यूनिवर्सल बुक स्टाल पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स) यूनैस्को क्रोनिकल, यूनेस्को न्यूजलैटर्स, दी वर्ल्ड टु-डे, वीमैन ओन दी मार्च, यात्री।

द्वैमासिक	अंग्रेजी	अफ्रीका डाइजैस्ट, अमेरिकन जर्नल ओफ सोशियोलोजी, अमेरिकन सोशियोलोजीकल रिव्यू, ऐनल्स, हारवर्ड बिजीनैस रिव्यू, ह्यूमन रिलेशन, जर्नल ओफ एबनोर्मल साइकोलोजी, जर्नल ओफ पोलीटिकल इकोनोमी, जर्नल ओफ सोशल साइकोलोजी, जैना रिव्यू, सोशियोलोजीकल एब्सट्रैक्ट्स, यूथ ऐवान।
त्रैमासिक	हिन्दी	कस्तूरबादर्शन, विश्वभारती पत्रिका, संविद (संस्कृत),
	अंग्रेजी	अमेरिकन जर्नल ओफ साइकोलोजी, अमेरिकन लिटरेचर, अमेरिकन रिव्यू, ब्रिटिश जर्नल ओफ सोशियोलोजी, बुलेटिन, बुलेटिन (आइ० एल० ए०), कम्परेटिव लिटरेचर, क्रिटिसिज्म, इकोनोमिक डैवलपमेण्ट एण्ड कलचरल चैञ्ज इकोनोमिक जर्नल, डैवलपमैण्ट डाइजैस्ट, इकोनोमिका, दी एजूकेशन क्वार्टरली, इंगलिश, ऐसेज् इन क्रिटिसिज्म, फौरेन अफेयर्स, फोरेन ट्रेड रिव्यू, इण्डियन इकोनोमिक जर्नल, इण्डियन जर्नल ओफ एग्रीकल्चरल इकोनोमिक्स, इण्डियन जर्नल ओफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, इण्डियन जर्नल ओफ साइकोलोजी, इण्डियन जर्नल ओफ सोशल रिसर्च, इण्डिया क्वार्टरली, आई० सी० सी० आर० (इण्डियन कांउसिल फोर कलचरल रिलेशन), इण्डस्ट्रियल एण्ड लेबर रिलेशन रिव्यू, इण्टरनेशनल अफेयर्स, इण्टरनेशनल ओर्गनाइजेशन, दी जर्नल ओफ ऐस्थेटिकस् एण्ड आर्ट क्रिटिसिज्म, जर्नल ओफ कोनफ्लिक्ट रिजोल्यूशन, जर्नल ओफ क्रिमिनल ला, जर्नल ओफ इकोनिमिक हिस्ट्री, जर्नल ओफ इंगलिश एण्ड जर्मनिक फिलोलोजी (जीप), जर्नल ओफ पर्सनैलिटी, जर्नल ओफ सोशल ईशूज, जर्नल ओफ दी आल इण्डिया सेण्ट्रल लैण्ड

डैवलपमैण्ट बैंकस् को-आपरेटिव यूनियन, कैकलोस, माडर्न लैंगवेज क्वार्टरली, पार्लमैण्टरी अफेयरस्, फिलोलोजिकल क्वार्टरली, पोलीटिकल क्वार्टरली, पोलीटिकल साइंस क्वार्टरली, दी क्वार्टरली जर्नल ओफ इकोनोमिक्स, रिव्यू ओफ इकोनोमिक स्टडीज्, रिव्यू ओफ इकोनोमिकस् एण्ड स्टेटिस्टिकस्, रूरल सोशियोलोजी, संख्या, साइंस सोसाइटी, दी सेवाना रिव्यू, शेक्सपियर क्वार्टरली, सोशल फोर्सेज्, सोशल रिसर्च, सोशलिस्ट थौट् एण्ड प्रैक्टिस, सोशियोलोजीकल क्वार्टरली, सोशियोलोजीकल रिव्यू, सोशियोलोजी एण्ड सोशल रिसर्च, सोशियोमेट्री, सर्वे, योग मीमांसा, दी वर्ल्ड इन दी क्लास रूम।

चतुर्मासिक	अंग्रेजी	इकोनोमिक हिस्ट्री रिव्यू, दी इकोनोमिक रिकर्ड, इण्टरनेशनल इकोनोमिक रिव्यू, इण्टरनेशनल जर्नल ओफ कम्पेरिटिव सोशियोलोजी, ओक्सफोर्ड इकोनोमिक पेपर्स, पैसिफिक सोशियोलोजीकल रिव्यू।
षट्मासिक	हिन्दी	प्रज्ञा।
	अंग्रेजी	ड्यूकेंस रिव्यू, रिकार्ड एण्ड स्टैटिस्टिकस् सोशियोलोजीकल बुलेटिन, विश्वेश्वरानन्द इण्डोलोजीकल जर्नल।
वार्षिक	अंग्रेजी	एनुअल रिव्यू ओफ साइकोलोजी।
व्यतिक्रमित	अंग्रेजी	एकेडमी ओफ पोलीटिकल साइंस, अमेरिकन इकोनोमिक रिव्यू, पामला (पब्लिकेशन ओफ माडर्न लैंगवेज एसोसिएशन ओफ अमेरिका), स्टडीज् इन फिलोलोजी।

इनमें वे पत्र-पत्रिकाएँ भी सम्मिलित हैं जो स्वाध्यायपीठ को भारत सरकार, विश्वविद्यालय-अनुदान-आयोग, उत्तर प्रदेश सरकार, अखिल भारतीय कांग्रेस, सोवियत संघ-ग्रेट ब्रिटेन-जर्मनी-फ्रांस-इजरायल-इण्डोनेशिया-संयुक्तराज्य अमेरिका के दूतावास, राष्ट्रसंघीय शिक्षा-संस्कृति संघटन और भारतीय दिगम्बर जैनसंघ, आदि से भेंट स्वरूप प्राप्त होती हैं।

वाचनालय कक्ष और स्वाध्यायकक्ष में आसन-सुविधा का अभाव एक ओर वाचक, पाठक और स्वाध्यायियों के मार्ग में बाधा उपस्थित करता है और दूसरी ओर वाचकों को खड़े देख कर तथा पत्रिका-स्वाध्यायकक्ष में बहुत थोड़ी मेजों कुर्सियों का सद्भाव आगन्तुकों को अन्यथा-भाव भी कराता है। तथापि इस वर्ष १७३८१ सज्जनों ने वाचनालय से लाभ उठाया है।

आय-व्यय

शिक्षण के क्षेत्र के विस्तार के कारण स्वाध्यायपीठ की पाठ्य-सामग्री की आवश्यकता को अध्यापक सदस्यों का भी समर्थन मिला है। और इस वर्ष स्वाध्यायपीठ ५३६९८)७२ के मूल्य की पुस्तकें तथा ९९३१)४८ की पत्रिकाएँ मंगा सका है। ११९१)६३ जिल्द-बंदी-लेखन सामग्री पर और २१३०)२० संस्कार-सामग्री तथा छपाई पर खर्च किया जा सका है।

आय का मुख्य स्रोत भारत सरकार और विश्वविद्यालय-अनुदान-आयोग के अनुदान ही हैं क्योंकि संस्थापना के समय से ही विद्यापीठ की मुख्य दाता 'हरप्रसाद शिक्षा-निधि' से प्राप्त होनेवाली दान की राशि को शिक्षाशुल्कादि के समान विद्यापीठ की आय मान लिया गया है। और अनुमानित व्यय में से इसे घटाकर ही संरक्षका अनुदान दिया जाता है। इस वर्ष शिक्षा मंत्रालय के अनुदान के अलावा ६५०००)०० के अनुदान की विश्व-विद्यालय-अनुदान-आयोग से स्वाध्यायपीठ के लिए स्वीकृतियाँ मिलीं। इसके अतिरिक्त १११)८५ की स्फुट आय भी हुई।

कर्मी

विश्वविद्यालय-अनुदान-ओयोग द्वारा नियुक्त रंगनाथन-लायब्रेरी-कमेटी की स्वीकृत संस्तुतियों के अनुसार स्वाध्यायपीठ-सेवा में कर्मी का जो न्यूनतम परिमाण होना चाहिए उससे भी कम कर्मी स्वाध्याय पीठ में था। विगत वर्षो में वह और भी विद्यापीठ की छात्र संख्यादि के आधार पर शिक्षा मंत्रालय ने विद्यापीठ के कर्मी का परि-माण तय किया है। और स्वाध्यायपीठ की पृथक् माँग न होने के कारण अन्तरंग आवंटन में ऐसा हुआ है। यदि अलग से स्वाध्यायपीठ-सेवा के कर्मी को दिखाया गया होता तो एक उपग्रंथागारिक अवश्य मिल गया होता और स्वाध्यायस्थविर को नियमित रूप से दोनों पालियों में रह कर, एक प्रकार से अपना पूरा दिन न लगाना पड़ता। सहायक-ग्रंथागारिक भी ५ होते और एक समाजविज्ञान विभागीय पुस्तकालय में रहने पर भी स्वाध्यायपीठ में वर्तमान २ की बजाय ४ होते। तब आसानी से पाठ्य-पुस्तक विभाग और पत्रिका विभाग का पूर्ण सदुपयोग ही न होता अपितु इस समय होनेवाला पाठ्य-पुस्तक-खण्डन भी रुक जाता। पुस्तक-सेवक और पुस्तक-मार्जक-क्रमशः ३ और १ है जबकि कम-से-कम ये ८ और ४ होने चाहिये। दफ्तरी और पुस्तक-प्रेक्षक १ और २ है जबकि ये कम-से-कम २ और ४ होने चाहिये। कर्णिक-टंकक २ थे किन्तु अब एक स्थानान्तरित है और दूसरे की पदोन्नति हो गयी है फलतः दूसरों से यह कार्य लेने से उनके मुख्य-कार्य सूचीकरणादि की हानि होती है। लेखा-कर्णिक न होने से वित्त विभाग और स्वाध्यायपीठ दोनों को परे-शानी ही हाथ लगती है। तथा भुगतान में विलम्ब होने से अख्याति के साथ, साथ स्वाध्याय-स्थविर को अपने पास से भुगतान करने का दोषी भी बनना पड़ता है। बीज-लिपिक

(स्टैनो) के अभाव के कारण उद्धरण-सेवा (डोकूमैण्टेशन) की सोचना भी कठिन हो रहा है। अतएव ग्रंथागार और विज्ञान-संस्थानों के विषय में परम उदार शिक्षामंत्रालय तथा विवि० अनु० आ० के सामने स्वाध्यायपीठ-कर्मी तथा अनुदान की माँग पृथक से रखने पर ही वर्तमान विशाल भवन का पूर्ण सदुपयोग संभव हो सकता है। तथा विद्यापीठ के आरम्भ से ही राष्ट्रभाषा तथा राष्ट्रीयता की भावना से किये गये वर्गीकरण के वे संशोधन जो अब तक मन्थरगति से चल रहे हैं उन्हें पूर्ण प्रगति देकर ग्रन्थागार-विद्या का भारतीकरण करके पश्चिम और अंग्रेजी की प्रभुता सहज ही इस क्षेत्र में घटायी जा सकती है।

करणीय

हर्ष का विषय है कि विश्वविद्यालय-अनुदान-आयोग और शिक्षा-मंत्रालय से ग्रंथागार निर्माण के लिए प्राप्त अनुदानों तथा उत्तर प्रदेश शासन के लोक-निर्माण-विभाग की उदारता तथा सहयोग से स्वाध्यायपीठ के मुख्य भवन का निर्माण समाप्तप्राय है। और आशा है कि उ० प्र० लोक नि० वि० शीघ्र ही इसके शेष निर्माण को पूर्ण करके इसे विद्यापीठ को हस्तान्तरित कर देगा। अतएव अब इसके अनुरूप ग्रन्थ-संचय, काष्ठोपकरण तथा उन स्वाध्याय-साधनों और सुविधाओं का जुटाना अनिवार्य हो गया है जिनके लिए विगत तीन वर्षों के विवरणों में लगातार निवेदन किया गया है।

शिक्षा मंत्रालय तथा विवि० अनु० आ० ग्रंथागार-सेवा को शिक्षण -सेवा के समकक्ष मानकर अन्य विश्वविद्यालयों में ग्रन्थागारीय-कर्मी को भी शिक्षक-कर्मी के समान ही पुरस्कारादि सुविधाएँ दे रहे हैं। संयोग से ये सुविधाएँ जब तक स्वाध्यायपीठ को नहीं मिल सकी है। फलतः हमारे अनेक कार्यकर्ता अन्यत्र चले गये हैं अतएव इस बहिर्गमन को रोकने के लिए इसे ये सुविधाएँ सुलभ कराना धर्म हो गया है, क्योंकि यह विभाग पूरे शिक्षा संस्थान की प्रतिदिन पूरे कार्यालय-घंटों में सेवा करने के कारण यदि शिक्षण-कर्मी से अधिक सेवा नही करता है तो कम भी, निश्चित नही ही करता है।

आभार

स्वाध्यायपीठ अपने समस्त वाचक, पाठक, सदस्य, दाता एवं वर्तमान विद्यापीठ परम्परा की ओर आंशिक रूप से आकृष्ट अपने कर्मी का आभारी है जिनके सहज उपलब्ध सहयोग के आधार पर वह अपनी प्राचीन सेवा परम्परा का निर्वाह करने के लिए सर्वथा प्रयत्नशील है।

समाज विज्ञान विभागीय पुस्तकालय

विभागीय पुस्तकालय की स्थापना १ अक्तूबर १९५८ को हुई थी। उस समय टी० सी० एम०, यू० एस० ए० इंडिया प्रोजेक्ट ने काशी विद्यापीठ समाज सेवा संस्थान में अपने लीडर आफ दी टीम कु० नेली हार्टमैन को भेजा था। यहाँ स्नातकोत्तर पढ़ाई के लिए

और खासकर प्रोफेशनल कोर्स में पुस्तक न होने से पढ़ाई किस प्रकार सुचारु रूप से हो इसकी व्यवस्था के लिए काउन्सिल आफ सोशल वर्क एजूकेशन से एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक ग्रान्ट उपलब्ध कराई गई। इसके बाद अमरीका से पुस्तकें आ गईं और पुस्तकालय का कार्य विधिवत चलने लगा। सन् १९६० में अमरीकन एम्बैसी की ओर से काशी विद्यापीठ के चांसलर स्व० डा० सम्पूर्णानन्द को विधिवत पुस्तकों की भेंट इस विभाग के लिए दे दी गई। सन् १९५८ से १९७०–७१ तक का एक चार्ट प्रस्तुत है जिससे इस पुस्तकालय की उपयोगिता स्वयं सिद्ध हो जाती है :

वर्ष	प्रदत्त पुस्तकें	वाचनालय पाठक
१९५८–५९	१११०	१६१७
५९–६०	३६४४	३६८२
६०–६१	४५८८	२९४८
६१–६२	४४१५	३०६९
६२–६३	६८८१	४०७०
६३–६४	५०५०	५०५६
६४–६५	५४५१	१५८८
६५–६६	६५७५	१७६६
६६–६७	६६३२	१२५६
६७–६८	६६०६	१७२२
६८–६९	६८०८	१८४५
६९–७०	५४४८	१८६३
७०–७१	५१११	१९८२

इस समय कुल पुस्तकों की संख्या ४८८४ है। इस पुस्तकालय में १० पत्रिकायें भी आती है। इस पुस्तक संख्या में डा० रंगनाथ शर्मा की स्मृति में समाज शास्त्र परिषद् की ओर से चलाई जानेवाली पुस्तकों की संख्या शामिल है।

इस पुस्तकालय में लगभग ४० से ५० विद्यार्थी औसतन रोज पुस्तके लेते हैं और १५ से २० तक पुस्तकालय में बैठकर पढ़ते हैं।

पुस्तकालय की ओर से इम्पलायमेण्ट इन्फार्मेशन का कार्य भी होता है और इसकी सूचना विद्यार्थियों को सदैव दी जाती है और सूचना पट्ट पर लगा दी जाती है।

रिसर्च के लिए पिछले १२ वर्षों से न्यूज क्लिपिंग सेक्शन का कार्य सुचारु रूप से किया जाता है और राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय दृष्टिकोण से यहाँ महत्त्वपूर्ण समाचारों का संकलन किया जाता है।

इस पुस्तकालय के अध्यक्ष श्री तपेश वैद्य जिस लगन के साथ इसे चलाते हैं उसके कारण यह पुस्तकालय विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है।

छात्र संघ

श्री काशी विद्यापीठ भारत का पहला विश्वविद्यालय है जहाँ विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ-साथ छात्र एकता का गठन भी रहा है। यहाँ का छात्र सगठन सबसे प्राचीन एवं सुदृढ़ रहा है और आज भी है। यहाँ की एक विशेषता यह भी रही है कि छात्रों और अध्यापकों में एक सामंजस्य स्थापित रहा है। विगत कुछ वर्षों में कुछेक ऐसी घटनाएँ घटी जिनसे छात्र संगठन पर कुछ आघात पड़ा किन्तु उन आघातों को सहते हुए भी छात्र संगठन अपनी प्रगति पर निरन्तर गतिमान रहा।

छात्र सघ के गठन को कई भागों द्वारा जोड़ा गया है। प्रथम तो सम्पूर्ण विद्यापीठ के छात्रसंघ का गठन, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, प्रधानमंत्री, उपप्रधान मंत्री, शिक्षा मंत्री, समाज-सेवा मंत्री, सांस्कृतिक मंत्री, एवं विभिन्न कक्षाओं के कक्षा प्रतिनिधियों द्वारा, दूसरे, विभिन्न विभाग के परिषदों द्वारा जैसे समाजशास्त्र परिषद्, हिन्दी परिषद्, राजशास्त्र परिषद् आदि है। ये सब भी छात्र संगठन के ही अंग है। इसका चुनाव समस्त विश्वविद्यालय के छात्रों के मतदान द्वारा होता है। चुनाव में छात्रों के विभिन्न दलीय सगठन भाग लेते है।

इस वर्ष छात्रसंघ का चुनाव विद्यापीठ के बाद में खुलने के कारण देर से हुआ।

पदाधिकारी एवं सदस्य

संरक्षक–	श्री रघुकुल तिलक, कुलपति
अध्यक्ष–	श्री रामजी सिंह 'बागी'
प्रधानमंत्री–	श्री बैकुण्ठ राय
उपाध्यक्ष–	श्री कपिलदेव चौबे
उपप्रधान मंत्री–	श्री गयाप्रसाद शास्त्री
शिक्षा मंत्री–	श्री खरभान सिंह
समाजसेवा मंत्री–	श्री अशोक उपाध्याय
सांस्कृतिक मंत्री–	श्री रवीन्द्र शंकर श्रीवास्तव

कक्षा प्रतिनिधि

१–श्री सुरेन्द्र प्रताप सिंह	—	शास्त्री प्रथम वर्ष
२–श्री कपिलदेव सिंह	—	,, द्वितीय वर्ष
३–श्री अपरबल सिंह	—	एम० ए० समाजशास्त्र प्रथम वर्ष
४–श्री लक्ष्मीशंकर दूबे	—	,, ,, द्वितीय वर्ष
५–श्री रविशंकर सिंह	—	समाजसेवा प्रथम वर्ष

६–श्री श्रीकान्त पाण्डेय	—	समाजसेवा द्वितीय वर्ष
७–श्री लालबहादुर तिवारी	—	अर्थशास्त्र प्रथम वर्ष
८–श्री विष्णुदत्त पाठक	—	,, द्वितीय वर्ष
९–श्री ज्ञानप्रकाश सिंह	—	हिन्दी प्रथम वर्ष
१०–श्री चन्द्रभूषण सिंह	—	,, द्वितीय वर्ष
११–श्री अशोककुमार श्रीवास्तव	—	राजशास्त्र प्रथम वर्ष
१२–श्री मुरारी प्रसाद त्रिपाठी	—	,, द्वितीय वर्ष
१३–श्री बीरेन्द्र राय	—	अंग्रेजी द्वितीय वर्ष
१४–श्री रमेश प्रसाद मिश्र	—	संस्कृत प्रथम वर्ष
१५–श्री रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी	—	,, द्वितीय वर्ष
१६–श्री विश्वनाथ सिंह	—	मनोविज्ञान प्रथम
१७–श्री राधेश्याम मिश्र	—	दर्शन द्वितीय

कोषाध्यक्ष—श्री श्रीराम पाठक

इस वर्ष छात्र संघ का उद्‌घाटन अखिल भारतीय कांग्रेस के भू० पू० मंत्री तथा केन्द्रीय संचार मंत्री श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा द्वारा ८ फरवरी, १९७२ को सम्पन्न किया गया जो स्वयं एक छात्र नेता रहे हैं और आज भी युवकों का नेतृत्व कांग्रेस में तथा सरकार में करते हैं। उन्होंने अपने उद्‌घाटन भाषण में छात्रों को एक नई दिशा दी है और छात्र संगठन की आवश्यकता पर बल दिया है।

इस वर्ष छात्र संघ अपने कार्य में निरन्तर जुटा रहा है और उसने अधिक-से-अधिक छात्रों की सहायता की है। जिन छात्रों की शुल्क मुक्ति नही हो पाई है और वे वास्तव में शुल्क मुक्ति योग्य हैं उनके लिए छात्रसंघ सचेष्ट है और अपनी कार्यवाही कर रहा है। बाढ़-पीड़ित छात्रों के लिए भी छात्र संघ ने उल्लेखनीय कार्य किया है।

छात्र संघ ने अन्य वर्षो की अपेक्षा इस वर्ष सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अधिक रुचि ली है और बसन्त पंचमी से लेकर दीक्षान्त समारोह तक सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रस्तुत कर एक नया कीर्तिमान स्थापित कर यह सिद्ध कर दिया है कि विद्यापीठ के छात्रों का जीवन राजनीतिक नहीं अपितु पूर्णरूपेण सांस्कृतिक है। छात्रों द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए हम विशेष रूप से श्री केवल प्रसाद सिंह के आभारी हैं जिन्होंने सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा छात्रसंघ की प्रतिष्ठा बढ़ायी है।

छात्रसंघ ने कुछ महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्य भी किये हैं जिनसे काशी विद्यापीठ की मर्यादा का पालन तथा छात्रों का हित हुआ है। इन कार्यो में श्री काशी विद्यापीठ को चार्टर्ड विश्वविद्यालय बनाने की कार्यवाही प्रमुख है। छात्र संघ ने इसके लिए शासन से बृहद् रूप में अपनी ओर से तथा श्री काशी विद्यापीठ की ओर से काफी लिखापढ़ी की है

और ऐसी आशा है कि शासन इस ओर अविलम्ब ध्यान देगा। इसके बावजूद छात्रसंघ पूर्णरूपेण सचेष्ट भी है।

दूसरा सबसे महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्य छात्रसंघ भवन के निर्माण का है। इस हेतु ५० हजार रुपये की व्यवस्था छात्र संघ ने निश्चित किया है और भूमि भी देख ली गयी है। भवन का नक्शा भी पूर्णरूपेण बन कर तैयार हो गया है और बहुत जल्द ही इसका शिलान्यास इसी वर्ष किया जायेगा। यह सम्भव भी है कि आगामी वर्ष तक छात्र संघ अपने नये भवन में कार्यरत रहेगा। इसमे हमारे छात्र बन्धुओं का सहयोग तथा हमारे कुलाधिपति पं० कमलापति त्रिपाठी एवं कुलपति श्री रघुकुल तिलक एवं पीठस्थविर डा० केशव प्रसाद सिंह का योगदान विशेष उल्लेखनीय है।

तीसरा रचनात्मक कार्य विद्यापीठ सीमा में व्याप्त गंदगी तथा छात्रावासों में बिजली, पानी एवं उसकी सफाई से सम्बन्धित है। कुछ छात्रों के द्वारा की गयी कुछ अप्रिय घटनाओं के बावजूद उनकी सहनशीलता के लिए छात्रसंघ अपने छात्रों का विशेष रूप से आभारी है। अगर हमें छात्रों का इसी तरह का सहयोग बराबर मिलता रहा तो श्री काशी विद्यापीठ का छात्रसंघ आगे बढ़ता ही जायेगा और अपना एक ऐतिहासिक महत्व एवं आदर्श कायम रखेगा।

आचार्य नरेन्द्रदेव छात्रावास

काशी विद्यापीठ में पुरुष छात्रों के लिए एकमात्र छात्रावास आचार्य नरेन्द्रदेव छात्रा-वास ही है। नवीन छात्रावास का भवन यद्यपि तैयार हो चुका है परन्तु ठेकेदार ने विद्या-पीठ को हस्तान्तरित नही किया है। और न उसमें पानी, बिजली, सीवर की व्यवस्था हो सकी है। सभी कक्षाओं के छात्र इसमें रहते हैं। इस छात्रावास मे यद्यपि २४० छात्रों के लिए स्थान निर्दिष्ट है परन्तु स्थानाभाव के कारण २८९ छात्रों को स्थान दिया गया है। परिणामस्वरूप कामन हाल भी छात्रों से भरे रहे। सभी कमरों में दो-दो छात्र रहते हैं। आठ निवास कक्ष तथा भूमि भोजनालयों में एन० सी० सी० का कार्यालय एवं स्टोर है। १६० छात्रों को स्थानाभाव के कारण प्रवेश नहीं दिया जा सका।

प्रशासन

प्रशासन का उत्तरदायित्व गृहपति तथा उनके सहयोगी सहायक गृहपतियों पर है। इस वर्ष डा० चन्द्र प्रकाश गोयल ने गृहपति पद का भार सम्भाला तथा श्री सुभाष चन्द्र एवं डा० युगेश्वर पाण्डेय सहायक गृहपति रहे हैं। डा० चन्द्र प्रकाश गोयल की अनु-पस्थिति में (अक्टूबर–दिसम्बर १९७१) प्रो० भगवती प्रसाद पांथरी गृहपति का कार्य देखते रहे। कार्यालय के लिये अंशकालिक लिपिक के रूप में श्री महावीर सिंह ने कार्य किया। चीफ प्रीफेक्ट का उत्तरदायित्व श्री परमानन्द सिंह ने वहन किया।

आवास

छात्रावास में स्थानाभाव के कारण लगभग २०० छात्रों को बाहर स्वयं कमरा लेकर रहना पड़ा। विद्यापीठ में बड़ी संख्या में परिगणित जातियों के छात्र पहले आते हैं, तथा छात्रावास में रहने वाले उक्त छात्रों को रहना कठिन है, तथा इनको छात्रावास में स्थान देने में प्राथमिकता दी जाती है। परिगणित जातियों के छात्रों के द्वारा देर से प्रवेश लेने के कारण उनके लिए कामन रूम तथा हाल में स्थान की व्यवस्था करनी पड़ी। आव-श्यकता है कि उन छात्रों के लिए एक विशेष छात्रावास भवन का निर्माण किया जाय जहाँ पर कि उनके लिए स्वयं भोजन बनाने के लिए व्यवस्था हो। अधिकांश परिगणित जाति के छात्र अत्यन्त निर्धन परिवारों से आते हैं। तथा घर से कुछ चावल दाल लेकर स्वयं भोजन बनाते हैं। छात्रावास के भोजनालय का शुल्क वह देने में असमर्थ हैं। इस-लिए अपने कमरों में भी भोजन बनाते हैं। या तो इनके लिए भोजनालय चलाया जाय या फिर प्रत्येक खंड में सामूहिक भोजनालय कक्ष बनाया जाय, जहाँ पर प्रत्येक छात्र के

लिए एक छोटी आलमारी हो जहाँ पर वह अपना भोजन बनाने का सामान, बर्तन रख सके तथा उक्त कक्ष में भोजन बना सके। आवासीय कक्ष में भोजन बनाने से अन्य छात्रों को कठिनाई होती है।

स्वच्छता तथा जल व्यवस्था

जल की पूर्ति नगर निगम के जलकल विभाग द्वारा होती है। जल की पूर्ति यहाँ के छात्रों की संख्या को देखते हुए अति असन्तोषजनक है। पानी ऊपर टैंक में पहुँच ही नहीं सकता क्योंकि इस क्षेत्र में प्रेशर बहुत कम है। विद्यापीठ द्वारा एक स्टोरेज टैंक बनाकर उस पर पम्प बैठाया गया है। फिर भी शौचालयों तथा स्नानगृहों में जल का अभाव बना रहता है। विद्यापीठ ने अपना एक ट्यूब-वेल लगाने की एक योजना बनायी है जो स्वीकृत भी हो चुकी है। उस पर कार्य शीघ्र आरम्भ होना चाहिये। छात्रावास के शौचालयों में जल का सामान्यतः अभाव रहता है जिससे सफाई करना कठिन हो जाता है। साथ ही शौचालयों का पुनः निर्माण तथा नई फिटिंग की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने शौचालयों तथा भोजनालयों के नवीनीकरण के लिए अनुदान स्वीकृत किया है जिसपर कार्य आरम्भ होना है। कमरों की सफाई के लिए ५ खंड सेवक इस वर्ष कार्य करते रहे तथा सुरक्षा के लिए तीन चौकीदार हैं।

भोजनालय

इस वर्ष तीन भोजनालयों का संचालन हुआ और काफी संख्या में छात्र विद्यापीठ रोड के भोजनालयों में भी खाते रहे। भोजनालयों का संचालन असन्तोषजनक रहा क्योंकि छात्रों ने भोजनालयों का शुल्क नियमित रूप से नहीं दिया।

मनोरंजन

अंतरंग मनोरंजन व्यवस्था इस वर्ष नहीं हो सकी क्योंकि हाल तथा कमरों में छात्र रहते हैं। रेडियो एकमात्र मनोरंजन का साधन रहा। कामन रूम, पत्रिकाओं, फर्नीचर आदि की व्यवस्था अपेक्षित है। बहिरंग खेल-कूद की व्यवस्था समुचित प्रकार से चलती रही।

स्वास्थ्य

विद्यापीठ द्वारा एक स्वास्थ्य केन्द्र का संचालन होता है। जिसमें होमियोपैथिक तथा एलोपैथिक विभाग हैं। अस्वस्थ होने पर छात्रों को यहाँ से दवा मिलती है। विद्यापीठ प्रांगण में होमियोपैथ श्री वी० के० अग्रवाल निवास करते हैं। वह तात्कालिक चिकित्सा देते हैं। इस वर्ष छात्रों की स्वास्थ्य परीक्षा नहीं हो सकी।

महिला छात्रावास

काशी विद्यापीठ की छात्राओं के लिए जे० के० छात्रावास है जिसमें कुल ४० कमरे हैं। इनके अतिरिक्त प्रत्येक खण्ड में शौचालय तथा स्नानगृह की व्यवस्था है। दोनों

खण्डों में एक-एक कामनरूम भी हैं। नीचे के खण्ड में एक भोजनालय भी है। इस वर्ष प्रारम्भ में लगभग २० छात्राएँ रहीं और परीक्षाकाल में इनकी संख्या ६० हो गयी। भोजनालय की व्यवस्था पूरे वर्ष रही और छात्रायें ६० प्रतिशत देकर भोजन करती रहीं। छात्राओं ने ६ फरवरी १९७१ को छात्रावास दिवस उल्लास सहित मनाया। तथा इनका उक्त दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस वर्ष वहाँ की व्यवस्था के लिये श्रीमती कीर्ति श्रीवास्तव ने गृहस्वामिनी के उत्तरदायित्व का निर्वाह किया। भोजनालय तथा कामन रूम में उपयुक्त फर्नीचर की आवश्यकता है तथा जलपूर्ति में वृद्धि अपेक्षित है।

स्वास्थ्य केन्द्र

स्वास्थ्य केन्द्र, काशी विद्यापीठ की स्थापना सन् १९६६ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त धनराशि से हुई। इस अनुदान की कुल धनराशि पचास हजार रुपये थी जिसे निम्नलिखित मदों में खर्च करने का प्रविधान था :—

१—भवन निर्माण हेतु	रु० २५,०००)
२—एक्स-रे प्लान्ट हेतु	रु० १५,०००)
३—स्वास्थ्य केन्द्र के उपकरणों के क्रय हेतु	रु० १०,०००)
	रु० ५०,०००)

इसी के अनुसार स्वास्थ्य केन्द्र के भवन का निर्माण तथा एक्स-रे प्लान्ट और स्वास्थ्य केन्द्र के लिए उपकरण आदि खरीदे गए। उपकरणों में मल, मूत्र, रक्तादि परीक्षाओं के भी उपकरणों का समावेश है, जिसकी पूरी व्यवस्था स्वास्थ्य केन्द्र पर कर दी गई है।

भवन का शिलान्यास तत्कालीन कुलाधिपति स्वर्गीय डा० सम्पूर्णानन्द जी के कर-कमलों द्वारा सन् १९६५ में हुआ तथा स्वास्थ्य केन्द्र का उद्घाटन भूतपूर्व उपकुलपति प्रो० राजाराम शास्त्री जी, एम० पी० के कर-कमलों द्वारा सन् १९६७ में हुआ।

इसके पूर्व यह एक छोटी डिस्पेन्सरी के रूप में आचार्य नरेन्द्रदेव छात्रावास काशी विद्यापीठ में थी, जिसकी स्थापना एवं उद्घाटन सन् १९६३ में काशी विद्यापीठ के तत्कालीन उपकुलपति आचार्य बीरबल सिंह जी के करकमलों द्वारा हुआ।

संकटकालीन चिकित्सा के लिए स्वास्थ्य केन्द्र पर दो शय्याओं की भी व्यवस्था है जहाँ रोगी को भर्ती करके समुचित प्राथमिक उपचार की व्यवस्था की जाती है।

इस समय स्वास्थ्य केन्द्र में दो चिकित्सा-विभाग कार्य कर रहे हैं।

(क) एलोपैथिक चिकित्सा विभाग

(ख) होमियोपैथिक चिकित्सा विभाग

एलोपैथिक विभाग

रोगी जिनकी चिकित्सा की गयी, १९६६–७२

वर्ष	नये रोगी	पुराने रोगी	योग
१९६६–६७	१,६००	१,४००	३,०००
१९६७–६८	२,०००	१,९६८	३,९६८

१९६८–६९	२,८६०	२,७८५	५,६४५
१९६९–७०	३,९८६	३,०९६	७,०८२
१९७०–७१	३,१५२	२,९१५	६,०६७
१९७१ से आज तक	३,८९४	३,०००	६,८९४

स्वास्थ्य केन्द्र पर उपलब्ध अन्य सुविधाएँ

(१) काशी विद्यापीठ के छात्रों की स्वास्थ्य परीक्षा की सुविधा।

(२) चेचक के टीका की व्यवस्था छात्रों एवं कर्मचारियों के लिए, कालरा, टाइफाइड आदि के लिए उचित दवा की व्यवस्था करना।

(३) विद्यापीठ के छात्रावास में भोजन का निरीक्षण करना।

(४) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की व्यवस्था तथा एन० सी० सी० के छात्रों के स्वास्थ्य परीक्षा की व्यवस्था।

(५) शल्य-चिकित्सा और काय चिकित्सा की यथासम्भव व्यवस्था।

(६) इस वर्ष (१९७२) में स्वास्थ्य केन्द्र पर एक्स-रे प्लांट लग गया है। इसके द्वारा समस्त विद्यार्थियों के परीक्षा की व्यवस्था है।

(७) मल, मूत्र, रक्त की परीक्षा की व्यवस्था भी केन्द्र पर है।

डाक्टर प्रियकुमार चौबे एलोपैथिक सेंटर के मेडिकल आफिसर हैं।

होमियोपैथिक विभाग

इस विभाग की स्थापना सितम्बर सन् १९४५ ई० में पुराने भवन में डा० वीरेन्द्र कुमार अग्रवाल की देखरेख में की गई। सन् १९६२ में इसे आचार्य नरेन्द्रदेव छात्रावास में स्थानान्तरित किया गया तथा सन् १९६७ ई० में स्वास्थ्य केन्द्र के भवन का निर्माण हो जाने के बाद इसे उक्त केन्द्र पर वहाँ से स्थानान्तरित किया गया। तब से यह विभाग वहाँ कार्य कर रहा है। डाक्टर वीरेन्द्र कुमार अग्रवाल प्रारम्भ से आज तक इस विभाग का सफलतापूर्वक संचालन कर रहे हैं।

गत २७ वर्षों में इस विभाग द्वारा लगभग डेढ़ लाख रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा एवं सेवा की गई है। सस्ती, सुलभ तथा स्थायी लाभकारी होने के कारण यह चिकित्सा विद्यापीठ में अत्यधिक लोकप्रिय है।

इस विभाग ने अपने लघुकाय और सीमित साधनों के होते हुए भी इस अवधि में कुल ६,८७५ रोगियों की चिकित्सा की। इसमें विभिन्न प्रकार के रोगियों की संख्या निम्नप्रकार है :—

(क) नवागन्तुक रोगियों की कुल संख्या—		२,०३०
१–ज्वर, सर्दी, खांसी	९५९	
२–पेट की बीमारी	४०४	
३–बच्चों की बीमारी	३३०	
४–चर्म रोग	२३६	
५–चोट, फोड़े तथा छोटे आपरेशन जिनकी पट्टी इत्यादि हुई।	१०१	
	२,०३०	
(ख) पुराने रोगियों की संख्या जिन्हें पुनः-पुनः दवा दी गयी		४,८४५
कुल रोगियों की संख्या		६,८७५

उपरोक्त संख्या में छात्रों के अतिरिक्त अध्यापक, अधिकारी, कार्यकर्त्ता एवं कर्मचारी तथा उनके परिवार के सदस्य भी सम्मिलित हैं। केन्द्र पर निरीक्षण एवं चिकित्सा के अतिरिक्त प्रांगण में स्थित छात्रावासों एवं आवासों पर भी आहूत होने पर निरीक्षण एवं चिकित्सा की गई जिनकी संख्या १,२१६ है। छात्रावास एवं उसके भोजनालय की स्वच्छता तथा भोजन एवं भोज्य सामग्री का भी निरीक्षण समय-समय पर किया गया।

निरन्तर कार्यवृद्धि को दृष्टिगत रखते हुए एक कम्पाउण्डर तथा औषधि एवं उपकरण हेतु सम्प्रति आय-व्ययक में २,०००) रखने की व्यवस्था आवश्यक है, ताकि रोगियों की समुचित चिकित्सा एवं सेवा-सुश्रुषा की जा सके।

ज्ञानचन्द मन्दित बाल विद्यालय

इस विद्यालय की स्थापना २१ फरवरी, १९६६ को निवर्तमान उपकुलपति श्री राजाराम शास्त्री के द्वारा की गई। इसकी स्थापना में श्रीमती कश्मीरो देवी, पत्नी स्वर्गीय ज्ञानचन्द मुरब्बेवाला का आर्थिक सहयोग प्रशंसनीय है। उन्होंने अपने पति की स्मृति में विद्यालय के भवन-निर्माण में बीस हजार रुपये का दान देकर मंदित छात्रों की शिक्षा-व्यवस्था में उत्साह ही नही, वरन् कार्यरत होने के लिये प्रेरणा दिया। साथ ही उन्होंने विद्यालय के अंतर्गत चल रहे छात्रावास के भवन-निर्माण में १८,०६८ रुपये ३९ पैसे का दान दिया, जिसमें समाज कल्याण विभाग, उ० प्र० सरकार ने बीस हजार रुपये दिया था। प्रारंभ में समाज कल्याण विभाग, उ० प्र० सरकार के अनुदान, स्वैच्छिक संस्थाओं के अनुदान एवं जनता के आर्थिक सहयोग से विद्यालय चलता रहा परन्तु १९६९–७० से

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इसे चतुर्थ पंचवर्षीय योजनांतर्गत समाज सेवा विद्यालय के व्यावहारिक कार्य प्रशिक्षण केन्द्र के अंतर्गत स्वीकार कर लिया ।

विद्यालयीय सेवार्थियों की संख्या

२१ फरवरी, १९६६ से ३१ मार्च, १९७१ तक कुल विद्यालयीय सेवार्थियों की संख्या ६४२ रही, जिसमें से छः छात्रों को पुनः संस्थापित किया गया । चार विद्यार्थी सामान्य संस्थाओं में अध्ययन करने चले गये और दो छात्र अपने-अपने कारखाने और कृषि-कार्य पर काम कर रहे हैं । इस समय कश्मीरा देवी छात्रावास में ६ छात्र देश के विभिन्न भागों से आकर निवास कर रहे हैं ।

प्रवेश-प्रतीक्षा सूची

विद्यालय में प्रवेश के २८५ अभ्यर्थियों के प्रार्थना-पत्र आवासीय व्यवस्थान्तर्गत तथा २५३ स्थानीय अभ्यर्थियों की संख्या दिवसीय विद्यालय के लिये विचाराधीन हैं । परन्तु इस समय कार्यकर्त्ताओं की कमी एवं अर्थाभाव के कारण विद्यालयीय सेवाओं में उत्तरोत्तर वृद्धि अवरुद्ध है ।

विद्यालयीय कार्यक्रम

१—शिक्षण एवं प्रशिक्षण

मंदित छात्रों के शिक्षण एवं प्रशिक्षण के लिये विद्यालय में एक विशेष शैक्षणिक पद्धति है, जो सामान्य शैक्षणिक पद्धति से भिन्न है । मंदित छात्रों की प्रगति कहाँ तक होगी, यह मंदता की मात्रा पर निर्भर है । उन्हें प्रभावपूर्ण प्रतियोगिता से मुक्त करके जागृतिपूर्ण प्रयत्न द्वारा सामाजिक, आर्थिक एव व्यावसायिक पुनःसंस्थापन को दृष्टिगत करते हुए विशेष शिक्षण एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है ।

मंदित छात्राओं को शिक्षा के अतिरिक्त गृह विज्ञान, अर्थ व्यवस्था सम्बन्धी कार्य, भोजन बनाना, सिलाई, कढ़ाई-बुनाई, रंगाई, चित्रकारी, टेलीफोन सेवा, संगीत तथा चाय पार्टी के आयोजन की विशेष रूप से शिक्षा दी जाती है । प्रशिक्षणीय मंदित छात्रों को 'दैनिक जीवन सम्बन्धी कार्य' की विशेष रूप से शिक्षा दी जाती है । जैसे हाथ-मुंह धोना, मंजन करना, कपड़े पहनना, स्नान करना आदि ।

२—व्यावसायिक शिक्षा

व्यावसायिक शिक्षा का प्रधान उद्देश्य मंदित छात्रों को आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी बनाना है, जिसमें उनकी आयु, लिंग भेद, रुचि, शारीरिक कार्यक्षमता, मानसिक ग्रहण शक्ति तथा वस्तुओं के प्रति नवीन रुचि को दृष्टिगत करते हुए आधुनिक आवश्यक व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने में विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है ।

३—चिकित्सा व्यवस्था

मंदित छात्रों के लिये चिकित्सा सम्बन्धी सम्पूर्ण परीक्षायें और आवश्यक होने पर उपचार में भी मनोवैज्ञानिक, मनोचिकित्सक, डाक्टर एवं प्रशिक्षित मनोसामाजिक कार्यकर्त्ता की सेवाएँ उपलब्ध हैं।

४—मनोसामाजिक सेवा

मनोसामाजिक कार्यकर्त्ता विद्यालय तथा उनके घर पर मंदित छात्रों और उनके माता-पिता के साथ वैयक्तिक साक्षात्कार करते हैं और वैयक्तिक संपर्क के माध्यम से उनकी समस्याओं का अध्ययन, निदान तथा उपचार करते हैं जो कि छात्र के सामूहिक एवं वैयक्तिक समायोजन में सहयोग प्रदान करता है। इनके निर्दिष्ट चिकित्सा पद्धतियों के पालन में अभिभावकों एवं माता-पिता को सहयोग प्रदान करते हैं और औषधियों के क्रय करने की असमर्थता में स्वैच्छिक संस्थाओं अथवा अन्य स्रोतों से आर्थिक सहायता दिलाने का प्रबन्ध करते हैं।

५—परामर्श सेवा

मनोसामाजिक कार्यकर्त्ता मंदित छात्रों के लिये विद्यालय में सीमित स्थान होने के कारण उनके माता-पिता एवं अभिभावकों को छात्रों के बहुमुखी विकासोन्मुख कार्यक्रमों से अवगत कराते है तथा तदनुरूप व्यवहारिक दृष्टि से आचरण करने की दृष्टि से विद्यालयीय तथा बाहरी अभिभावकों को परामर्श सेवा प्रदान की जाती है।

६—अभिभावकों के सहयोगात्मक कार्यक्रम

इसका प्रधान उद्देश्य विद्यालयीय कार्यों में माता-पिता तथा अभिभावकों में सहयोगात्मक रुचि उत्पन्न करना है ताकि वे विद्यालयीय विकासोन्मुख गतिविधियों से अवगत होकर मंदित छात्रों के बहुमुखी विकास में समान रूपेण सहयोग प्रदान कर सकें। इसके लिए प्रत्येक माह अभिभावकों की बैठक होती है, जिसमें प्रधान रूप से छात्रों की समस्याओं पर विचार करके समाधान के मार्ग की खोज होती है।

७—व्यवहारिक कार्य प्रशिक्षण केन्द्र

काशी विद्यापीठ के समाज सेवा विद्यालय के स्नातकोत्तर छात्रों का यह विद्यालय व्यवहारिक कार्य प्रशिक्षण केन्द्र है, जिसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने चतुर्थ पंचवर्षीय योजनान्तर्गत स्वीकार कर लिया है और शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने चतुर्थ पंचवर्षीय योजना की समाप्ति के पश्चात् स्थायी रूप से चलाने की स्वीकृति भी दे दी है। ये छात्र मंदित छात्रों के विद्यालयीय कार्यक्रमों से अवगत होने के साथ ही उनकी समस्याओं के समाधानार्थ गृह साक्षात्कार के माध्यम से विद्यालयीय कार्यक्रमों के साथ समायोजन करते हैं।

राष्ट्रीय एकता समिति

राष्ट्रीय एकता समिति भारत सरकार द्वारा संचालित एक ऐसी संस्था है जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी सदस्यों में भारतीय परम्पराओं, विचारों, आदर्शों आदि के विषय में ज्ञान प्राप्त कराना तथा भारत के ऐतिहासिक, भौगोलिक तथा सांस्कृतिक विषमताओं में समता का बोध कराना है।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विभिन्न योजनाओं को प्रस्तुत किया गया है।

गत वर्ष विद्यापीठ राष्ट्रीय समिति ने निम्नलिखित कार्यक्रमों में भाग लिया।

१४ अगस्त से १७ अगस्त १९७१ तक कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'बंगला देश' विषय पर स्टूडेण्ट-टीचर्स कन्वेन्शन में एक विद्यार्थी और एक शिक्षक भाग लेने गये थे। सम्मेलन में श्री जुगेन्द्र सहाय (सहायक प्राध्यापक) और श्री सुरेश चन्द्र दुबे (शोध छात्र) ने भाग लिया।

२१ सितम्बर से २५ सितम्बर १९७१ तक पूसा इन्स्टीटयूट द्वारा आयोजित अखिल भारतीय विश्वविद्यालय नाटक प्रतियोगिता में एक दल, जिसमें दो प्राध्यापक तथा पाँच विद्यार्थी थे, भाग लेने के लिये दिल्ली गया था। अखिल भारतीय प्रतियोगिता में विद्यापीठ के छात्रों ने पुरस्कार प्राप्त किया।

प्राध्यापकों में श्री जुगेन्द्र सहाय और श्री आनन्दमूर्ति मिश्र के निर्देशन में सर्वश्री रवीन्द्रशंकर श्रीवास्तव, अजीत कुमार, कन्हैया लाल श्रीवास्तव 'प्रशांत', राजेन्द्र उपाध्याय ने भाग लिया।

कुलपति समिति के अध्यक्ष और श्री जुगेन्द्र सहाय संयोजक हैं।

खेल-कूद एवं व्यायाम परिषद्

काशी विद्यापीठ में खेल-कूद का संचालन करने के लिये एक खेलकूद एवं व्यायाम परिषद् का गठन किया गया है। इसका लक्ष्य विद्यापीठ के छात्रों में साधारण शारीरिक व्यायाम, खेलकूद और क्रीड़ा में अभिरुचि उत्पन्न करना, प्रतियोगिता को संगठित करना और तत्सम्बन्धी सुविधाओं को प्रोत्साहित करना है।

खेलकूद एवं व्यायाम परिषद् में संरक्षक, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, विभिन्न क्रीड़ाओं के सभापति, कोषाध्यक्ष, मंत्री, विभिन्न क्रीड़ाओं के कप्तानों का मुख्य योगदान होता है। इस परिषद् की मुख्य समितियाँ निम्न हैं :—प्रबन्ध समिति, क्रीड़ा समिति और अनुशासन समिति।

परिषद् के संरक्षक विद्यापीठ के कुलपति हैं। संरक्षक क्रीड़ा-परिषद् के अध्यक्षों को मनोनीत करते हैं। वर्तमान सत्र के अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग के अध्यापक श्री वीरेन्द्रप्रताप सिंह हैं। परिषद् के मंत्री शारीरिक प्रशिक्षक श्री राजाराम दूबे हैं। इनके अतिरिक्त दो प्रशिक्षक श्री किशोरीलाल तथा श्री विजय नारायण गिरि संयुक्त मंत्री का कार्य करते हैं। इस वर्ष विभिन्न खेलों के निम्नलिखित सभापति तथा कप्तान हैं :—

खेल	सभापति		कप्तान
१—फुटबाल	श्री आनंदमूर्ति मिश्र	सर्वश्री	राजेन्द्र पाण्डेय
२—हाकी	श्री सुमन कुमार	,,	राम अवध सिंह
३—क्रिकेट	श्री दिवाकर जी	,,	अलख नारायण सिंह
४—वालीबाल	श्री वीरेन्द्रप्रताप सिंह	,,	अमरनाथ सिंह
५—बास्केट बाल	श्री वीरेन्द्रप्रताप सिंह	,,	ज्ञानेन्द्र सिंह
६—कबड्डी	श्री सर्वजीत राय	,,	अशोक कुमार सिंह
७—कुश्ती	श्री गुरदीन राम	,,	अनन्त प्रसाद सिंह
८—भारोत्तोलन	श्री गुरदीन राम	,,	कृपाशंकर सिंह
९—बैडमिंटन	श्री सुमन कुमार	,,	सज्जाद हुसेन
१०—टेबुल टेनिस	श्री सुमन कुमार	,,	रफेल
११—स्पोर्ट्स	श्री शम्भूनाथ सिंह	,,	चन्द्रभूषण सिंह

खेलकूद को आयोजित करने का एकमात्र साधन छात्रों द्वारा प्रवेश के समय दिया जाने वाला पाँच रुपया वार्षिक शुल्क है। इसके अतिरिक्त परिषद् के पास आय का अन्य कोई स्थायी साधन नहीं है। इस वर्ष की अनुमानित आय लगभग आठ हजार रुपये

है। विद्यापीठ में खेल के आयोजन के लिए एक मैदान है, किन्तु यह मैदान अभी पर्याप्त रूप से विकसित नही है। खेलकूद के मैदान को ठीक करने तथा उसे सुरक्षित रखने के लिये परिषद् ने उसे चारों तरफ से घेरवाने का प्रस्ताव पारित किया है। इसके अतिरिक्त एक व्यायामशाला नये छात्रावास के निकट बनवाने की भी योजना है। दीर्घकालीन योजना के अन्तर्गत परिषद् ने एक पेवेलियन तथा कक्ष क्रीड़ाओं के लिए स्थायी भवन तथा मैदान निर्मित किये जाने का भी प्रस्ताव किया है।

अभिरुचि केन्द्र

तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत अभिरुचि केन्द्र की स्थापना हुई। केन्द्र का उद्देश्य स्वस्थ अभिरुचियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था करना है। जिन अभिरुचियों के संचालन की अनुमति प्राप्त हुई वे हैं :—फोटोग्राफी, काष्ठ एवं लौह कला, इलेक्ट्रानिक्स, मिट्टी के खिलौने तथा रसायन सम्बन्धी लघु औद्योगिक वस्तुएँ बनाना। इस समय केन्द्र फोटोग्राफी, काष्ठ एवं लौह कला का प्रशिक्षण दे रहा है। आगामी सत्र से इलेक्ट्रानिक्स (रेडियो निर्माण) का प्रशिक्षण आरम्भ हो जायगा। अभी तक विद्यार्थियों के पाँच प्रशिक्षण कोर्सेज़ सम्पन्न हो चुके हैं।

प्रशिक्षण कार्य के अतिरिक्त विद्यापीठ को केन्द्र की और भी सेवायें प्राप्त होती जा रही हैं। स्वर्ण जयंती, समावर्तन समारोह तथा अनेक उत्सवों के समय के छाया चित्र, श्यामपट्ट, लेक्चर स्टैण्ड एवं आफिस ट्रे का निर्माण भी केन्द्र द्वारा हुआ है। अभिरुचि केन्द्र का कुशल संचालन डा० शंकरसहाय श्रीवास्तव करते हैं।

नेशनल कैडेट कोर (एन. सी. सी.)

सन् १९५५ से काशी विद्यापीठ में एन० सी० सी० की एक प्लैटून स्थित है। ये सैनिक छात्र श्री केशव प्रसाद सिंह के कुशल नेतृत्व में विविध प्रकार के कैम्प में प्रति वर्ष भाग लेते एवं अपनी योग्यता का परिचय देते हैं। सन् १९६२ के चीनी आक्रमण के समय यह महसूस किया गया कि काशी विद्यापीठ जैसी महान् संस्था के लिये एक प्लैटून काफी नहीं है। तत्कालीन उपकुलपति आचार्य बीरबल सिंह ने एन० सी० सी० का प्रशिक्षण स्वस्थ पुरुष विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य कर दिया। सरकारी अनुमति तो बाद में आयी किन्तु प्रशिक्षण का कार्य सामूहिक रूप से तत्काल शुरू कर दिया गया। नई योजना में काशी विद्यापीठ में बटालियन का मुख्यालय भी स्थापित हुआ और उसी समय से एन० सी० सी० आर० की नयी कम्पनी भी स्थापित हुई। इसका नेतृत्व श्री सुन्दर लाल गुप्त कर रहे थे। कुछ समय तक एन० सी० सी० की एक प्लैटून और एन० सी० सी० रायफल की एक कम्पनी जो बाद में बढ़कर तीन कम्पनी हो गयी, अलग रहीं, वाद में एन० सी० सी० की प्लैटून तथा एन० सी० सी० रायफल की कम्पनियाँ मिलकर एक हो गयीं और उनका नाम एन० सी० सी० कम्पनी रखा गया। उस समय काशी विद्यापीठ में एन० सी० सी० के चार अधिकारी क्रमशः ले० श्री केशव प्रसाद सिंह, से० ले० श्री सुन्दर लाल गुप्त, से० ले० श्री बागेश्वरी सिंह परिहार एवं से० ले० श्री सुभाष चन्द्र कार्य कर रहे थे। बाद में से० ले० श्री दिवाकर ने एक कम्पनी का संचालन किया। छात्र सैनिकों की संख्या ६ सौ थी। विभिन्न कार्यक्रमों में वर्ष में एक सप्ताह की आउटिंग खास थी जब कि सारे छात्र हथियार सहित सैनिक प्रशिक्षण के हेतु सारनाथ, मडुवाडीह, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय आदि स्थान पैदल जाते थे। कालान्तर में वार्षिक प्रशिक्षण के कार्यक्रम में यहाँ के विद्यार्थी जाते रहते। दो बार पूरे बटालियन का वार्षिक कैम्प आचार्य नरेन्द्रदेव छात्रावास में ही आयोजित किया गया। विद्यार्थियों में रुचि की कमी के कारण काशी विद्यापीठ में एन० सी० सी० कम्पनियों की संख्या में लगातार कमी हुई है। पहले की तीन कम्पनियों के स्थान पर आज केवल एक कम्पनी है। सन् १९७०–७१ व ७२ में प्रविष्ट विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः १५१ एवं १४२ रही है। परेड मैदान में उनकी उपस्थिति में भी लगातार कमी की शिकायत रही है।

पिछले वर्षों में यहाँ के छात्रों ने स्थायी सेना के साथ एक मास के प्रशिक्षण में भाग लिया। एन० सी० सी० का मुख्य आकर्षण 'बी' तथा 'सी' प्रमाणपत्र की परीक्षा है। काशी विद्यापीठ का परीक्षाफल काफी संतोषजनक रहता है। इस वर्ष 'बी' प्रमाणपत्र की परीक्षा में २२ में १८ सैन्य छात्र सफल रहे। परीक्षा एवं पदोन्नति के लिये वर्ष में

दो बार एक सप्ताह का विशेष प्रशिक्षण का कार्यक्रम चलाया जाता है। काशी विद्यापीठ में स्वतन्त्रता दिवस एवं गणतंत्र दिवस का कार्यक्रम वस्तुत: एन० सी० सी० का कार्यक्रम बन गया है। गणतंत्र दिवस तो विशेष धूमधाम से मनाया जाता है। उक्त अवसर पर यहाँ के सैन्य छात्र अपने कर्नल कमाण्डेन्ट श्री कुलपति का सैनिक अभिनन्दन करते हैं और सैन्य प्रशिक्षण का प्रदर्शन करते है। एन० सी० सी० दिवस एक और कार्यक्रम है जिसमे सैनिक छात्र अपने कुलपति जी से एन० सी० सी० की शपथ लेते हैं।

काशी विद्यापीठ में होने वाले जलसों में स्वयं सेवक का काम एन० सी० सी० के छात्र सहर्ष करते हैं। स्वर्ण जयन्ती समारोह के समस्त कार्यक्रमों में इन छात्रों ने मुस्तैदी से अपने कर्त्तव्य का पालन किया है। सन् १९७१ में भारत पाक युद्ध के समय यहाँ के सैन्य छात्रों का एक विशेष दस्ता शहर में सामूहिक महत्त्व के स्थानों पर कार्य करने के लिये संगठित किया गया था। इसी प्रकार की एक कम्पनी १९६५ के युद्ध के दौरान संगठित की गई थी। थोड़े समय में ही युद्ध समाप्त हो जाने के कारण इन्हें अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा एवं सेवाभाव प्रदर्शित करने का विशेष अवसर नहीं मिला। यह आशा की जा सकती है कि जिस प्रकार काशी विद्यापीठ के भूतपूर्व छात्र देश सेवा में सदैव तत्पर रहते थे वर्तमान छात्र उस परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखने में पीछे नहीं पाये जायेंगे।

सम्पत्ति विभाग

संस्था के भवनों का विवरण

१—कुलपति निवास——नया एक मंजिल पूर्ण निर्मित है।

२—१९ आवास कुछ बड़े किन्तु पुराने हैं अध्यापकों के लिए।

३—वीस फ्लैट वाला (दो कमरा प्रति फ्लैट) नया शिक्षक आवास जिसका एक खण्ड अभी तक एक मंजिल का है। इसमें अधिकांशत: अध्यापक तथा कुछ कार्यकर्त्ता लोग रहते हैं।

४—छोटे आवास ३२ हैं जिनमें चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी रहते हैं।

५—आचार्य नरेन्द्रदेव छात्रावास : जिसमें कुल १३४ कमरे हैं जिसमें से १२४ छात्रों को दिया गया है। बाकी दस कमरों को एन० सी० सी० व छात्रावास स्टोर के लिये दिया गया है। इसमें चार कामन रूम भी हैं जिसे विद्यार्थियों को दिया गया है।

६—नवीन छात्रावास : इसमें कुल ७५ कमरे हैं जिसमें ८ कमरा ब्लाक सर्वेन्ट्स के लिए है। १ कमरा खेलकूद परिषद् को दिया गया है। १ कमरा छात्रावास स्टोर के लिए तथा १ कमरा कार्यालय के लिए है।

७—गृहपति आवास : एक नया गृहपति आवास नये छात्रावास के पास पूर्ण रूपसे एक मंजिल बनकर तैयार हो गया है। लेकिन इस नये छात्रावास तथा गृहपति आवास में जल तथा बिजली की व्यवस्था अभी तक नही हो पायी है।

८—जे० के० महिला छात्रावास : कुल ४० कमरे हैं। इसके अतिरिक्त दो कमरे ब्लाक सर्वेन्ट्स तथा एक कमरा अतिथियों के लिए है।

९—अतिथि गृह नया : अर्धनिर्मित स्थिति में है जिसमें कुछ कार्यकर्त्ता एवं कर्मचारियों को रहने तथा सम्पत्ति विभाग के स्टोर के लिए दिया गया है।

१०—समाज विज्ञान विद्यालय : नयी बन रही यह बिल्डिग अभी तक अधूरी है।

११—स्टाफ क्वार्टर : अभी तक अर्धनिर्मित स्थिति में है।

१२—मुद्रणालय भवन——नया : यह भवन पूर्णरूपेण हाल ही में बन कर तैयार हुआ है जिसमें मुद्रण विभाग शीघ्र ही पुराने भवन से स्थानांतरित होने जा रहा है।

१३—नान रेज़िडेन्शियल स्टूडेन्ट्स क्वार्टर : अर्धनिर्मित।

१४–डा० भगवानदास स्वाध्यायपीठ भवन : पूर्णरूपेण दो मंजिला बन गया है जिसमें स्वाध्याय का कार्य चल रहा है।

१५–मुख्य विद्यालय भवन : इस भवन में पठन-पाठन तथा केन्द्रीय कार्यालय चलते हैं। इस भवन के तीन खण्डों में से एक खण्ड अभी तक एक ही मंजिल बना हुआ है जिसे पूरा कराने की योजना बन रही है।

१६–समाज सेवा विद्यालय भवन : भारत माता मन्दिर स्थित इस दो मंजिले भवन में समाज सेवा विभाग के विद्यार्थियों का पठन-पाठन कार्य चलता है।

१७–समाज सेवा केन्द्र भवन।

१८–पुराना खपरैल का बना प्रेस भवन।

१९–मान्टेसरी स्कूल भवन पुराना जिसे कुछ कार्यकर्त्ताओं को रहने हेतु दिया गया है।

२०–मंदित बाल विद्यालय।

२१–स्वास्थ्य केन्द्र भवन।

२२–अभिरुचि केन्द्र भवन।

२३–एक कमरे वाला एक स्टोर रूम।

अर्धनिर्मित भवनों को निकट भविष्य में बनवाने की योजना चल रही है। समुचित धन का प्रबन्ध न होने के कारण ही जब तक ये भवन अर्धनिर्मित स्थिति में हैं। पेय जल के अभाव को दूर करने के लिए एक ट्यूब वेल का शीघ्र निर्माण होने वाला है।

अभिलेख

प्रस्तावना

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं स ह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥

देश की प्रचलित शिक्षा प्रणाली की त्रुटियों को देखते हुए कुछ लोगों के मन में वहुत दिनों से यह वात उठ रही थी कि एक शिक्षा संस्था ऐसी स्थापित होनी चाहिए जो सब प्रकार से स्वतन्त्र हो, अर्थात् जो आर्थिक सहायता आदि के विषय में गवर्नमेण्ट के अधीन न हो और उसके शिक्षा विभाग के नियमों की पावन्द न हो, जिसमें सव प्रकार की ऊँची से ऊँची शिक्षा मातृभाषा द्वारा देने का प्रयत्न किया जाय, जिसमें मस्तिष्क की शिक्षा के साथ-साथ हृदय और हाथ की शिक्षा भी दी जाय, ज्ञान-सम्पादन के साथ-साथ सद्भाव और सच्चरित्रता तथा कुछ न कुछ शिल्पकला की भी शिक्षा हो, जिससे भारतवर्षीय सभ्यता की उन्नति हो, जो भारतवर्ष की अवस्था और आवश्यकताओं के अनुकूल और उपयोगी हो, और जिसमें शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त स्नातकों को स्वतन्त्र जीविका के उपार्जन करने में सुगमता और सहायता मिले, अर्थात् ऐसी शिक्षा दी जाय जिससे इहलोक परलोक, दीन और दुनिया, दोनों वनें । जैसा किसी जैन कवि ने लिखा है--

कला बहत्तर पुरुष की, वामें दो सरदार ।
एक जीव की जीविका, एक जीव उद्धार।

इस बीच भाद्रपद सम्वत् १९७७ (सितम्बर सन् १९२०) में कलकत्ते में जो विशेष कांग्रेस का अधिवेशन हुआ उसमें बहुत विचार के बाद यह निश्चय हुआ कि यदि भारत-निवासी अपना कल्याण चाहते हैं और अपने खोये हुए अधिकारों को फिर से वापस लेना चाहते हैं तो वर्तमान नौकरशाही से शान्तिमय असहयोग के सिवाय आत्मरक्षा का कोई उपाय नही है । यह निश्चय हो जाने के उपरान्त अन्य साधनों के साथ-साथ यह भी निश्चय हुआ कि अहलकारी और अर्द्ध अहलकारी शिक्षा संस्थाओं में पढ़ना या अपने बालकों को पढ़ाना उचित नहीं है । इस उपदेश के अनुसार प्रचलित शिक्षालयों में से विद्यार्थियों ने असहयोग करना आरम्भ कर दिया । काशी की शिक्षा संस्थाओं में से भी कुछ विद्यार्थियों ने असहयोग किया । काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कतिपय छात्रों ने अध्यापक श्री जीवतराम भगवानदास कृपलानी का आश्रय लेकर विद्यालय का त्याग किया और श्री गांधी आश्रम के नाम से संघ बनाकर ईश्वरगंगी तालाब के निकट एक मकान किराये पर लेकर उसमें निवास आरम्भ किया और उसमें एक पाठशाला भी आरम्भ कर दी । एक तरफ तो यह हो रहा था और दूसरी ओर नई शिक्षा संस्था स्थापित करने के अनु-

रागी अपने विचारों को पूरा करने के उद्योग में लगे थे। सौर पूस सं० १९७७ (जनवरी सन् १९२१) में महात्मा गांधीजी ने श्री भगवान दास को पत्र लिखा कि 'मुझे विश्वास है कि अब काशी जी में एक महाविद्यालय शीघ्र खोलना चाहिए।' इस पर मित्रों ने यह विचार दृढ़ कर लिया कि अब अपनी मनोकामना के अनुसार कार्य करने का समय आ गया। विलम्ब उचित नहीं है। इसी विचार के अनुसार २८ माघ, १९७७ का शुभ दिन इस कार्य के लिये निश्चित किया गया और महात्मा गांधीजी से प्रार्थना की गई कि वे अपने पवित्र हाथों से इसका आरम्भ करें। उन्होंने हमारी प्रार्थना स्वीकार कर ली और श्री पण्डित मोतीलाल नेहरू, श्री मौलाना मुहम्मद अली, श्री मौलाना अबुलकलाम आजाद, श्री सेठ जमनालाल जी बजाज, श्री पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू आदि प्रमुख नेताओं सहित काशी में पधारकर उक्त तिथि को ८ बजे प्रातःकाल काशी के विद्यानुरागियों और कई सहस्र देशप्रेमी नर-नारियों के सम्मुख पवित्र वेदमन्त्रों तथा कुरान की आयतों के उच्चारण के सहित काशी विद्यापीठ का आरम्भ किया। ईश्वर इसे चिरंजीवी और सब प्रकार से समृद्ध और सम्पन्न बनावे।

उसी दिन काशी विद्यापीठ के निरीक्षकों की एक सभा होकर यह निश्चय हुआ कि काशी विद्यापीठ का शिक्षा प्रबन्ध आदि गवर्नमेण्ट के अधीन किसी प्रकार से न रहेगा और यहाँ हिन्दुस्तानी भाषा और देवनागरी लिपि के द्वारा यथासम्भव शिक्षा देने का यत्न किया जायगा। यह भी निश्चय हुआ कि बुद्धि का परिष्कार करनेवाली शिक्षा के साथ-साथ हाथ की कारीगरी की भी शिक्षा दी जायगी। इस विचार से कि शिक्षा संस्था के लिये एकाग्रता की अधिक आवश्यकता है, जो राजनीति के क्षेत्र में सम्भव नहीं है, विद्यापीठ के अधिकतर संचालकों के प्रचलित असहयोग आन्दोलन में सम्मिलित रहते हुए भी, और विद्यापीठ की देशोद्धार के उपायों के साथ पूर्णतया सहानुभूति रहते हुए भी यह संस्था कांग्रेस के अधीन नहीं रखी गई और इसका नैष्टिक अधिकार एक निरीक्षक सभा के अधीन किया गया। और निरीक्षक सभा ने विद्यापीठ के दिन-दिन के कार्य के निर्वाह के लिये एक प्रबन्ध समिति को नियुक्त कर दिया।

आरम्भोत्सव के समय श्री भगवानदास ने निम्नलिखित भाषण किया :—

डा० भगवानदास का भाषण—

ॐ शं नो मित्रः, शं वरुणः, शं नो भवतु अर्यमा,
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः।
ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः, भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः,
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः।
ॐ सह नो अवतु सह नो भुनक्तु सह वीर्यं करवामहै,
तेजस्विनो अधीतमस्तु मा विद्धिषामहै।

ॐ हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखं ।
तत् त्वं पूषन् अपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ।
ॐ यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च
विश्वाधिपो रुद्रो महर्षिः ।
हिरण्यगर्भं पश्यति जायमानं
स नो बुद्धया शुभया संयुनक्तु ।।
ॐ विद्या चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं स ह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ।।ॐ।।

सज्जनो,

इस देश के पुराने इतिहास में संसार के नाटक का रूपक तरह-तरह से दिखाया है । एक जगह लिखा है कि देव और असुर, आदित्य और दैत्य, सौतेले भाई हैं । एक पिता कश्यप, और दो माता अदिति और दिति, की सन्तान हैं । अदिति और दिति भी सगी बहिन हैं । और इन्हीं दोनों की अर्थात् देवों और असुरों की आपस की लड़ाई और मेल से संसार का इतिहास बनता है । इस रूपक का अर्थ दूसरे ग्रन्थों से मालूम होता है । निरुक्त में लिखा है—

"पश्यकः कश्यपो भवति, पश्यकः सूर्यः ।"

सूर्य, जो इस ब्रह्माण्ड के प्रत्यक्ष देवता, सविता और 'पश्यक' अर्थात् देखने वाले हैं, उन्हीं का नाम पृथ्वी के सम्बन्ध में 'कश्यप' हो जाता है । तथा पृथ्वी के ही नाम अदिति और दिति हैं । जिस रूप में परार्थ और विद्या प्रधान हैं उस रूप का नाम अदिति है । जिस रूप में स्वार्थ और अविद्या अधिक है उसका नाम दिति है । वही जीव जिस हालत में स्वार्थ उसके मन में अधिक होता है, असुर कहलाता है । और जब परार्थ उसके मन में अधिक होता है, तब देव कहलाता है जो जीव एक कल्प में, एक समय में देवता होते हैं, वे ही दूसरे कल्प में, दूसरे समय में असुर होते हैं, और फिर दूसरे काल में असुर से देव हो जाते हैं । जो लोग जीव को अमर मानते हैं और पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं, उनको यह मानना सहज है। और इस लोक में, तथा अपने-अपने मन की वृत्तियों में भी, हर एक मनुष्य को यह बात प्रत्यक्ष मालूम होती है, कि एक ही आदमी के मन में कभी पुण्य के भाव उदय होते हैं, कभी पाप के । जब देवताओं में भी परार्थबुद्धि, और पुण्य के भाव घटते हैं, और पापबुद्धि बढती है और असुरों में तपस्या और पुण्य बढ़ते हैं, तब देवता हार जाते हैं, और असुरों का राज्य संसार में हो जाता है । फिर काल पाकर जब असुरों में स्वार्थ और पाप बहुत हो जाता है, और देवता तपस्या करके पुण्य इकट्ठा कर लेते हैं, तब देवताओं का राज अपने लोक में हो जाता है, और असुर अपने लोक में ही राजा रह जाते हैं। इसी अनन्त चक्र का नाम संसार है, और इसी की गति का ब्योरेवार बयान इतिहास

तवारीख कहलाता है। पुराण के रूपक के और भी अर्थ हो सकते हैं, पर यह एक मुख्य अर्थ है। इसी भाव को लेकर गीता में दो चाल की सम्पत् समयाचार, शिष्टता का, अर्थात् दैवीसम्पत् और आसुरीसम्पत का जिक्र किया है।

द्वो भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन् दैव आसुर एव च।

आजकल के अंग्रेजी शब्दों में इनको "एग्रिकल्चरल्-पास्टोरल् सिविलिजेशन्" और "मिकैनिकल इंडस्ट्रियल सिविलिजेशन्" अथवा "इण्डिविजुएलिस्टिक्" और "सोश-लिस्टिक" भी कह सकते हैं। दूसरे शब्दों में इनको "कृषि-गो-प्रधान शालीनता" और "वार्ता-शिल्प-यंत्र-प्रधान शालीनता" अथवा "एकैकसत्ता-प्रधान सभ्यता" और "समाज-सत्ता-प्रधान सभ्यता" इत्यादि भी कह सकते हैं।

जिस सम्पत् में, जिस समयाचार में, अभय, अहिंसा, सत्य, दया, अलोलुपता, त्याग, शान्ति आदि गुण अधिक हों, कृषि, पशुपालन, छोटी हाथ की कलों का व्यवहार अधिक हो, बिना जूआ चोरी और कुटिलता के वाणिज्य से जीवन का निर्वाह हो, अन्न, जल, दूध, दही, फल मूल आदि से शरीर का धारण हो, प्रकृति देवता की सुन्दरता, झरना, नदी, पर्वत, वन, उपवन, सूर्य, चन्द्र, तारा, नक्षत्र, बादल, बिजली, अग्नि, वायु, समुद्र, आदि की शोभा का आदर अधिक हो, परस्पर स्नेह प्रीति का भाव और विवाह-सम्बन्ध का आदर अधिक हो, मनुष्यों में शक्तियों और गुणों की बराबरी न होते हुए भी खाने पहिरने का कड़ा दुःख बहुतेरों को न होता हो, हर आदमी को एक एक हक के साथ एक एक फर्ज भी दिया हो, एक एक अधिकार के साथ एक एक कर्त्तव्य लगाया हो, धर्म और कर्म का और काम और दाम का बटवारा योग्यता के अनुसार किया हो, प्राणशक्ति से काम अधिक और बड़े बड़े यन्त्रों से काम कम लिया जाता हो—जिस संपत् में यह सब हो उसको दैवी संपत् कहते हैं।

जिस संपत् में दंभ, दर्प, अभिमान, क्रोध, लड़ाई, हिंसा, धन का अत्यन्त लोभ, संसारी सुखों की अत्यन्त लालच, दुर्बल के ऊपर निर्दयता, और तरह-तरह की दुनियावी हिर्स हवस और अशान्ति बहुत हो, बड़ी कलों और खानों के कारखाने बहुत हों, रोज़गार में जूआ चोरी और कुटिलता अधिक हो, हजारों दूसरे आदमियों को बर्बाद करके एक ही दिन में आप अकेले करोड़पति हो जायं ऐसी हिर्स हर आदमी के मन में भरी हो, बहुत गोश्त, शराब, गाँजा, भाँग, अफीम का भोजन हो, प्रकृति की शक्तियों को काबू में करके थोड़े आदमी बहुत ऐश आराम करें और बहुतेरे आदमी सताये जायँ, गरीबी और अमीरी का फरक अत्यन्त बढ़ जाय, मूठी भर आदमी बहुत अमीर और अधिकतर आदमी अत्यन्त दरिद्र हो जायँ, बड़े बड़े देशों की खेती और पशु पालन और खान की खुदाई वगैरह की भारी मेहनत की पैदावार गिने हुए शहरों के ऐश में खर्च हो जाय, थोड़े से आदमी सब हक और सब अधिकार अपने हाथ में कर लें और सब फर्ज और कर्त्तव्य बाकी जनता

समूह पर डाल दें—जिस इन्तिजाम में ऐसा हो उसको इस देश के पुराने लफ्ज़ों में आसुरी संपत् कहते हैं।

गीता के जिन श्लोकों में इन दोनों का संपदों का जिक्र किया है उनकी पूरी टीका रामायण की कहानी है। अयोध्या और उसके आस-पास के बहुत से राज्यों और गाँवों की बस्ती का स्वरूप दैवी संपत् का है। लंका के अकेले बड़े भारी शहर का स्वरूप आसुरी संपत् का है। लंका का राजा बड़ा प्रतापी, बड़ा धनवान्, बड़ा सुन्दर भी था। पर उसकी शोभा, उसकी संपत्ति और समृद्धि, उसकी दौलत हश्मत, कायम रखने के लिये सारी पृथ्वी रुलाई जाती थी। इसी कारण उसके राजा का नाम रावण हुआ। लोकान् राव-यतीति रावणः। जो सब लोकों को रुलावे।

पर रावण को सहज में लंका का राज नही मिला। उसने बड़ी तपस्या की। अपने सिर काट-काटकर आग में हवन कर दिया। तब उसको प्रकृति के देवताओं पर काबू मिला, आकाश में उड़ने को पुष्पक-विमान मिला, कुबेर की खानों का धन मिला, सोने की लंका मिली, वरुण देवता के घर समुद्र में भी पैठने की ताकत मिली, जमीन पर वायुवेग से गति हुई।

इधर दशरथ से भी कई-कई भूल बन पड़ी। विष्णु को भी शाप लगे। देवताओं में पाप की वृद्धि हुई। घर में कलह हुआ। राम का राज कष्ट में पड़ा। उनको बनवास करना पड़ा। और रावण ने सीता को भी चुरा लिया। सीता शब्द का एक अर्थ खेती की जमीन भी है, ऐसा संस्कृत कोष से विदित होता है।

इस आखिरी चोरी से, स्त्रियों और बालकों पर भी अत्याचार करने से, निर-पराध निःशस्त्र बूढों और मुनियों की भी हत्या करने से, और पश्चाताप प्रख्यापन और प्रायश्चित न करने से, रावण के पुण्य का क्षय हो गया, पाप उदय हुआ। इधर राम की तपस्या से उनके पुण्य का उदय हुआ, उनके अच्छे सहायक मिले, रावण का नाश हुआ, सीता वापस मिली, रावण के स्थान पर उसके भाई विभीषण राजा हुए, और राम को आपत्काल की तपस्या के बाद अयोध्या की दैवी संपत् का स्वराज फिर मिला।

यही रूपक आज-कल की अवस्था का है। पच्छिम की जातियों ने बड़ी तपस्या की है। बड़ी विद्या का, बड़ी बुद्धि का, संग्रह किया है। पूर्व के देशों के मुकाबिले दशगुनी विज्ञान-शक्ति उनकी हो रही है। दशग्रीव, दशमौलि, उनका नाम होना उचित ही है। और उनके अच्छे-अच्छे बड़े-बड़े बुद्धिमान् और साहसी, शिरोभूत, कौम के सिरताज, मनुष्यों ने अपना प्राण हवन कर-करके अपनी जाति के लिये नये-नये यन्त्र-तन्त्र, नये-नये हवाई विमान, और गोताखोर जहाज, और बिजली की कलें पैदा की हैं। साक्षात् वायु-देवता, अग्निदेवता, वरुण देवता, विद्युत् अर्थात् इन्द्र देवता को जीतकर नौकर बना लिया है। इधर पूर्व की जातियों में पाप और कलह की वृद्धि हुई है, तपस्या कम हो गई, विद्या

खो गई, परस्पर के श्रद्धा विश्वास मिट गये, वीरता जाती रही, रोजगार मारे गये, दंभ, अहंकार, पवित्रम्मन्यता, वर्णप्रशंसिता, जातिविद्वेष, अन्योन्यतिरस्कार, अन्योन्यभय, बकधर्म, मिथ्यावृत्ति, तामसी बुद्धि, परस्पर कलह, कायरपन, तथा गाँजा, भाँग, अफीम, शराब वगैरह का इस्तेमाल, बहुत बढ़ गया। इन्हीं कारणों से पूरब का स्वराज्य पच्छिम के हाथ में चला गया, और सीता भी चोरी हो गई। खेती की जमीन का मालिक विदेशी राजा बन गया।

इस स्वराज्य और सीता के वापस पाने का उपाय सिवाय तपस्या और चित्तशोधन के, और आपस का कलह कम करने के, और जीवन के जो-जो अनुचित प्रकार हैं जिनसे हमारा जातीय-जीवन रोज़-रोज़ भीतर से खोखला और दुर्बल होता जाता है, उन सब प्रकारों से असहयोग करने के, और जिन उचित प्रकारों से वह जातीय बलवान् और शुद्ध हो उन प्रकारों को आपस में घना सहयोग करके फिर से जगाने के—इसके सिवाय और कोई दूसरा उपाय नही है। याद रखने की बात है कि सच्चा स्वराज वही है जिसमें उत्तम "स्व" का राज हो, अधम और नीच "स्व" का नहीं।

रामायण के रूपक और इस समय की अवस्था में एक भारी भेद है। वह लड़ाई अस्त्र-शस्त्र से हुई थी। यह लड़ाई बिना अस्त्र-शस्त्र की है। इसका उदाहरण पुरानी तवारीख में दूसरा है।

विश्वामित्र नम्रभाव से अपनी सेना दूर छोड़कर, वसिष्ट के पास नमस्कार करने को गये। वसिष्ठ ने उनकी सेना को बुलाकर उनको अपनी कामधेनु की ऋद्धियाँ दिखलाई। कामधेनु और गौ भी निरुक्त में पृथ्वी का ही नाम कहा है। वसिष्ठ ने चाहे शुद्ध अतिथि सत्कार के भाव से ऐसा किया हो, अथवा संभवतः उनके मन में अपनी शक्ति और समृद्धि दिखाने के अभिमान, अहंकार का भी भाव आ गया हो, विश्वामित्र के मन में ईर्ष्या और लोभ पैदा हो गये। लड़ाई शुरू हुई। जब तक शक, पल्हव आदि बाहरी जातियों की सहायता लेकर अस्त्र-शस्त्र से वसिष्ठ ने लड़ाई की तब तक विश्वामित्र की जीत हुई। वसिष्ठ हारते रहे। अंत में वसिष्ठ ने ब्रह्मदंड उठाया। उसने विश्वामित्र के शरीर को हानि पहुँचाने का यत्न नहीं किया। केवल विश्वामित्र के सब अस्त्र-शस्त्रों को ग्रस लिया, सह लिया। ज्ञान और क्षमा का ही नाम ब्रह्मदंड है। इसका फल यह हुआ कि विश्वामित्र का शरीर नहीं हारा पर उनकी तबियत ही हार गई।

धिग्बलं क्षत्रियबलं ब्रह्मतेजो बलं बलं।

ऐसा कह कर उन्होंने क्षत्रिय वृत्ति छोड़कर ब्राह्मणवृत्ति अंगीकार की। यही उत्तम विजय है। शत्रु का सबसे गहरा नाश यह है कि उसकी शत्रुत्व-बुद्धि नष्ट हो जाय और वह मित्र हो जाय।

यह समय भारतवर्ष के लिये ऐसी लड़ाई लड़ने का है जिससे प्रचलित शासन-पद्धति का नाश बिना अस्त्र-शस्त्र के हो जाय, अर्थात् उसका प्रकार भीतर से बदल जाय । इस लड़ाई में कोई व्यक्ति या जाति से द्वेष का काम नहीं । क्योंकि न सब अंग्रेज बुरे ही हैं, न सब हिन्दुस्तानी अच्छे ही हैं । लंका में भी मंदोदरी और त्रिजटा और विभीषण थे, और भारतवर्ष में भी कैकेयी और मंथरा और बाली थे । हमारे देश की कोई-कोई राज-रियासतों की हालत अंग्रेजी राज से भी बहुत बुरी है। यदि हमारा चित्त और चरित्र सर्वथा शुद्ध होता तब हम यह कह सकते कि पश्चिम की जातियाँ हमारे मुकाविले बहुत बुरी हैं । बरअक्स इसके कितनी ही बातों में वे हमसे अभी भी बहुत अच्छी हैं । हमको अभी बहुत तपस्या करने की और अपना चित्त बहुत माँजने की आवश्यकता है ।

ऐसी तपस्या का अवसर विशेष करके ब्रह्मचारी विद्यार्थियों को, तथा वनस्थ और सन्यासियों को होता है। इन्ही पर देश के उद्धार का भार अधिकतर है। दशरथ के दोष का परिमार्जन राम ने किया । जो आदमी गृहस्थी के बंधन में पड़े हैं और दूसरों की ज़िम्मेदारी उठाये हैं उनसे पूरी-पूरी तपस्या बनना कठिन है । पर उनका कर्त्तव्य यह अवश्य है कि जहाँ तक बन पड़े ऐसे ब्रह्मचारियों और संन्यासियों की सहायता करें जो देशभक्ति से देशोद्धार के लिये तपस्या करने का व्रत उठावें ।

महात्मा गांधी जी के चित्त ऐसा जिनका चित्त स्वच्छ हो रहा है, जो उनके ऐसी कड़ी तपस्या और त्याग कर रहे हैं, उनको तो अवश्य अधिकार है कि वे दूसरों को भी उपदेश दें कि तुम भी यह रास्ता पकड़ो । उनको ईश्वर ने यह दिव्य अग्नि दी है जो दूसरों के दिलों में देशभक्ति का दीपक बाल देती है । पर जिनका ऐसा तपोबल और चित्तशुद्धि नही है वे इतना तो जरूर कर सकते हैं कि यथासंभव सहायता दें । और यह बात तो निस्संदेह है कि जो इस कठिन तपस्या को उठावेंगे वे अपनी आत्मा का तथा देश का कल्याण कुछ-न-कुछ करेंगे ही क्योंकि इनका साधन किये बिना देश की आपस के कलह की बुद्धि न मिटेगी ।

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ।।

पर यह सदा याद रखने की बात है कि इस तपस्या में उपद्रव और पारुष्य का स्थान नहीं है । आत्मगौरव और निर्भयता और दृढ़ता के साथ नम्रता और विनय और शान्ति की ही आवश्यकता है ।

ऐसे भावों से प्रेरित होकर कुछ काशीवासियों ने यह निश्चय किया कि ऐसे विद्यार्थियों के लिये जो देश के अधःपात करने वाले और गौरव मिटाने वाले कर्मों से असहयोग करने का व्रत उठा रहे हैं, एक स्थान बना दिया जाय, और उसका आरम्भ महात्मा गांधी जी के हाथों से हो। और ऐसे विद्यापीठ के द्वारा प्रचलित शिक्षा के प्रकार में जो दोष

दिखाई देने लगे है उनका संशोधन भी हो। जोशी दामोदरजी ने १००) मासिक देने का वादा किया है तथा ३०) एक और मित्र ने। तथा श्री शिवप्रसाद गुप्त जी एक इतनी बड़ी पूंजी अपनी संपत्ति में से विशेष विद्याप्रचार के वास्ते अलग करके एक धर्मार्थ खाता कायम करना चाहते हैं जिससे चालीस हजार रुपया साल की आय हो, और जब तक उसका प्रबन्ध नहीं हो जाता उसकी आय का अधिकांश अर्थात् प्रायः तीन हजार रुपया महीना इस काशी विद्यापीठ को देंगे। जिस स्थान में हम लोग एकत्र हैं यह किराये पर दो वर्ष के लिये ले लिया गया है। श्री कृपलानी महाशय ने काशी विश्वविद्यालय की वैतनिक नौकरी छोड़ कर यहाँ अवैतनिक होकर उपाध्यक्ष का और अर्थशास्त्र के अध्यापक का काम करना स्वीकार किया है। तीन और मित्रों ने अवैतनिक रूपेण् भिन्न-भिन्न शास्त्र पढ़ाना स्वीकार किया है। तीनों एम० ए० परीक्षा पास किये हैं, और एक बारिस्टर और एक एल-एल० बी० भी हैं, पर बारिस्टरी और वकालत नहीं करते। पण्डित यज्ञनारायण उपाध्याय ने अपनी चलती हुई वकालत छोड़कर कुटुंबनिर्वाहार्थ बहुत थोड़ी वृत्ति पर संस्कृताध्यापन का काम स्वीकार किया है, यद्यपि आपकी योग्यता प्रचलित प्रथा के अनुसार बहुत अच्छी है, अर्थात् संस्कृत के एम० ए० और एल० टी० तथा एल-एल० बी० और काव्यतीर्थ भी हैं। तथा दो सहयोगी विद्यार्थी जिनमें से एक ७५) मासिक की स्कालरशिप, डी० एस्-सी० के वास्ते पढ़ने की, छोड़ आये है, वे भी अध्यापन कार्य कुटुम्बनिर्वाह मात्र वृत्तियों पर करेंगे। क्रमशः और अध्यापक भी नियुक्त होंगे। शिक्षा के नये प्रकार के निश्चित हो जाने पर नया क्रम आरम्भ किया जायगा। उसका मुख्य उद्देश्य यह रहेगा कि दुनियाँ और आकबत, संसार और परमार्थ, अभ्युदय और निःश्रेयस, दोनों की बनाने वाली तालीम हो। हाथ की कारीगरी और रोजगार भी सिखाया जाय, और बुद्धि का और शील स्वभाव का भी परिष्कार हो। इसके विषय में अन्य राष्ट्रीय विद्यापीठों से सलाह मिलाकर निश्चय किया जायगा। पर अभी एक वर्ष तक इसका विशेष प्रयत्न किया जायगा कि सब छात्र सूत और कपड़े का काम सीख कर गाँव-गाँव और घर-घर इस भूले हुए आवश्यक कर्म को फिर से जगावें जिसमें यह देश जैसे अपना खाना पैदा करता है और उसका कुछ अंश अपने खर्च में लाय पाता भी है, वैसे अपना पहिरावा भी पहिले के ऐसा आप ही बनाकर इस विषय में भी स्वतन्त्र हो जाय। सब आवश्यकताओं में मुख्य आवश्यकता अन्न के बाद वस्त्र की है। सब व्यापारों में मूल व्यापार गल्ले के बाद कपड़े का है, जिसमें अर्थशास्त्र जानने वाले लोग कहते हैं कि, इस देश की साठ करोड़ रुपये साल की नुकसानी आजकल हो रही है। और हमारे आपस के कलह से सहायता पाते-पाते विदेशियों ने इसी रोजगार का जाल फैलाते-फैलाते हमारा स्वराज्य ले लिया। इसी अपने पुराने और खोये हुए रोजगार को फिर अपने हाथ में करके हम अपना स्वराज्य वापस पा सकेंगे। यदि हमारे देश का अन्न और वस्त्र अर्थात् कपास और ऊन और रेशम हमारे हाथ में रहे,

बाहर न जाय, तो स्वराज्य का मूल साधन तो यही है। स्व-आत्मगौरव, स्वतन्त्र जीविका, स्वतन्त्र शिक्षा, स्वतन्त्र रक्षा, स्वतन्त्र मनबहलाव, यही स्वराज्य का स्वरूप है।

सूत और कपड़े के काम पर अधिक जोर देने के साथ ही साथ इस बात का ध्यान रखा जायगा कि विद्यार्थी अन्य विद्या खो न दें। पूर्वाह्न में इनकी चिन्तनिका जारी रहेगी तथा अपने देश की पुरानी प्रथा के अनुसार, जैसे इतिहास पुराण के वैसे अन्य शास्त्रों के व्याख्यान दिये जायेंगे, जिनको छात्र भी तथा अन्य श्रोता सुन सकेंगे, जिनसे बुद्धि का परिष्कार और ज्ञान की वृद्धि होती रहे।

अभी तक इतना समय नहीं मिला है कि किन्हीं सज्जनों से धन की सहायता माँगी जाय। जिन तीन सज्जनों का पहिले जिक्र किया उन्होंने आप ही आप आकर अपने दान की सूचना कर दी है। मूल जम जाने पर इस शुभ काम के लिये भिक्षा माँगी जायगी और पूरी आशा है कि काशीवासी तथा अन्य नगरनिवासी भारतवासी इसमें उचित सहायता देंगे।

एक सज्जन ने गंगा के तट पर, उस पार लोहे के पुल से कोई आध कोस के फासिले पर, अपने गाँव में पचास बीघा जमीन अभी और क्रमशः पचास बीघा और, इस विद्यापीठ को दान कर देने को कहा है। क्रमशः इस स्थान पर कृषि-शिक्षा विभाग खोलने का विचार है। तथा ऐसी ही और भूमि अवश्य मिलेगी, और उस पर यथा-शक्ति हाथ की कारीगरी और छोटी कलों के कारखाने का काम सिखाने का यत्न किया जायगा।

एक सज्जन ने यह भी सूचना की है कि यदि इसके सम्बन्ध में स्वदेशी भण्डार खोलने का विचार किया जाय तो वे दस हजार रुपये तक बिना सूद के देंगे, दुकान का मुनाफा सब विद्यापीठ को दिया जाय और धीरे-धीरे उनका रुपया लौटा दिया जाय।

यह भी एक सूचना है कि इसी के आसपास एक पंचायत भी प्रतिष्ठित विश्वास-पात्र वृद्ध जनों की बना दी जाय, जिसमें आपस के झगड़ों का तस्फीया लोग करा लें।

इस प्रकार से स्वराज्य के जो तीन मुख्य अंग हैं, अर्थात् शिक्षा, रक्षा और जीविका, उनका बीजारोपण इस स्थान पर हो जायगा, । तथा इतिहास आदि के व्याख्यानों और अन्य सात्विक प्रकार के स्वदेशी मनबहलावों का भी यत्न किया जायगा, क्योंकि ऐसा मनबहलाव भी मनुष्य के जीवन का और स्वराज्य का चतुर्थ आवश्यक अंग है।

जहाँ तक हम लोगों को जान पड़ा है काशी की जनता इस काम का हृदय से शुभ-चिन्तन करती है, और इसकी वृद्धि के लिये पूरी सहायता देगी।

ऐसी अवस्था में प्रबन्ध समिति महात्मा गांधी जी से प्रार्थना करती है कि आप इस काशी विद्यापीठ का आरम्भ अपने पवित्र हाथों से कीजिये ।।ॐ।।

श्री भगवानदास के भाषण के बाद महात्मा गांधी ने यह उपदेश दिया——

महात्मा गाँधी का भाषण

भाई भगवानदास जी, बहनो और भाई लोग—

मेरे हृदय में इस समय एक बात का दु:ख है, उसे मै किसी तरह आप लोगों से छिपा नहीं सकता। यहाँ आने के पहले मै हमारे भाई साहब पंडित मदनमोहन मालवीय के पास गया और पूछा कि क्या आप यहाँ (विद्यापीठ के आरम्भोत्सव में) आते हैं। उन्होंने कहा, नहीं, मेरा वहाँ न जाना ही अच्छा होगा। वे हमारे कितने घनिष्ठ हैं मैं बतला नहीं सकता। आज वे हमारे साथ नहीं हैं। उनको आज यहाँ न देखना हमारे लिये कितना दु:ख है इसका बयान नही कर सकता। पर हमारी लड़त ऐसी है कि यह सब दु:ख बरदाश्त करना होगा। पिता को पुत्र के, पति को पत्नी के, पत्नी को पति के वियोग का दु:ख सहना पड़ेगा। भाई भगवानदास ने सुमधुर शब्दों में हमें बतलाया है कि यह लड़त धर्म्मयुद्ध है, मुझे इस बात में जरा भी संशय नहीं रह गया है, नही तो मैं उसे नष्ट करने का विचार कभी न करता जिसके प्राण मालवीयजी हैं। मेरी आत्मा यही कहती है कि या तो यह मेरा हो जाय या नष्ट हो जाय। यदि मै ऐसा नही करता, तो मैं इसे पाप समझता हूँ। कल मेरे पास कानपुर के कई विद्यार्थी आये। वे वहाँ से पढ़ाई छोड़कर आये है। मैने उनसे पूछा आप लोग पढ़ना छोड़कर क्यों आये। उन्होंने उत्तर दिया, हम लोग चाहते हैं कि इससे बढ़कर कोई अच्छा राष्ट्रीय काम कर सकते। मैंने उनसे कहा, यह सबब अच्छा नही। यदि आप इस ख्याल से पढ़ाई छोड़कर आये होते कि सरकारी सहायता से चलने वाले विद्यालयों में पढ़ना पाप समझते है तभी अधिक लाभ होता। मेरी बात को वे कुछ समझ गये, पर उनकी मुखाकृति से स्पष्ट झलकता था कि उनके हृदय में अभी कुछ संशय रह गया है, क्योंकि उन्होंने प्रश्न किया कि परीक्षा को केवल दो ही मास रह गये हैं।, और यदि हम लोग उपाधि लेकर असहयोग करें तो अच्छा है। मैने कहा कि यह ठीक नही, जब हमें दृढ़ विश्वास हो गया कि विद्यालयों में शिक्षा लेना पाप है तो इसे त्यागना ही उचित होगा। यही तर्कमवालात है। हमारे बिस्तरे के नीचे पचासों वर्ष से साँप छिपा है। हमें उसका पता नहीं। आज हमें एकाएक इसका पता लगता है। हम उस बिस्तरे पर कभी नहीं रह सकते। चाहे हमारे पिता उसको छोड़ने के लिये हमें मना करें, चाहे वे उसके लिये हमें गाली दें, पर हम उस बिस्तरे पर कभी नहीं रह सकते। मैं पिता की आज्ञा नहीं मान सकता, क्योंकि पिता को यह बात मालूम नहीं। उस बिस्तरे पर मेरी शान्ति नहीं रह सकती। यही ख्यालकर अहल्कारी विद्यालयों को छोड़िये। यह समय परीक्षा का है, प्रश्न उठाने का नहीं है।

यही बात हमें यहाँ के विद्यार्थियों से भी कहना है। कल हमें हमारे भाई अंड्रूज का पत्र मिला। उन्होंने लिखा है कि जिस तरह यह काम चल रहा है उस तरह पर

सफलता की आशा उन्हे गुजरात में भी नही है जो हमारा घर है। पर दो स्थानों के लिये वे निश्चिन्त हैं, पटना और काशी। पटना में इसका भार भाई राजेन्द्र प्रसाद के हाथ में हैं। काशी का भार भाई भगवानदास के हाथ में है। इन पर सबका पूरा एतबार है कि ये नष्ट नहीं करेंगे। भाई भगवानदास ने शिक्षा के लिये बहुत काम किया है। अन्य प्रान्तों के काम करने वालों में राजनैतिक प्रवृत्ति अधिक है, इसीलिये वे शिक्षा में ही भाग ले रहे है। काशी और पटना के लिये मै भी निश्चिन्त हूँ। पर भाई अंड्रूज के उत्तर में मैं यह कहना चाहता हूँ कि और स्थानो में भी यह काम राजनीति की दृष्टि से नहीं किया जा रहा है पर धार्मिक दृष्टि से। हम लोगों को असहयोग को सफल करने में अपना चित्त रखना चाहिये। हम लोग विद्या भी ऐसी ही चाहते हैं कि एक वर्ष तक स्वराज्य का काम हो सके, विचार करने की बात है कि स्वराज्य कैसे मिल सकता है। सरकारी सहायता से चलने वाले विद्यालयों का त्याग सम्भव है। लोग कहते हैं कि सरकार के असर में अनाज का त्याग क्यों न करो। मैं इससे सहमत हूँ। पर यह सहज नहीं है। विद्या की प्राप्ति अन्य स्थानों मे भी हो सकती है। भाई भगवानदास ने अभी सीता हरण की कहानी कह सुनाई है। भूमि की सरदारी अपने हाथ में नहीं है। यह अपरिहार्य है। अपरिहार्य को परिहार नही।

यदि उसके बदले में हमें कुछ भी न मिले तो भी सरकारी विद्यालय छोड़ देना चाहिये। आज हमको रावण राज के नेता क्या सुनाते हैं। वे कहते हैं हम आपको साथ रखकर चलना चाहते हैं। हमको उन्हें कह देना चाहिये कि हम आपके हाथ नहीं रहना चाहते, केवल मजबूरी से ही आपका साथ दे रहे है। अली भाइयों का कहना है कि यदि हमें यहाँ कुरान पढ़ने के लिये भी शुद्ध-हृदयता नहीं मिल सकती तो हमें हिजरत करना चाहिये, अर्थात् राज्य का त्याग करना चाहिये। तुलसीदास ने भी मलीन राज्य को त्याग करने के लिये कहा है। पर हम अभी उसका सर्वथा त्याग नहीं कर रहे हैं, उनको भी अभी मौका देंगे। हम अपने चित्त को समझावेंगे कि क्या इस राज्य को दुरुस्त करने का कोई दूसरा उपाय नहीं है। यदि है तो ३० करोड़ के हिजरत की क्या आवश्यकता है। थोड़ा यत्न ही काफी है।

इसीलिये इस विद्यापीठ की स्थापना हो रही है। हमें विद्या ऐसे पुण्यदान को मैले हाथों से नहीं लेना चाहिये। जितने विद्यालय सरकार के असर में हैं, उनसे हमें विद्या नही लेनी चाहिये। जिस विद्यालय पर उनकी ध्वजा फहराती है वहाँ विद्या-दान लेना पापकर्म है। आपको निमन्त्रण है कि यदि आप उसे पाप समझते हैं तो यहाँ चले आइये। केवल इस ख्याल से न आइये कि वहाँ शिक्षा बुरी है और यहाँ अच्छी मिलेगी। इससे आपको पश्चाताप होगा। वहाँ की शिक्षा की बुराई हम भी मानते हैं। एक तो वहाँ अंगरेजी में शिक्षा दी जाती है। अंग्रेजी हमारी मातृ भाषा नहीं है। हमारी राष्ट्रीय भाषा हिन्दुस्तानी है जिसे २१ करोड़ आदमी बोलते हैं। अंग्रेजी को हम मातृ भाषा

का स्थान नही देना चाहते, पर उसे त्यागना भी नही चाहते। वह बड़ी ओजस्वी भाषा है। उसमें व्यापार बहुत चढ़ा-बढ़ा है उसे सीखिये। पर हमारी मातृ भाषा जो स्थानच्युत हो गई है और उसका स्थान दूसरी भाषा ने ग्रहण कर लिया है उसको अपने स्थान पर स्थापित करना आवश्यक है। ऐसी ही और बहुत सी त्रुटियाँ हैं, पर उन्हें दूर करने और नई कार्यप्रणाली स्थिर करने के लिये हम ठहर नही सकते। हम उस झण्डे के नीचे नही रह सकते, जिसकी सलामी करने के लिये हमारे लड़के पंजाब में मजबूर किये गये थे। विद्यार्थियों, अपना दिल स्थिर कीजिये। यदि वह त्याज्य है तो वहाँ की गीता, कुरान, सब छोड़िये। यहाँ आपको वे विशाल भवन नहीं मिलेंगे। यहाँ न मकान है न बड़ी जमीन। झोपड़ी में रहकर काम करना अच्छा है। महल में झण्डे की सलामी बुरी है। जो विद्यार्थी आगे जाना चाहते हैं उन्हे स्पष्ट कहना चाहिये। विद्यालयों की दुरुस्ती करना मेरा काम नही है, उसके लिये मुझे वक्त नहीं। यदि विद्यालय खुलेंगे तो विद्या आप साफ हो जायगी। मैं यहाँ आ गया हूँ, इसका कारण यह है कि भाई भगवानदास और भाई शिवप्रसाद के दिल में असहयोग की प्रतिष्ठा हो गई है। असहयोग को बढ़ाने के लिये ही इस विद्यापीठ की स्थापना की गई है। इस वक्त असहयोग ही हमारे लिये एक शस्त्र है। दूसरे तत्त्वज्ञान मजहबी ज्ञान आदि शास्त्र नही हैं। यहाँ स्वार्थबुद्धि का काम नहीं है। उसे हम हटाना चाहते हैं, उच्च करना चाहते हैं। अगर हम आज सेवा करते हैं तो स्वार्थ से, अपने स्त्री और बच्चों को सुख पहुँचाने की लालसा से। हमको राष्ट्र की सेवा करनी चाहिये। राष्ट्र के लिये हम सब काम करेंगे। हमें व्यापार में जूआ नहीं खेलना है। हम हिन्दोस्तान को पुण्यभूमि बनावेंगे।

यहाँ से हर साल ६० करोड़ रुपये कपड़ों के लिये विदेश चले जाते हैं। इसको रोकने का यहाँ तरीका बताया जायगा। सीता (भूमि) की स्थापना तो लंका से लाकर करना है, पर द्रौपदी के चीरहरण को भी हमें रोकना है। यदि वस्त्र के हरण को नही रोक सकते तो क्या कर सकते हैं। भूमि को अपना करना तत्काल नामुमकिन है, पर वस्त्र नही छीनने देना चाहिये। हम सबको प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि विदेशी वस्त्र धारण करना महापाप है। हिन्दू मुसलमान को यह बात सुनाने में बड़ा सुभीता है क्योंकि दोनों का संयम और त्याग धर्म है। विदेशी कपड़ा पहनना पाप है। पहला धर्म चरखा चलाना है विद्यालय को चलाने वाले इसे याद रखेंगे। हम लोग विद्यार्थियों के जरिये ६० करोड़ रुपया बचा सकते हैं। इसको बचाइये। विद्यार्थी यही करें। इसी से हमारी आर्थिक शुद्धि होगी।

दूसरा कर्त्तव्य अपनी मातृभाषा को बढ़ाना है। इसे लिख पढ़ न सकना शर्म की बात है। जो कुछ अंग्रेजी में तालीम मिली है उसे मातृभाषा में हजम कीजिये। हिन्दू-

मुसलमानों की कैसे सेवा हो सकती है इसे सीखना है। हमें उर्दू और देवनागरी दोनों लिपि सीखना चाहिये। हमें वही हिन्दी चलाना है जिसमें संस्कृत और उर्दू मिली हो जिससे हिन्दू-मुसलमान एक -दूसरे के हृदय में प्रवेश कर सकते हैं। अंग्रेज कहते हैं कि यह मेल दिखौवा मात्र है। हिन्दू मुसलमानों का मेल कभी नहीं हो सकता। यह केवल अपने-अपने मतलब के लिये है। जहाँ मतलब सिद्ध हुआ कि फिर वही हालत हो जायगी। पर यह कहना व्यर्थ है। यदि हिन्दू और मुसलमान परस्पर रक्षा के लिये कटिबद्ध है तो यह नही हो सकता।

गुरु विद्यार्थी को खींच सकता है। भाई भगवानदास ऐसे गुरु हैं। आपकी विद्वत्ता सारा भारत जानता है। जिस समय गुजरात में राष्ट्रीय विद्यालय खुल रहा था उस समय मैंने आपसे प्रार्थना भी की थी कि आप काशी छोड़कर थोड़े दिन के लिये गुजरात में आ जायें। आपके वे आचार्य हैं। मैं उनसे प्रार्थना कर सकता हूँ। कृपलानी तो हमारे छोटे भाई हैं। उनको तो हुक्म देने का अधिकार रखता हूँ। अन्य महाशय जिनका नाम भगवानदास जी ने लिया है उनको मैं स्वयं नहीं जानता। इस कारण यहाँ मैं प्रार्थना करता हूँ कि काशी अब ऐसी होनी चाहिये कि सारे भारत की इस पर दृष्टि हो।

हमें मालवीयजी का चित्त हरण करना चाहिये। मालवीयजी ने मुझसे कहा है कि अगर मेरे चित्त में विश्वास हो जाय कि ऐसा करना ठीक है तो मैं हिन्दू विश्वविद्यालय छोड़ दूँ। उनका कहना है कि छोड़ने से हिन्दुस्तान की हानि है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम उनको बतलावें कि न छोड़ने में हानि है। इस विद्यालय को आप लोग सुशोभित कीजिये। इससे यह कार्य दक्षता, यत्न और शीघ्रता से चलेगा। हमारे माननीय भाई मालवीयजी भी समझ जायेंगे। अगर हिन्दू-मुसलमान यहाँ मिलकर काम करेंगे तो हमारा स्वराज्य आपके मारफत आ जायगा। इसी अभिलाषा से मैंने शिवप्रसाद और जवाहरलाल से कहा था कि इस कार्य का आरम्भ मेरे हाथ से कराइये। जो मेरी आशा थी सो मैंने आपको सुना दिया। प्रभु से मेरी प्रार्थना है कि दिन-प्रतिदिन इसकी वृद्धि हो और यह विद्यालय राक्षसी सलतनत को दुरुस्त करने में हिस्सा ले।

(काशी विद्यापीठ, पंचांग, सम्वत् १९८६ से ९१)

संकल्प-पत्र

१–इस संस्था का नाम काशी विद्यापीठ है।

२–इस संस्था के उद्देश्य हैं—

अध्यात्मविद्या की नींव पर प्रतिष्ठित भारतीय शिष्टता के संस्कार और विकास में, तथा भारत में बसी हुई सब जातियों के भारतीय समाज में यथास्थान सन्निवेश और भारत में प्रचलित आचार-विचारों के समुचित समन्वय में, तथा स्वाधीनता और स्वदेशप्रेम के भाव के साथ साथ लोक-सेवा और मानव-मात्र की बन्धुता के भाव के संचार में, तथा संसार के प्राचीन और नवीन शास्त्र शिल्प कला ज्ञान विज्ञान आदि की वृद्धि और प्रचार करने में सहायता देना, और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये निम्नलिखित कार्य करना—

(क) ऐसी संस्थाओं का स्थापन करना, कराना, सम्मिलित करना, चलाना, या आवश्यकतानुसार सहायता करना, जो किसी प्रकार से गवर्नमेण्ट से सहायता न लेवें और उसके अधीन न हों, और जो ऐसे प्रकार से हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि द्वारा शिक्षा दें जो भारतवर्ष की अवस्था और आवश्यकताओं के अनुकूल और उपयोगी हो। ऐसी संस्थाओं के लिये, जो दूसरे प्रान्तों में स्थापित हों जहाँ की प्रान्तीय भाषा हिन्दी नहीं है और विद्यापीठ में सम्मिलित होना चाहें, हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि द्वारा शिक्षा देना आवश्यक न होगा। वे अपनी प्रान्तीय भाषा और लिपि द्वारा शिक्षा दे सकेंगी। परन्तु उनके पाठक्रम में हिन्दी भाषा और नागरीलिपि के ज्ञान का स्थान अनिवार्य होगा।

(ख) शिक्षा के सम्बन्ध में नये प्रकारों की परख करना।

(ग) संस्थाओं को सम्मिलित करने के लिये नियम बनाना और सम्मिलित संस्थाओं का समय-समय पर निरीक्षण करना।

(घ) योग्य विद्यार्थियों को प्रतिष्ठा-पत्र आदि देना और विशिष्ट विद्वानों और लोकहितकारियों को सम्मान के चिह्न भेंट करना।

(च) अध्यापकों तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं का नियंत्रण, नियोजन आदि करना, और उनको वृत्ति-पुरस्कार आदि देना, और उनके कार्य के नियम बनाना।

(छ) विविध शास्त्रों और कलाओं के वर्धन के लिये जो दान मिलें उनका यथोचित प्रबन्ध और प्रयोग करना।

(ज) विद्यार्थियों तथा गवेषकों को भारतवर्ष में अथवा विदेशों में अध्ययन अथवा गवेषण करने के लिये वृत्तियाँ देना और तत्सम्बन्धी नियम बनाना।

(झ) छात्रावास, पुस्तकागार, योग्याशाला, वेधालय, शिल्पागार, कृषिक्षेत्र आदि का स्थापन करना और चलाना।

(ट) विद्यापीठ के उद्देश्य की पूर्ति के लिये, तथा विद्यापीठ और सम्मिलित संस्थाओं के अध्यापकों और अध्येताओं के और सर्वसाधारण के काम के लिये प्रायः हिन्दी भाषा और नागरी लिपि में शिक्षाप्रद व्याख्यान दिलाने और ग्रन्थ, निबन्ध आदि के प्रकाश करने का प्रबन्ध करना।

(ठ) विद्यापीठ तथा सम्मिलित संस्थाओं के विद्यार्थियों को अध्ययन समाप्त करने पर उचित जीविका प्राप्त करने में सहायता देना।

(ड) उक्त उद्देश्यों के साधन के लिये धन तथा चल और अचल सम्पत्ति एकत्र करना, और जायदाद खरीदना या पट्टे पर, किराये पर, दान में, बदले में, या अन्य किसी प्रकार से लेना, उसकी रक्षा और वृद्धि करना, तथा आवश्यकतानुसार उसको अलग करना। और उन सब स्वत्वों अधिकारों को प्राप्त करना जिनकी आवश्यकता संस्था के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिये प्रतीत हो।

(ढ) अन्य सब ऐसे कार्य करना जिनसे शास्त्र और शिल्प आदि की वृद्धि और प्रचार में तथा भारतीय शिष्टता की पुष्टि, संस्करण और विकास में सहायता मिले।

पहली निरीक्षक सभा

३—काशी विद्यापीठ का नैष्ठिक अधिकार एक निरीक्षक सभा के हाथ में रहेगा। यह सभा इस संस्था का नियमन करेगी। पहिली निरीक्षक सभा के सदस्य, जो यावज्जीवन सदस्य रहेंगे, ये हैं :—

(१) श्री महात्मा मोहनदास करमचन्द गांधी, किसान, सूत कातनेवाले, सत्याग्रह आश्रम, साबरमती।

(२) श्री लाला लाजपतराय, सम्पादक, १२, कोर्ट स्ट्रीट, लाहौर।

(३) श्री भगवान्‌दास जी, जमीदार, सेवाश्रम, सिगरा, काशी।

(४) श्री अमरनाथ वन्द्योपाध्याय, डाक्टर, हौजकटोरा, काशी।

(५) श्री पुरुषोत्तम दास टंडन, मंत्री, पंजाब नेशनल बैंक, लाहौर।

(६) श्री जवाहरलाल नेहरू, आनन्दभवन, प्रयाग।

(७) श्री जमनालाल बजाज, महाजन, वर्धा, मध्यप्रान्त।

(८) श्री सीताराम साहू, जमींदार, लक्सा, काशी ।
(९) श्री गोविन्द वल्लभ पन्त, वकील, नैनीताल ।
(१०) श्री गणेशशंकर विद्यार्थी, सम्पादक, प्रताप, कानपुर ।
(११) श्री कृष्णकान्त मालवीय, सम्पादक, अभ्युदय, प्रयाग ।
(१२) श्री नरेन्द्रदेव, जमींदार, कोठापार्चा, फैजाबाद ।
(१३) श्री श्रीप्रकाश, जमींदार, सेवाश्रम, सिगरा, काशी ।
(१४) श्री कृष्णचन्द्र शर्मा, वैद्य, कालभैरव, काशी ।
(१५) श्री दामोदरदास साहू, जमींदार, ठठेरी बाजार, काशी ।
(१६) श्री दामोदर जोशी, जौहरी और महाजन, सूतटोला, काशी ।
(१७) श्री शिवप्रसाद गुप्त, महाजन, सेवा उपवन, नगवा, काशी

निरीक्षक सभा के प्रथम अधिकारी ये हैं जो पाँच वर्षों के लिये होंगे—

१– श्री भगवान् दास जी (अध्यक्ष)
२–श्री अमरनाथ वंद्योपाध्याय (उपाध्यक्ष)
३–श्री दामोदर जोशी (कोषाध्यक्ष)
४–श्री शिवप्रसाद गुप्त (मंत्री)

उपर्युक्त संकलपपत्र के अनुसार हम सदस्य, जिनके हस्ताक्षर नीचे दिये जाते हैं, चाहते हैं कि सन् १८६० ई० के २१ वें विधान के अनुसार इस संस्था की रजिस्ट्री की जाय—

१–भगवानदास
२–अमरनाथ बनर्जी
३–जोशी दामोदर
४–सीताराम साहू
५–श्रीप्रकाश
६–नरेन्द्रदेव
७–शिवप्रसादगुप्त

उपर्युक्त सज्जनों ने मेरे सामने हस्ताक्षर किया ।

साक्षी—विश्वनाथ शर्मा, हौजकटोरा, काशी

मिति—१४ श्रावण २९–७–१९२७

(काशी विद्यापीठ, पंचांग, सम्वत् (१९८६ से ९१)

काशी विद्यापीठ

अध्यापकों की सूची (१९२१-१९४७ तक)

१–श्री भगवानदास-दर्शन
२–श्री नरेन्द्रदेव–इतिहास

३–श्री श्रीप्रकाश–अंग्रेजी, राजशास्त्र
४–श्री जीवतराम भगवानदास कृपालानी–राजशास्त्र
५–श्री बीरबल सिंह–योरोपीय इतिहास, राजशास्त्र
६–श्री यज्ञनारायण उपाध्याय–संस्कृत
७–श्री गोपाल शास्त्री–भारतीय दर्शन, संस्कृत
८–श्री नरसिंह दास–अर्थशास्त्र
९–श्री विजयानन्द त्रिपाठी–हिन्दी
१०–श्री जगन्मोहन वर्मा–हिन्दी
११–श्री दीपनारायण वर्मा
१२–श्री यमुना प्रसाद
१३–श्री ज्ञानचन्द्र
१४–श्री मोहनलाल मिश्र
१५–श्री गांगेय नरोत्तम शास्त्री–संस्कृत
१६–श्री कामता प्रसाद
१७–श्री धर्मवीर–गणित
१८–श्री विश्वनाथ अनन्त केसकर–दर्शन
१९–श्री रामशरण–अर्थशास्त्र
२०–श्री सम्पूर्णानन्द–अन्तर्राष्ट्रीय विधान, दर्शन
२१–श्री प्रेमचन्द–हिन्दी, प्रधानाध्यापक
२२–श्री योगेश्वर चट्टोपाध्याय–मनोविज्ञान, साधारण विज्ञान
२३–श्री लक्ष्मणदत्त–प्रधानाध्यापक, साधारण ज्ञान
२४–श्री काशीपति त्रिपाठी–प्रधानाध्यापक, अंग्रेजी
२५–श्री बलदेव मिश्र–गणित
२६–श्री योगेश्वर झा–संस्कृत
२७–श्री नजीर अली–उर्दू
२८–श्री रुद्रदेव शास्त्री–संस्कृत, भारतीय संस्कृति
२९–श्री लक्ष्मणदास (मुनीमजी)–संगीत
३०–श्री राजाराम शास्त्री–दर्शन
३१–श्री कृष्णचन्द्र शर्मा–वैद्यक
३२–श्री जीवन राम शास्त्री––गणित
३३–श्री दशरथि मुखोपाध्याय––विज्ञान
३४–श्री रामशरण महथा––साधारण ज्ञान
३५–श्री जयचन्द्र विद्यालंकार––इतिहास

३६–श्री मुकुन्दी लाल श्रीवास्तव––हिन्दी
३७–श्री राजवल्लभ सहाय––हिन्दी
३८–श्री कालिका प्रसाद––हिन्दी
३९–श्री राम प्रसाद पाण्डेय––हिन्दी
४०–श्री रामसखि सिंह––हिन्दी
४१–श्री रमेश दत्त पाण्डेय––अंग्रेजी
४२–श्री भगवती सिंह––शिल्प, हिन्दी
४३–श्री विश्वनाथ सिंह––राजशास्त्र
४४–श्री मोती चन्द्र––इतिहास
४५–श्री रुस्तम सैटिन––अर्थशास्त्र
४६–श्री रियाजुद्दीन हैदर––योरोपीय इतिहास
४७–श्री हैदर मिर्जा––राजशास्त्र
४८–श्री ताहिर अली––इतिहास
४९–श्री सुकुमार मित्र––अंग्रेजी
५०–श्री चण्डी प्रसाद––साधारण ज्ञान
५१–श्री दामोदर पाण्डेय––संस्कृत
५२–श्री विक्रमादित्य त्रिपाठी––संस्कृत
५३–श्री रामदेव––दर्शन
५४–श्री चन्द्रशेखर अस्थाना––अर्थशास्त्र
५५–श्री भगवती प्रसाद पांथरी––इतिहास
५६–श्री कपिलदेव उपाध्याय––अर्थशास्त्र
५७–श्री काशी प्रसाद मुकर्जी––अंग्रेजी
५८–श्री बालकृष्ण विश्वनाथ केसकर––इतिहास
५९–श्री त्रिभुवन नारायण सिंह––अर्थशास्त्र
६०–श्री चन्द्र दत्त––योरोपीय इतिहास
६१–श्री डा० सत्यनारायण सिंह––इतिहास
६२–श्री विश्वेश्वर प्रसाद सिंह––राजशास्त्र
६३–श्री गोरावाला खुशालचन्द जैन––इतिहास
६४–श्री रमाशंकर पाण्डेय––समाजशास्त्र
६५–श्री सत्यदेव विद्यार्थी––इतिहास
६६–श्री विजय नारायण साही––अंग्रेजी
६७–श्री दुलारे लाल––हिन्दी
६८–श्री मुकुट बिहारी लाल––राजशास्त्र

विद्यापीठ के स्नातक

(१९२१–'४६)

संवत् १९८०–८१

१–श्री अलगूराय शास्त्री
२–श्री चन्द्रशेखर पाण्डेय
३–श्री गोकुल चन्द्र

संवत् १९८१–८२

४–श्री त्रिभुवन नारायण सिंह
५–श्री बालकृष्ण विश्वनाथ केसकर
६–श्री शारदाप्रसाद अस्थाना
७–श्री हरिहरनाथ
८–श्री हरिप्रसाद सिंह
९–श्री गुरुशरण लाल श्रीवास्तव
१०–श्री इन्द्र बहादुर सिह
११–श्री राजा राम
१२–श्री दुलार सहाय
१३–श्री रामसखि सिंह
१४–श्री लालवहादुर वर्मा
१५–श्री जीवनराम शर्मा
१६–श्री विश्वनाथ दामोदर सोलापुरकर
१७–श्री दिवाकर प्रसाद वर्मा

संवत् १९८२–८३

१८–श्री चन्द्रदत्त पाण्डेय
१९–श्री कन्हैया लाल
२०–श्री देवव्रत
२१–श्री राजाराम शास्त्री
२२–श्री वृजमोहन लाल
२३–श्री कमलापति त्रिपाठी
२४–श्री परिपूर्णानन्द वर्मा
२५–श्री विभूति मिश्र
२६–श्री गोपाल झा
२७–श्री जनार्दनपति त्रिपाठी
२८–श्री सुमंगल प्रकाश
२९–श्री राजकुमार पाण्डेय
३०–श्री सन्त
३१–श्री सत्यदेव

संवत् १९८३–८४

३२–श्री बदरीविशाल शर्मा
३३–श्री ऋषिनारायण शर्मा
३४–श्री युगलकिशोर सिंह
३५–श्री रूपनारायण त्रिपाठी
३६–श्री राजाराम पाण्डेय
३७–श्री वृजभूषण लाल त्रिपाठी

संवत् १९८४–८५

३८–श्री विनायक स० दांडेकर
३९–श्री शान्ति स्वरूप
४०–श्री रामकुमार शर्मा
४१–श्री रामनन्दन मिश्र
४२–श्री ध्रुवनारायण त्रिपाठी

संवत् १९८५–८६

४३–श्री श्यामाचरण झा
४४–श्री जयमंगल प्रसाद सिंह
४५–श्री सत्यनारायण
४६–श्री वासुदेव झा
४७–श्री बद्री सिंह
४८–श्री वेंकटेश्वर
४९–श्री रामशरण मेहता

५०—श्री हरिचरण दयाल दीक्षित

५१—श्री गुरूनाथ महादेव जोशी

संवत् १९८६–८७

५२—श्री गोकुल दास

५३—श्री नागेश्वर मिश्र

५४—श्री गोपाल कृष्णय्या

५५—श्री भालचन्द्र आवटे

५६—श्री गुणवन्त अ० देशमुख

५७—श्री त्र्यम्बक वि० मोहरिर

५८—श्री हरिवंश सिंह

संवत् १९८७–८८

५९—श्री शरच्चन्द्र पटनायक

६०—श्री का० न० रामन्ना

६१—श्री शंकर वामन पुरोहितं

६२—श्री भगवती सिह

संवत् १९९१

६३—श्री भागवत प्रसाद

६४—श्री वेंकट राव

६५—श्री ओंकारनाथ

६६—श्री रमण लाल

संवत् १९९४

६७—श्री आत्माराम अत्रे

६८—श्री नानालाल पारेख

६९—श्री तारकेश्वर पांडेय

७०—श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद

७१—श्री हीरालाल पालित

७२—श्री दिवाकर मिश्र

संवत् १९९५

७३—श्री रामकिशोर

७४—श्री सुरेन्द्र नाथ

७५—श्री चंचलकुमार जाना

७६—श्री जयराम गो० परमार

७७—श्री शिवली

७८—श्री विमल सेन

संवत् १९९६

७९—श्री भोला पासवान

८०—श्री शिवपूजन सिह

८१—श्री अक्षयवर लाल

८२—श्री बद्रीप्रसाद गुप्त

८३—श्री गणेश प्र० वर्मा

८४—श्री बृजकिशोर प्रसाद

८५—श्री सखाराम सूर्याजी खानी लकर

८६—श्री कृष्णतात्याजी क्षीरसागर

संवत् १९९७

८७—श्री लक्ष्मण

८८—श्री कमलेश्वर प्रसाद

८९—श्री महेन्द्र प्रसाद सिन्हा

९०—श्री परमेश्वर शर्मा

९१—श्री बच्चे लाल

९२—श्री धनुषधारी मिश्र

९३—श्री मथुरभाई पटेल

९४—श्री भोलानाथ राय

९५—श्री रामायण प्रसाद राय

९६—श्री शीतल सिंह

९७—श्री वीरेन्द्र कुमार

९८—श्री चन्द्रकान्त शाह

९९—श्री मेवालाल चौधरी

१००—श्री ओंकार लाल

१०१—श्री रामराव एम० एस०

१०२—श्री कृष्णस्वामी एस०

१०३—श्री उमाशंकर
१०४—श्री करुणाकान्त राय
१०५—श्री दत्तात्रय खपली
१०६—श्री परमेश्वरन्

संवत् १९९८

१०७—श्री वागीश्वर प्रसाद द्विवेदी
१०८—श्री महेन्द्र
१०९—श्री सच्चिदानन्द
११०—श्री विद्याविलास
१११—श्री रामानन्द सिंह

संवत् १९९९

११२—श्री युगल किशोर
११३—श्री रामेश्वर सिंह
११४—श्री बल्लभ कुमार
११५—श्री कृष्णचन्द्र
११६—श्री चन्द्रपाल बाजपेयी
११७—श्री दुलीचन्द
११८—श्री आद्याप्रसाद पाठक
११९—श्री महेन्द्र कुमार
१२०—श्री सकलदीप प्रसाद चौधरी
१२१—श्री जनक देव
१२२—श्री नारायण राम
१२३—श्री गंगा सिंह
१२४—श्री आनन्द प्रकाश रस्तोगी

संवत् २००२

१२५—श्री निरंजन सिंह
१२६—श्री रामसुभग सिंह
१२७—श्री अमृत सिंह
१२८—श्री हर्षदराय पारिख
१२९—श्री विद्याभूषण चौधरी
१३०—श्री कमला प्रसाद पाण्डेय
१३१—श्री सच्चिदानन्द किशोर
१३२—श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद
१३३—श्री दशरथ राय
१३४—श्री तपस्वी प्रसाद चौधरी
१३५—श्री तेजनारायण लाल
१३६—श्री जगदेव प्रसाद
१३७—श्री शिवपूजन पाण्डेय
१३८—श्री योगेश्वर प्रसाद
१३९—श्री रामचन्द्र तिवारी

संवत् २००३

१४०—श्री रामावतार
१४१—श्री रमाशंकर श्रीवास्तव
१४२—श्री बालबोध पाण्डेय
१४३—श्री विश्वनाथ सिंह
१४४—श्री बोध नारायण सिंह

१—श्री जयनारायण तिवारी
२—श्री जगदीश कुमार सिंह
३—श्री यमुना प्रसाद सिंह
४—श्री टिकैतराय वर्मा
५—श्री अविनाशचन्द्र कंचन
६—श्री मुनेश्वरी नारायण वर्मा
७—श्री गंगाप्रसाद श्रीवास्तव
८—श्री भगवती प्रसाद सहरोत्रिय
९—श्री गोविन्द गिरि स्वामी
१०—श्री रामबिहारी सिंह

परिशिष्ट

प्रथम निरीक्षक सभा के सदस्य

१–श्री महात्मा मोहनदास करमचन्द गांधी
२–श्री पण्डित मोतीलाल नेहरू
३–श्री मुहम्मद अली (मौलाना)
४––श्री जमनालाल बजाज (सेठ)
५–श्री जवाहरलाल नेहरू
६–श्री राधाचरण साह
७–श्री मुहम्मद हुसेन खाँ (हकीम)
८–श्री श्रीप्रकाश
९–श्री जीवतराम भगवानदास कृपलानी
१०–श्री कृष्णकान्त मालवीय
११–श्री नरेन्द्रदेव
१२–श्री कृष्णचन्द शर्मा
१३–श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन
१४–श्री डाक्टर मुरारी लाल
१५–श्री शिवप्रसाद गुप्त (मन्त्री)
१६–श्री दामोदरजी जोशी (कोषाध्यक्ष)
१७–श्री भगवानदास (सभापति)

वर्त्तमान निरीक्षक सभा के सदस्य

१–श्री कमलापति त्रिपाठी, कुलाधिपति
२–श्री रघुकुल तिलक, कुलपति
३–श्री मोरारजी देसाई
४–श्री मगतू राम जैपुरिया
५–श्री तारकेश्वर पाण्डेय
६–श्री विभूति मिश्र
७–श्री राम प्रवेश शास्त्री
८–श्री लाल बहादुर पाण्डेय
९–श्री बालकृष्ण विश्वनाथ केसकर
१०–श्री डा० गौड़हरि सिंहानिया
११–श्री रामरतन गुप्त
१२–श्री रामशरण जी
१३–श्री रामकृष्ण हेगडे
१४–श्री त्रिभुवन नारायण सिंह
१५–श्री कमलापति त्रिपाठी
१६–श्री घनश्यामदास बिड़ला
१७–श्री वाचस्पति पाण्डेय
१८–श्री चन्द्रभानु गुप्त
१९–श्री परिपूर्णानन्द वर्मा
२०–कु० सुभदा तैलंग
२१–श्री कैलाशपति सिंह
२२–डा० रामसुभग सिंह
२३–श्री राज बिहारी सिंह
२४–प्रो० भगवती प्रसाद पांथरी
२५–प्रो० दूधनाथ चतुर्वेदी
२६–प्रो० एम० वी० मूर्ति
२७–आचार्य बीरबल सिंह
२८–श्री खुशालचन्द्र गोरावाला
२९–डा० चन्द्रप्रकाश गोयल
३०–डा० शरत कुमार सिंह
३१–डा० शंकर सहाय श्रीवास्तव
३२–श्री उमाशंकर शर्मा

३३–श्री बालेश्वरनाथ श्रीवास्तव
३४–श्री विश्वनाथ शर्मा
३५–श्री भूपेन्द्र कुमार गुप्त, कोषाध्यक्ष
३६–श्री सत्येन्द्र कुमार गुप्त
३७–श्री राजबिहारी सिंह
३८–श्री लालजी मिश्र
३९–श्री दुर्गा प्रसाद खत्री
४०–श्री कुंज बिहारी गुप्त
४१–पीठस्थविर, काशी विद्यापीठ

प्रबन्ध समिति के सदस्य

१–श्री कमलापति त्रिपाठी
२–श्री रघुकुल तिलक
३–प्रो० भगवती प्रसाद पांथरी
४–प्रो० एम० वी० मूर्ति
५–प्रो० दूधनाथ चतुर्वेदी
६–डा० शरतकुमार सिंह
७–श्री उमाशंकर शर्मा
८–श्री त्रिलोक सिंह धपोला
९–श्री भूपेन्द्रकुमार गुप्त, कोषाध्यक्ष
१०–श्री कुंज बिहारी गुप्त
११–सहायक पीठस्थविर, लेखा
१२–श्री त्रिभुवन नारायण सिंह,
१३–डा० रामसुभग सिंह
१४–प्रो० परमानन्द जी
१५–डा० रामधर मिश्र
१६–पीठस्थविर
१७–सहायक पीठस्थविर, परीक्षा
१८–श्री तारकेश्वर पाण्डेय
१९–श्री सुधाकर पाण्डेय
२०–श्री सत्येन्द्रकुमार गुप्त
२१–डा० केशव प्रसाद सिंह

वित्त समिति के सदस्य

१–श्री कमलापति त्रिपाठी
२–श्री रघुकुल तिलक
३–श्री भूपेन्द्र कुमार गुप्त
४–श्री कुंज बिहारी गुप्त
५–श्री त्रिभुवन नारायण सिंह
६–प्रो० परमानन्द
७–श्री आर० एस० चितकारा
८–श्री ओ० पी० मोहला
९–पीठस्थविर
१०–सहायक पीठस्थविर (लेखा)

शिक्षा परिषद के वर्तमान सदस्यों की सूची

१–पं० कमलापति त्रिपाठी, कुलाधिपति
२–श्री रघुकुल तिलक, कुलपति
३–प्रो० भगवती प्रसाद पांथरी
४–प्रो० एम० वी० मूर्ति
५–प्रो० दूधनाथ चतुर्वेदी
६–श्री खुशालचन्द्र गोरावाला
७–डा० मुरलीधर भगत
८–डा० केशव प्रसाद सिंह
९–श्री रामजी नागर
१०–श्री त्रिलोक सिंह धपोला

११–डा० शरत कुमार सिंह
१२–डा० अमरनाथ पाण्डेय
१३–डा० रघुनाथ गिरि
१४–डा० शम्भुनाथ सिंह
१५–डा० युगेश्वर पाण्डेय
१६–श्री गिरीशचन्द्र द्विवेदी
१७–श्री व्रजेन्द्र किशोर अग्रवाल
१८–डा० ईश्वर दत्त सिह
१९–श्री जुगेन्द्र सहाय
२०–श्री वीरेन्द्र प्रताप सिह
२१–श्री बालेश्वर नाथ श्रीवास्तव
२२–श्री चन्द्र बिहारी कपूर
२३–श्री रामेश्वर प्रसाद सिंह
२४–श्री सुन्दर लाल गुप्त
२५–डा० प्रमोद मोहन पाण्डेय
२६–श्री सत्येन्द्र नाथ श्रीवास्तव
२७–श्री सुभाष चन्द्र
२८–पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
२९–डा० मंगलदेव शास्त्री
३०–प्रो० सुगत दास गुप्ता
३१–प्रो० परमानन्द
३२–प्रो० जगन्नाथ उपाध्याय

वर्तमान सत्र (१९७१–७२) में छात्रों की संख्या निम्नलिखित है :—

शास्त्री प्रथम खण्ड	–	४६८
शास्त्री द्वितीय खण्ड	–	२६५
एम० ए० प्रथम खण्ड	–	७६१
एम० ए० द्वितीय खण्ड	–	५५२
शोध छात्र	–	१४९
योग	–	२,०९५

सन् १९७१ की वार्षिक परीक्षा में सम्मिलित एवं उत्तीर्ण छात्रों का विवरण

क्र०सं०	कक्षा का नाम	सम्मिलित संख्या			उत्तीर्ण संख्या			प्रति	विवरण
		व्यक्ति	नियमित	योग	व्यक्ति	नियमित	योग		
१–	शास्त्री प्रथम खण्ड	१०३	२६५	३६८	८१	२४९	३३०	८९.७	प्र०
२–	शास्त्री द्वितीय खण्ड	१००	३११	४११	९६	३०५	४०१	९२.३	,,
३–	एम० ए० हिन्दी प्रथम	४२	८४	१२६	३९	७६	११५	९०.५	,,
४–	एम० ए० हिन्दी द्वितीय	७५	७९	१५४	५५	७७	१३२	९५.५	,,
५–	एम० ए० इतिहास प्रथम	२५	७०	९५	२४	७०	९४	९८.९	,,
६–	एम० ए० इतिहास द्वितीय	३५	४०	७५	३५	३९	७४	९२.६	,,
७–	एम० ए० अंग्रेजी प्रथम	९	२२	३१	५	१६	२१	६९.३	,,
८–	एम० ए० अंग्रेजी द्वितीय	५	२२	२७	५	२१	२६	९६.३	,,
९–	एम० ए० दर्शन प्रथम	२	२८	३०	२	२७	२९	९०.०	,,
१०–	एम० ए० संस्कृत प्रथम	२२	२९	५१	८	२९	३७	९४.८	,,
११–	एम० ए० अर्थशास्त्र प्रथम	२०	९४	११४	१८	८७	१०५	८७.७	,,
१२–	एम.ए.अर्थशास्त्र द्वितीय	२८	१११	१३९	२७	११०	१३७	९८.५	,,
१३–	एम० ए० समाजशास्त्र प्रथम	१०२	१०१	२०३	९९	१०१	२००	९५.७	,,
१४–	एम०ए०समाजशास्त्र द्वितीय	६४	१०९	१७३	६२	१०९	१७१	९८.८	,,
१५–	एम० ए० राजशास्त्र प्रथम	३९	६८	१०७	३०	६४	९४	८५.९	,,
१६–	एम०ए०राजशास्त्र द्वितीय	२१	३७	५८	२१	३७	५८	१००	,,
१६–	एम० ए० राजशास्त्र द्वितीय	२१	३७	५८	२१	३७	५८	१००	,,
१७–	एम० ए० समाजसेवा प्रथम	–	४२	४२	–	४१	४१	९७.६	,,
१८–	एम० ए० समाजसेवा द्वितीय	–	४७	४७	–	४४	४४	९७.८	,,
						२ का प० फ० अपूर्ण			
	योग–	६९२	१५७९	२२७१	६५७	१५२२	२१७९	२ अपू०	

कुल सम्मिलित संख्या – २२७१

कुल उत्तीर्ण संख्या – २१७९

डाक्टर आफ फिलासफी शोध उपाधियों का विवरण

क्र. सं.	वर्ष	विषय	नाम शोधकर्त्ता	शीर्षक
१	२	३	४	५
१	१९६९	मनोविज्ञान	श्री प्रभाकर सिंह	ए स्टडी आफ डिफरन्सियल जाब एक्सपैक्टेशन्स सैटिस-फैक्शन बिहेवियर आफ द इन्डस्ट्रियल ग्रुप।
२	१९६९	समाजशास्त्र	,, रामबचन सिंह	वाराणसी नगर का सामाजिक परिस्थितिकीय अध्ययन।
३	१९७०	अर्थशास्त्र	,, अवध प्रसाद	ग्रामदान का आर्थिक अध्ययन।
४	१९७०	अर्थशास्त्र	,, सिद्धनाथ पाण्डेय	पूर्वी उत्तर प्रदेश में चीनी उद्योग।
५	१९७०	अर्थशास्त्र	,, श्रीराम चौधुरी	पूर्वी उत्तर प्रदेश में औद्योगिक सहकारी समितियों का एक तुलनात्मक अध्ययन।
६	१९७०	अर्थशास्त्र	,, सरस्वतीप्रसादउपाध्याय	पूर्वी उत्तर प्रदेश में कृषि के प्राविधिक परिवर्तनों को प्रभा-वित करने वाले कारको का अध्ययन।
७	१९७०	हिन्दी	,, मुक्तेश्वर तिवारी	सूफी अध्यात्म दर्शन का मध्य-कालीन हिन्दी संत कवियों पर प्रभाव।
८	१९७०	समाजशास्त्र	,, नर्वदेश्वर राय	ग्रामीण शक्ति संरचना का समाजशास्त्रीय अध्ययन।
९	१९७०	समाजशास्त्र	,, पारसनाथ तिवारी	बदलती हुई सामाजिक संरचना।
१०	१९७०	अर्थशास्त्र	,, परमात्मानन्द सिंह	लघु उद्योगों के अर्थ प्रबन्धन में व्यावसायिक बैंकों का योगदान (विशेषतःवाराणसी के संबंधमें)
११	१९७०	मनोविज्ञान	,, प्रभुनारायण सिंह	ए स्टडी इन मल्टीवैरियेट मेथड फार सेलेक्शन आफ एफैक्टिव विलेज लेवेल वर्कर्स

१	२	३	४	५
१२	१९७०	हिन्दी	श्री विवेकी राय	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में ग्राम जीवन की अभिव्यक्ति।
१३	१९७०	समाज सेवा	,,जगदम्बाप्रसादबरनवाल	आर्गनाइजेशन एण्ड सोशल चेंज एमंग्स्ट इन्डस्ट्रियल वर्कर्स
१४	१९७१	इतिहास	,, शिवस्वरूप सहाय	बाल्मीकि रामायण में भारतीय समाज
१५	१९७१	अंग्रेजी	,, प्रेम प्रकाश	त्रिस्त्रम शैन्डी एण्ड यूलीसीज : ए कम्पेरेटिव स्टडी इन टेकनीक
१६	१९७१	अर्थशास्त्र	,, रामनारायण	आर्थिक विकास के सदर्भ में नियोजन काल में भारतीय भुगतान संतुलन की प्रवृतियाँ।
१७	१९७१	समाजशास्त्र	,,चंद्रिकाप्रसादश्रीवास्तव	पारिवारिक द्वन्द का समाज वैज्ञानिक अध्ययन।

काशी विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ

१–भगवानदास	मानव धर्मसार (संस्कृत)
२–भगवानदास	एसेंशल यूनिटी आफ आल रेलिजन्स (अंग्रेजी)
३–भगवानदास	योगकोष
४–भगवानदास तथा राजाराम शास्त्री }—(सम्पादक)	मनुपादानुक्रमाणी
५–सम्पूर्णानन्द	समाजवाद
६–सम्पूर्णानन्द	गणेश
७–सम्पूर्णानन्द	चिद्विलास (संस्कृत)
८–सम्पूर्णानन्द	कासमागनी इन इंडियन थाट (अंग्रेजी)
९–राहुल सांस्कृत्यायन (सम्पादक)	अभिधर्मकोष (संस्कृत)
१०–इन्दिरा रमण शास्त्री	मानव धर्म शास्त्र (मानवार्षभाष्य)
११–गोपाल दामोदर तामसकर	अफलातून की सामाजिक व्यवस्था
१२–गंगा प्रसाद	अंग्रेज जाति का इतिहास
१३–राजवल्लभ सहाय	पश्चिमी यूरोप

१४—मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव तथा राजवल्लभ सहाय —	ग्रीस और रोम के महापुरुष
१५—मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव तथा राजवल्लभ सहाय —	हिन्दी शब्द संग्रह
१६—मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	साम्राज्यवाद
१७—रामदास गौड़ तथा राजवल्लभ सहाय —अनुवादक	ट्राटस्की की जीवनी
१८—मदन गोपाल	इब्न बतूता की भारत यात्रा
१९—चमन लाल	जापान-रहस्य
२०—मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	भारत का सरकारी ऋण दो भाग
२१—बालकृष्ण विश्वनाथ केसकर	नमक कर
२२—चिन्तामणि विनायक वैद्य	हिन्दू भारत का उत्कर्ष
२३—गजानन श्रीपत् खरे	संसार की समाज क्रान्ति
२४—कन्हैयालाल शास्त्री	राष्ट्रीय शिक्षा का इतिहास
२५—हरिहरनाथ शास्त्री	मीर कासिम
२६—मंगलदेव शास्त्री	वैदिक संस्कृति के तत्व
२७—राजाराम शास्त्री	स्वप्न दर्शन
२८—हरिवंश सिंह शास्त्री	सौन्दर्य विज्ञान
२९—पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल	योग प्रवाह
३०—शिवनाथ	आधुनिक साहित्य की आर्थिक भूमिका
३१—शम्भूनाथ सिंह (सम्पादक)	साहित्य प्रभा
३२—गांधीजी ग्रन्थमाला	श्रद्धांजलियाँ ३ भागों में
३३—गांधीजी ग्रन्थमाला	अहिंसा ४ भागों में
३४—गांधीजी ग्रन्थमाला	साम्प्रदायिक समस्या ३ भागों में
३५—गांधीजी ग्रन्थमाला	अछूतोद्धार ३ भागों में
३६—राजाराम शास्त्री (सम्पादक)	विद्यापीठ रजत जयन्ती अभिनन्दन ग्रन्थ
३७—राजाराम शास्त्री तथा देवराज (सम्पादक)	डा० भगवानदास जन्म शती ग्रन्थ
३८—वासुदेव सिंह	अपभ्रंश और हिन्दी में जैन रहस्यवाद
३९—प्रमोद मोहन पाण्डेय	इमर्जेन्सी प्राविजन इन काँस्टीट्यूटशन (अंग्रेजी)
४०—शैलेन्द्र पांथरी	प्राचीन यूनान का इतिहास
४१—ईश्वरदत्त सिंह	मार्केटिंग आफ मिलमेड काटन फेब्रिक्स (अंग्रेजी)

४२—रमाशंकर श्रीवास्तव — एग्रिकल्चरल लेबर इन ईस्टर्न यू० पी० (अंग्रेजी)

४३—ब्रजमोहनलाल साहनी — सानेट्स ऑफ शेक्सपीयर (अंग्रेज़ी)

४४—केशवप्रसाद सिंह — दादूपंथ और उसका साहित्य

४५—सुदामा मिश्र — प्राचीन भारत में जनपद राज्य

४६—भगवती प्रसाद पांथरी — महान गुप्त राजवंश

४७—भगवती प्रसाद पांथरी — सम्म्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य

४८—भगवती प्रसाद पांथरी — प्राचीन भारत

४९—भगवती प्रसाद पांथरी — मध्यकालीन भारत

५०—भगवती प्रसाद पांथरी — अर्वाचीन भारत

५१—भगवती प्रसाद पांथरी — अशोक

५२—कृष्णनाथ (सम्पादक) — राष्ट्ररत्न शिवप्रसाद गुप्त

पत्रिकाएं

विद्यापीठ (त्रैमासिक)
समाज (त्रैमासिक)
जनवाणी (मासिक)
आर्थिकी
उपलब्धि
सामाजिकी
समाज सेवा
छात्र-संघ पत्रिका

संशोधितआय-व्ययक १६७१-७२ एवम् अनुमानित आय-व्ययक १९७२-७३ का संक्षिप्त विवरण

बर्ष १९७१-७२

	संशोधित अनुमान	स्वीकृत धन	अन्तर (कमी)
वेतन एवम् संचित कोष			
स्वीकृत पद	९,३४,५२९–००	९,३९,०७०–००	
३ प्रतिशत सामान्य वृद्धि हेतु	––	२०,८८०–००	
अन्य स्वीकृत मदें––	४,८४,५००–००	२,५०,०००–००	
	१४,१९,०२९–००	१२,०९,९५०–००	२,०९,०७९–००
आय :	४,३०,४५०–००	४,९२,९५०–००	६२,५००–००
			२,७१,५७९–००
अन्य पद जो स्वीकृत नही हैं	२४,४७०–००	––	२४,४७०–००
छात्रावास की कमी :			
३८,५१० (–)१८,९००)	१९,६१०–००	––	१९,६१०–००
			३,१५,६५९–००

वर्ष १६७२–७३ का अनुमान

वेतन एवम् संचित कोष			
३ प्रतिशत सामान्य वृद्धि हेतु	१०,६४,८७२–००	९,८४,९५०–००	
अन्य स्वीकृत मदें	४,९४,५००–००	२,५०,०००–००	
	१५,५९,३७२–००	१२,३४,९५०–००	३,२४,४२२–००
आय :	४,५०,४५०–००	४,९२,९५०–००	४२,५००–००
			३,६६,९२२–००
अन्य पद जो स्वीकृत नहीं हैं :	२४,६०२–००	—	२४,६०२–००
छात्रावास की कमी :			
५०,३६७) (–)२९,८००)	३०,५६७–००	—	३०,५६७–००
			४,२२,०९१–००

(अ) चतुर्थ योजना में स्वीकृत

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने चतुर्थ योजनान्तर्गत विकास के लिए २८ लाख ७२ हजार रुपया स्वीकार किया है जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित मदों में उनके सम्मुख उल्लिखित धन स्वीकार किया है :——

१—केन्द्रीय पुस्तकालय के लिए—— १,५०,०००)

२—विभागीय पुस्तकालय के लिए :——

(अ)	समाजसेवा, समाज शास्त्र, अर्थशास्त्र, अंग्रेजी, हिन्दी, इतिहास (प्रत्येक के लिए १०,०००) रु०	६०,०००)	
(ब)	राजशास्त्र विभाग	२०,०००)	
(स)	दर्शनशास्त्र	१५,०००)	
(द)	मनोविज्ञान	३०,०००)	
(य)	संस्कृत	५,०००)	
		———	१,३०,०००)

३—विभागीम उपकरण क्रय हेतु—

(अ)	हिन्दी विभाग	१०,०००)	
(ब)	समाजसेवा	१०,०००)	
(स)	मनोविज्ञान	५०,०००)	७०,०००)

४—विभागों के लिए निम्नलिखित पद स्वीकार किये हैं :——

विभाग	प्रोफेसर	रीडर	लेक्चरर	अन्य	विशेष
१—समाजसेवा	——	२	——	१*	शोध सहायक
२—समाजशास्त्र	१	——	——	——	
३—अर्थशास्त्र	१	१	——	——	
४—अंग्रेजी	१	१	——	——	
५—हिन्दी	—	२	—	—	
६—इतिहास	—	१	१	—	
७—राजशास्त्र	—	१	—	—	
८—दर्शन	१	१	१	—	
९—संस्कृत	१	१	२	—	
१०—मनोविज्ञान	१	१	२	—	
११—भाषा अध्यापक	—	—	१*	३*	लेक्चरर (रशियन) *अंशकालिक लेक्चरर (उर्दू, पाली तथा तमिल)
१२—शारीरिक शिक्षा	—	—	——	२*	*प्रशिक्षक
१३—केन्द्रीय पुस्तकालय	—	—	—	४*	*प्रोफेशनल असिस्टेन्ट-१ कैटलागर -१ काउन्टर असिस्टेन्ट -२
१४—फील्ड वर्क प्रोग्राम	—	—	—	१७पद	
	६	११	७	२७	

इसके अतिरिक्त हिन्दी विभाग में "तुलसी चेयर" के लिए १ प्रोफेसर, १ रीडर तथा २ लेक्चरर माँगा गया है। योजना भेज दी गयी है, सम्भवत: स्वीकार हो जायगी।

५—भवन निर्माण

(१)	कालेज भवन के लिए	५००,०००)
(२)	साइकिल शेड	२५,०००)
(३)	चतुर्थ श्रेणी क्वार्टर	१,५०,०००)

६—अन्य योजनाएँ :—

(१)	पब्लिकेशन ऑफ रिसर्च मेटिरियल	२५,०००)
(२)	पुरुष छात्रावास के फर्नीचर हेतु	११,५००)
(३)	प्रिन्टिग प्रेस के विकास हेतु	३०,०००)
(४)	समाजसेवा के कालेज बस हेतु	७१,६११)

ब—छात्र सुविधा

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की एक कमेटी ने काशी विद्यापीठ के छात्रों की सुविधा के लिए ५ लाख रुपया निम्नलिखित मदों में उनके सम्मुख उल्लिखित धन स्वीकार किया है—

(१)	ट्यूबवेल के लिए	१,५८,५००)
(२)	सड़क, पटरी तथा रोशनी	१,९९,०००)
(३)	छात्रावास के मरम्मत तथा अन्य	९१,०००)
(४)	कक्षाओं के फर्नीचर	२५,०००)
(५)	मुख्य भवन में सेनीटरी व्यवस्था	७,०००)
(६)	बुक लोन योजना	१४,०००)
(७)	स्वास्थ्य केन्द्र उपकरण	६,०००)
		५,००,५००)

इन योजनाओं के कार्यान्वियन हेतु आवश्यक कार्यवाही चल रही है।

स—स्वर्ण जयन्ती

काशी-विद्यापीठ की स्वर्ण जयन्ती पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने ७,५०,०००) अनावर्तक अनुदान स्वीकार किया है जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित योजनायें हैं :

(१) एन० सी० सी० भवन
(२) छात्र संघ भवन
(३) मनोविज्ञान प्रयोगशाला
(४) मुख्य भवन की ऊपरी मंजिल

इसके लिए आवश्यक कार्यवाही चल रही है।

050436
Accession No.
Shantarakshita Library
Tibetan Institute-Sarnath
INPUTED

कुल गीत

विद्या के सिद्धि-पीठ जय महान हे !
जय-जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे !
भारत की भव्य भारती के स्वर तुम !
राष्ट्रभावना के सन्देश मुखर तुम !

बलिदानों के गुरूकुल महा प्राण हे !
जय-जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे !
हे अभिनव भारत के भाग्य-विधाता !
कोटि-कोटि जनता के मुक्ति-प्रदाता !

जन-गण को करते नेतृत्व-दान हे !
जय-जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे !
ऋषियों की वाणी के तुम व्याख्याता !
नूतन विद्याओं के अनुसन्धाता !

आत्मा के शिल्पी संकल्पवान हे !
जय-जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे !
गान्धी की गरिमा से ओत-प्रोत तुम !
शिवप्रसाद की विभूति, शक्ति स्रोत तुम !

तुम में भगवानदास मूर्तिमान हे !
जय-जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे !
कल्पना नरेन्द्रदेव की विराट तुम !
पुण्य भूमि भारत माँ के ललाट तुम !

दे रहे समन्वय का दिव्य ज्ञान हे !
जय-जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे !
इस विद्या-मन्दिर की अमर भारती !
राष्ट्रदेवता की कर रही आरती !

ज्योतित हम दीपवर्त्तिका-समान हे !
जय-जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे !
सत्य-अहिंसा के हे दृढ़ व्रतधारी !
युग-युग तक अटल रहे मूर्ति तुम्हारी !

युग-युग तक विश्व करे कीर्तिगान हे !
जय-जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे !
नभ में लहराये यह पुण्य-पताका !
जिस पर है चित्र टँका भारत माँ का !

शम्भु के त्रिशूल-शलाका-प्रमाण हे !
जय-जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे !

———